CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वे 630

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

ublic Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वे. 630

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीपुष्करतीर्थनिवासी स्वामीब्रह्मानंदजी.

National Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ॐ

श्रीरमापतये नमः ।

श्रीब्रह्मानंदभजनमाला.

इयं

श्रीपरमहंसस्वामिब्रह्मानंद-

विरचिता.

सेयं

बम्बईनगरे निर्णयसागराभिधाने मुद्रणयंत्रालये

पं. पुष्करदासेन मुद्रापयित्वा प्रसिद्धिं नीता.

विक्रमसंवत् २००१, शकाब्दाः १८६७, ईस्वीसन १९४५.

भजनसंख्या [illegible], षट्चत्वारिंश्यावृत्तिः

कीमत [illegible] रुप्यया. १॥)

प-१
१३१२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

इस पुस्तकको सन १८६७ अॅक्ट २५ के अनुसार गवर्नमेंटसे रजिष्टर करायके फिर छपाने वगेराका सर्व हॅक पं. पुष्करदास मेनेजर श्रीब्रह्मानंद आश्रमने अपने अधिकारमें रखा है सो इनकी इजाजतके बिना कोई पुरुष इन भजनोंको छाप नहि सकेगा।

रजिष्टर नंबर २८ सन १९१२.

कमीशनके नियम.

१० पुस्तक मंगानेवालेको डाक खर्चा माफ है.

५०० तक पुस्तक मंगानेवालेको २५ रुपय्या सेंकडा कमीशन दिया जाता है. डाक तथा रेलका खर्चा मंगानेवालेको लगेगा.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना:—

श्रीब्रह्मानंद आश्रम,
मु० पुष्कर, जिला अजमेर.

All rights reserved.

Published by Pandit Pushkardas of Brahmanand Ashram Pushkar, Ajmer, and Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the 'Nirnaya Sagar' Press, 26-28, Kolbhat Street, Bombay 2.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भजनोंकी अनुक्रमणिका.

भजन	पृष्ठ.
अगर है ज्ञानकी पाना	६४
अगर है प्रेम दर्शन...	५८
अगर है प्रेम मिलने	५८
अगर है मोक्षकी ...	५७
अचरज देखा भारी...	२९९
अनहदकी धुन ...	२९७
अनहदधुनी ...	१६८
अपनेको आप ...	५६
अब जाग मुसा ...	३३४
अब तुम दया करो...	१५३
अब तुम दया करो...	१५४
अब तुम दया करो...	१५५
अब तुम दया करो...	१५६
अब तो छोड ...	१६१
अब तो तजो नर ...	१९६
अब तो नाम ...	१२७
अब तो सुनो प्रभु ...	१९५
अब तो सुमर नर ...	१९६
अब पाया है ...	३१३
अब जाना है ...	३१२
अये ईश मेरी बेनती	२१९
अये ईश दासपे दया	२१८
अये दीनबंधु ...	४९
अये राम तेरे नामका	२१५
अये विश्वपति ...	२२०
अये ईश तेरा नाम	२२०
अये ईश मेरी बेनती	२२१
अये ईश तुझे ...	२२२
अये ईश तुझे नित्य...	२२२
अये कृष्ण तेरे ...	२२४
अये राम तेरा नाम	२२५
अये राम तेरी ...	२२६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

भजन	पृष्ठ.	भजन	पृष्ठ.
अर्जुनको रण ...	७	आशक मस्त फकीर	११६
अहो प्रभु अचरज ...	१४२	आशक हूया जो मन	२२८
अहो प्रभु काल ...	१४६	आशक हूया जो दिल	२२९
आज सखी सतगुरु ...	१२	आशक हूया जो दिल	२२९
आज सखी स्वपनेमें	१८	ईश्वर मैं दास तेरो ...	८७
आज मेरी सुनिये	२०	ईश्वर तेरी बडाई ...	९०
आज सखी सत ...	१०८	ईश्वर तुं है दयालु ...	९१
आज सखी शाम ...	१२०	ईश्वर तुं दीनबंधु ...	९२
आज मेरी लाज हरि	१२३	ईश्वरको जान बंदे ...	९२
आज मेरी बेनती ...	१२४	ईश्वर तुं है दयाल ...	१७६
आज मेरी बेनती ...	१२४	ईश तेरा रूप ...	२१४
आजमुझे आयके ...	१२५	ईश्वर तेरे दरबारकी	२१६
आज सखी कुंजमें ...	१२६	ईश्वर दयानिधान ...	२१७
आदि देव विश्व ...	१७७	ईश्वर तेरा स्वरूप ...	२१८
आना आना रे ...	२६९	ऊधो तुझे ज्ञान सार	२५
आयो वसंत सखीरी	३३०	ऊधो मुझे संत सदा	२५
आली नंदको लाल	१७९	ऊधोवोसांवरी सूरत हमें	६८
आवो आवो सखी ...	१९१	ऊधोवोसांवरी सूरत हमें	६८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भजन	पृष्ठ.
ऊधोवोसांवरी सूरत	६९
ऊधोवोसांवरी सूरत लगे	६९
ऊधो वोसांवरी सूरत	७०
ऊधो वो सांवरी सूरत	७१
ऊधो वो सांवरी सूरत	७१
उजियाला है	...३१७
ऐसी करी गुरुदेव	...१०९
ऐसा ज्ञान हमारा	...३०९
क्या पानीमें मल	... १४
क्या भूलिया दिवाने	८६
क्या सोरहा मुसाफिर	९६
कर्म कर्म क्या	... १६
करो हरिका भजन ...	७३
करो सतसंग पियारा	२५६
कहे कृष्ण मोरधुज	३७
कहे पांडव ...	... ३७
कहे नाथ जलंधर ...	४०
कहे भक्त प्रह्लाद	३४०
कहे मारकंड मुनिराया	४४
कहे लछमन	... ४४
कामिल काम कमाल	११७
कालगती बलवान	...३०६
काहे शोच करे	... १६
काहे शोच करे नर	...१४९
काहे दूर जावे	...२८७
काहे गर्व करे	...३४८
कित जावे गे	...३१०
कित जावुं मैं	...३३१
किधरको ...	...१३७
किसदेवताने आज	...२३०
कृष्ण घर नंदके आये	५९
कृष्णने कैसी होरी	...३२७
कैसी मधुर शाम	...२११
कैसे करूं मैं तो	...२१३
कैसे सखीरी	...२२३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

भजन	पृष्ठ.
कैसे करूं गुरु	...२३३
गाफिल तुं जाग	... ५५
गाफिल तुं सोच	... ८७
गायरे नर गाय	...१५०
गुरुचरणकमल	...२६०
गुरुबिन कौन मिटावे	३०२
गुरुबिन कौन सहाई	३०२
गोपीचंद बाल	... ३९
घटहीमें उजियारा	...२९४
घटहीमें अविनाशी	२९५
घटका करो विचार	३०४
घर जाना है	...३१५
चरखा कात	...३३५
चल चल चल सखी	१४१
चलो चलो सखी अब	४७
चलो चलो सखियां	१९०
चेतरे नर चेत	...१५२
चेतन चमक	...३०८
चेतन देवकी	... १३
चंचल मन निश	...१६६
चालो सखीरी	...३२३
जगदीश जगतपति	४१
जगदीश मैं शरण	... ४१
जगदीश ईश प्यारे	८८
जगदीश ईश	... ८९
जगदीश मैं ...	... ८९
जगदीश सकल जग	१३१
जगतमें एक...	...२३२
जगदीश्वर जगतबीच	२४०
जग स्वप्नेकी माया	...१७२
जगतपति ईश्वर	...२७४
जगतपति ...	...२७५
जगतपति ...	...२७६
जगतपति ...	...२७६
जगतमें स्वारथ	...२७८
जगतमें रामनाम	...२७८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भजन	पृष्ठ.	भजन	पृष्ठ.
जगतमें जीवन	...२७९	जाग मुसाफिर क्या	१४९
जगदीश्व दयानिधि	३३५	जागरे नर जाग	...१५१
जतन कर आपना ...	७४	जागरे मुसा	...२८७
जन्म जन्मको मैं ...	५	जाती जिधरको	...१३८
जपो हरिनाम	...२८०	जिंदगी सुधार	...२८६
जय गणेश गण ...	१	जिधरको देखुं	...२०६
जय शंकर कैलास ...	७	जिसको नही है बोध	२३१
जय दुर्गे दुर्गति ...	९	जीवनको मत ...	१४
जय जगदीश्वरि ...	१०	जीवनकी प्रतिपाल	१५
जय कमले	१०	जो ईशका उपकार	...२०८
जय जय जगदीश	११८	जो गर्भका इकरार	...२०७
जय जयजय जगदीश्वर	१३९	जो जन हरिका	...१४७
जय महेश जटा	...१७६	जो जन घ्यान धरे	...१४८
जय गुरुदेव...	...३५६	जोगजुगत हम पाई	२९५
जय शिव शिव	...३५७	जोगजुगत हम जानी	२९६
जय जगदीश्वर	...३५९	जो नामका परताप	२०९
जाग जाग जाग मोद	५२	जो भजे हरिको सदा	१९८
जाग मुसाफिर देख	११०	जो मौतका दिन	...२१०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

भजन	पृष्ठ.	भजन	पृष्ठ.
झूठ सब जगतपसारा	२५२	दर्शनविन तरसे	...१८३
तजो अब नींद	...२८२	दिखा दे रूप ईश्वर...,	८०
तब पावोगे	...३१३	दिखा दे यार अब ...	८१
तुमे है हरिशरण	...२६४	दिखा दे नजर	...१३३
तुम जाय बसे मोहन	१८७	दिलले लिया है ...	९८
तुम पढोरे तोता	...२४४	दिलादे नाथ अब ...	७५
तुम पढोरी मैना	...२४५	दिलादे भीख दर्शनकी	७६
तुं तो उडता	...१६२	दीनदयाल दया करके	१०२
तुं मेरि गली	...२९३	दीनबंधु दया	...१२७
तेरी शरणमें आयगे	१९७	दीनके दयाल	...२९०
तेरी शरणपडा मैं	...१८५	दीनानाथ दयाल	...१८३
तेरी उमर बीती	...२३९	दीनानाथ रमापतिभव	३३३
तेरे बीती उमर	...२४९	दीनानाथ रमापति	३३४
तेरे दिदारकेलिये	२२७	देख सखी कृष्ण	...१२२
तेरो जन्म मरण	१८६	देख सखी वन	...१३१
तेरो प्रभुजी	...३२१	देखले नजरोंसे	...२००
दयाकी नजरोंसे	...२०५		
दर्शनबिन जियरा	१६२		

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भजन	पृष्ठ.
देख नजरोंसे	...२५३
देखले चतुरनर	...२९०
देख सखी जगदीश	३३१
देखा अजव	...३०५
देखो सखी विंदरा	...११२
देखोरी आज	...१२९
देखो नजरसें	...१३५
देखो बृन्दावन	...१५८
देखो देखोरी लं	...१८०
दे दे पिया दर्शन	...१०७
दे दर्शन मोहे आज	१९३
दे पिया दर्शन मु	...१९८
द्रोदिनका जगमें	... ४८
ध्यानका बैदा	...१०३
नजरभर देखले	... ६६
नजरभर देखले	... ६६
नजरोंसे देख प्यारे ईश्वर	९३
नजरोंसे देख	... ९३
नजरोंसे देख प्यारे	... ९४
न वजियां ...	... ८४
न करले रे सतसंग	२४०
नरसिंघ तेरा	...२२७
नर क्या सुख	...३२७
नहि आते हो	...३०९
नाथ दियो अब	... ६
नाथ तेरी माया जाल	१९
नाथ कैसे नरसिंघ	... २२
नाथ कैसे द्रुपदीके	... ३३
नाथ मैं शरण तुमारी	२५४
नाम नाम नाम जपो	५१
नाम हरीका लीना	...१००
नाम लिया हरिका	...१०१
नाम निरंजन	...३०६
नाम निरंजन गावोरे	३३४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

भजन	पृष्ठ.	भजन	पृष्ठ.
नारायण मैं शरण ...	२	प्रभु आज चरणों	...१३३
नारायण जिनकेपरि...	३	प्रभु मेरे दिल	...१३४
नारायणको नाम ...	३	प्रभु प्रभु प्रभु मैं दास	१४०
नारायण जिनके हिरदे	४	प्रभु इक नाम तेरा...	१४३
नारायणको भजन ...	५	प्रभु तेरी महिमा	...१४३
नारायणका नाम सदा	३४२	प्रभु तेरी महिमा	...१४४
निर्गुणपंथ ...	...३०४	प्रभु तेरी महिमा	...१४५
निरंजन पदको	...२३३	प्रभु कर सब	...१६३
निरंजन घरका	...२३५	प्रभु तुम सकल	...१६४
निरंजन धुनको	...२३४	प्रभु तुम सब जग	...१६५
निरंजन माला	...२३६	प्रभु निर्विकार	...१७७
निरंजन गुरुका	...२३६	प्रभु हमारा ...	...२४२
निरंजन पुरका पंथ	२३७	प्रभु तेरी शरण	...२५१
पछतावें गा	...३१८	प्रभु तेरे चरण	...२६७
प्रथम सुमर श्री	...१७५	प्रभु सुनले विनति	...२६७
प्रभु मेरी नैयाको पार	२६	प्रभु मेरी अरजी	...२७१
प्रभु तैने कैसे	... २७	प्रभु सुन अरज	...२७३
प्रभु सबसें समा	... ६३	प्रभुजी तेरी किस	...२८३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भजन	पृष्ठ.	भजन	पृष्ठ.
प्रभुजी मेरा...	...२८४	बाहिर ढूंडन	... १७
प्रभुजी राखो	...२०३	बिना हरिनामके सुम	७३
पानिया भरन	...२८९	बिना सतसंगके	... ७७
पिया चालो नग	२६९	बिना कृष्णदर्शन	...१३६
पिया मिलनके काज	१८४	ब्रजराज आज	... ९५
पिलादे प्रेमका प्याला	७६	ब्रजराज आज प्यारे	९६
प्रीतकी रीत न जाने	११३	ब्रजराज तेरे काज	...२२५
प्रीतम प्रीत ...	...११५	भजन बिन बिरथा	२६५
पुरुषार्थको करो	...३४६	भजन बिन भवजल	२६५
पूरण ब्रह्म ...	...११४	भजनमें क्यों चित	३३६
पूरण प्रेम लगा	...११७	भजले रामनाम	...१५७
प्रेमनगरमत	...२८८	भजले नर शारंग	...१७१
फकीरीमें मजा	... ८३	भजले शारंगपाणी	...२९०
बता दे मोक्ष...	... ७९	भरोसा है मुझे	... ८२
बरजरही मैं इन	... १२	भाग्य बडे सत	... ११
बलहारी मैं ...	...१३४	मत सोना मुसा	...२६८
बंसीका बजाना	...१५९	मन क्या भुला	... ९९
बंसीका बजाना	...१५९	मनमोहन सुंदर	...२४१
		मनकी बातन	...३०७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

भजन	पृष्ठ.	भजन	पृष्ठ.
मन भाती है	...३१६	मुझे क्या काम दुनियाँ	७८
मन भाया है	...३१८	मुझे है काम ईश्वर...	७८
मनुवा उलटी	...१६०	मुझे लगन लगी	...१६९
मनुवा सोच समझ	१६१	मुझे सतगुरु	...१७०
मनुवा रे हरि	...३२३	मुझे लागी ...	...२४९
मनुवा रे राम	...३२४	मुझे दे दर्शन गिरधारी	२५९
मनुवा रे ...	...३२४	मुझे दीजे दरस गि	२६८
महादेव कहे निर्वानी	३२	मुझे लीजे रे	...२६७
मान मान मान कह्या	५०	मुनि कहत बसिष्ठ ...	२८
मान कही मन	...१११	मुनि कपिल कहे ...	३०
मान मान मेरी	...१२८	मुसाफिर जागते ...	८३
मानरे मन मान	...१५१	मुसाफिर क्या सोवे	२६५
मानले कहना हमारा	१९९	मुसाफिर चल जाना	२७२
मानले बचन मेरो	...२९१	मेरा पिया मुझे	...२६३
मानुष जनम फिर	...१३६	मेरी सुरत गगन	...१६९
मिलजा मुझे पियारे	९७	मेरी बिनती सुनो	...२३८
मिला दो शामसे ऊधो	७२	मेरी सुनले अरज	...२४८
मिला दो सखी शाम...	२६३	मेरी मढ़िया	...२९२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भजन	पृष्ठ.	भजन	पृष्ठ.
मेरी मतिया कर	...२९२	मैं हुं शरण तुमारी	...३००
मेरी सजनी	...२९२	मैं तो गुरु ...	...३३३
मेरी आलीरी	...३२१	मोकुं जाने दे	...१८१
मेरे मना अब तो	...२६६	मोहनी मूरत शामकी	२४७
मेरे मना ...	...२६६	यमराज कहे दंडधारी	३८
मेरो सुनले अरज	...२४८	यह संसार ...	...३३५
मेरो सुनले बचन	...२५०	रसभरीरे मोहन	...१८१
मेरो प्रभुजी ...	...३२०	राजा दशरथके	...२०१
मेरो मनरे ...	...३२०	राम तेरी रचना अच	२०
मेरो मनरे ...	...३२१	राम दशरथके घर ...	६०
मेरो मनरे क्यों	...३२२	राम सुमर राम सुमर	१२०
मैनावती वचन	... ३९	राम नाम सुमरले	...१२५
मैं तो तेरा दास	...२१३	राम तेरा नाम	...२१२
मैं तो तेरे ...	...२८५	राम सुमर राम उमर	२४६
मैं तो प्रभु ...	...२६६	राम सुमर राम तेरे	२४५
मैं तो रमता	...१६२	राम रटलेरे प्राणी	...२५२
मैं हुं दास तुमारा	...३००	री गुजरिया पनिया	२९३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

भजन	पृष्ठ.
रे मनुवा अब ...	२७
रे मनुवा क्यों ...	१४५
लगा ले प्रेम ईश्वर ...	७४
लगा ले प्यारे ...	२३७
वाहवा क्या खे ...	३१९
बिना हरिके भजन ...	४८
विश्वपति जगदीश्वर	१०४
वृंदावन कुंज ...	१२२
शरणमें आ पडा तेरी	६५
शरण पडेकी लाज ...	१८७
शरणपडेकी लाज प्रभु	२१५
शामके संग	३२९
शिव शिव शिव शिव	८
शिव भोला	३०३
शीश मुकुट तिलक...	१७५
शुकदेव कहे तप ...	३२
शुकदेव कहे मुनि ...	३०

भजन	पृष्ठ.
शुकदेव समझ मन	३१
श्रीकृष्ण कहे सुन ...	३५०
श्रीकृष्ण नाम सार ...	१२९
श्रीराम कहे सुन लछम	३५३
श्रीरामचंद्र नंद ...	२३१
श्रीराम नाम सुमर ...	१३०
शंकर तेरी जटामें ...	१००
शंकर तेरी जटामें ...	२२३
सखी सुन हाल हमारा	२५७
सखीरी सुन ...	२७१
सखीरी सुन ...	२९४
सजन तेरी	२७०
सतसंगत जगसार ...	३०१
सदाशिव सर्व वरदाता	६१
सदाशिव शंकर ...	२५८
सब तजकर राज्य ...	४१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भजन	पृष्ठ.	भजन	पृष्ठ.
समझकर देखले	... ७९	सुन सखी अब	...३२६
समझ मन	...२७०	सुन सखी वर्षा	...३२६
सांवरी सूरत तेरी	...२८९	सुमर नर रामनाम	२७७
सांवरो कैसी खेलत	३२८	सुहावे सखी	...२६४
सिरीकृष्ण कहे निरधारा	२९	सुनो सुनो बचन	... ४५
सिरीकृष्ण लाज	... ३६	सुनो सुनो ध्यान	... ४६
सिरीराम कहे समझाई	३३	सुनो सुनो सखी मुझ	४६
सिरीराम कहे सुख	३४	सुनो जगदीश दिस	६४
सिरीराम कहे बिल	३४	सुनो जगदीश	...२५५
सिरीराम कहे हनु	३५	सुनो दिलको लगा	... ६७
सुन नाथ अरज	... ४३	सुनो दिलको लगा	... ८१
सुनरी सखी मोहन	९८	सुनो आज जगदीश	१३२
सुन सुन सुन प्रभु	...१३९	सुनो सुनो सखी ज्ञान	१९२
सुनले प्रभु अरज	...१७३	सुनो खेचरी बात	...२९८
सुन भाई हमारा	...२४३	सुनो सखीरी	...३२४
सुनले अरज ह	...२८३	सुनो सखी अन	...३२५
सुन सखी अब	...३२६	सुनो जगदीश प्रभु	...२८१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

भजन	पृष्ठ.	भजन	पृष्ठ.
सोहंसोहंसोहंसदावोलरे	५३	हरिका भजन करले	१६४
सोहंसोहंसोहंसदावोलरी	५४	हरि तुमारी छवी पिया	२४३
सोहं शब्द विचारो	२९८	हरि नाम सुमरले	...२४७
संदेसा आगया	... ८५	हरि रसभरी वैन	...२५९
हरि तेरे चरणनकी	२२	हरि भजन बिना	...२६१
हरि तुम भक्तनकेहित	२३	हरि दर्शनकी मैं	...२६१
हरि कैसे बलिघर ...	२४	हरि तुम भक्तनके प्रति	२७२
हरिको सुमर पियारे	८५	हरि तुम भक्तनके...	२७३
हरि हरि हरि नित	१४१	हरिजी तुम भक्तनके	२८४
हरि सुमरण विन	...१६७	हरि दर्शनकी प्यासी	२९०
हरि नाम सुमरण सुख	१६७	हरि भजरे उमरा	...३२२
हरि तुम भगतनके	१६५	हरिका नाम	३४४
हरि नाम सुमर तेरी	१७८	हेरी सखी चल	...१०६
हरि नाम सुमर	...१८५	हेरी सखी बतलाय	१०५
हरि भजन करोरे नर	१८८	हेरी सखी आज मुझे	१२१
हरि भजन करे	...१८९	होरी कुंज गलिन	...३३२
हरि चरणकमल	...१८९	ज्ञान देव गुरु देवने	२००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ॐ

श्रीरमापतये नमः ।

अथ

श्रीब्रह्मानंदभजनमालाप्रारंभः

(राग जंगला अथवा पीलु ताल ३)

जय गणेश गणनाथ दयानिधि
सकल विघन कर दूर हमारे ॥ टेक ॥ जय०
प्रथम धरे जो ध्यान तुमारो
तिसके पूरण कारज सारे ॥ १ ॥ जय०
लंबोदर गजवदन मनोहर
कर त्रिशूल परशू वर धारे ॥ २ ॥ जय०

---

१ महादेव कहे सुन पारवती विजया मत देहि गवार-नको, २७ भजन तक.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

ऋद्धिसिद्धि दोऊ चमर ढुलावे
मूषकवाहन परम सुखारे ॥ ३ ॥ जय०
ब्रह्मादिक सुर ध्यावत मनमें
ऋषिमुनिगण सब दास तुमारे ॥ ४ ॥ जय०
ब्रह्मानंद सहाय करो नित
भक्तजनोंके तुम रखवारे ॥ ५ ॥ जय०

(राग जंगला ताल ३)

नारायण मैं शरण तुमारी
दया करो महाराज हमारे ॥ टेक ॥ नाराय०
मात तात सुत दार सहोदर
कोई न आवत काज हमारे ॥ १ ॥ नाराय०
भवसागरजल दुस्तर भारी
तुमरे चरण जहाज हमारे ॥ २ ॥ नाराय०
पाप अनेक किये जगमांही
तुमको है अब लाज हमारे ॥ ३ ॥ नाराय०
ब्रह्मानंद दया तुमरीसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सब दुख जावत आज हमारे ॥ ४ ॥ नाराय०

(जंगला ताल ३)

नारायण जिनके परिपालक
तिनको कौन दुखाय सके रे ॥ टेक ॥ नाराय०
प्रल्हाद भक्तको डारा अगनमें
रोम न एक जलाय सके रे ॥ १ ॥ नाराय०
गजको पकड ग्राहने खेंचा
नहि जल बीच डुबाय सके रे ॥ २ ॥ नाराय०
द्रुपदसुताकी बीच सभाके
रंचन लाज उठाय सके रे ॥ ३ ॥ नाराय०
ब्रह्मानंद जो हरिगुण गावे
सो निर्भय पद पाय सके रे ॥ ४ ॥ नाराय०

(जंगला ताल ३)

नारायणको नाम सुमर नर
जन्ममरणदुख जाय तुमारो ॥ टेक ॥ नाराय०
मानुषजन्म मिला जगमांही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

दाव जीतकर फिर किम हारो ॥ १ ॥ नाराय०
जो परलोक सहायक तेरो
उस मालिकको काहे विसारो ॥ २ ॥ नाराय०
काल खडा सिर ऊपर तेरे
क्या सुख सोवत पांव पसारो ॥ ३ ॥ नाराय०
ब्रह्मानंद बिना हरिसुमरण
नहि भवसागर हो निस्तारो ॥ ४ ॥ नाराय०

(जंगला ताल ३)

नारायण जिनके हिरदेमें
सो कछु कर्म करे न करे रे ॥ टेक ॥ नाराय०
नाव मिली जिसको जलअंदर
वाहुसे नीर तरे न तरे रे ॥ १ ॥ नाराय०
पारसमणि जिनके घरमांही
सो धनसंच धरे न धरे रे ॥ २ ॥ नाराय०
सूरजको परकाश भयो जब
दीपकी जोत जरे न जरे रे ॥ ३ ॥ नाराय०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्रह्मानंद रूप जिन जानो
काशीमें जाय मरे न मरे रे ॥ ४ ॥ नारा०

(राग जंगला ताल ३)

नारायणको भजन करो नर
मनकी छोड भटकना सारी ॥ टेक ॥ नारा०
क्या मथुरा क्या काशी जावे
क्या पर्वत बन फिरत अनारी ॥ १ ॥ नारा०
जप तप योग कठिन कलिमांही
थोडी उमर काम बहु भारी ॥ २ ॥ नाराय०
शास्त्र अनेक पढो दिनराती
मुक्ति न हो बिन भजन तुमारी ॥३॥ नारा०
ब्रह्मानंद कटे भवबंधन
हरिका नाम सुमर सुखकारी ॥ ४ ॥ नाराय०

(जंगला ताल ३)

जन्म जन्मको मैं दास तुमारो
करुणाकर अब तार मुरारे ॥ टेक ॥ जन्म०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

भवसागरजलतरण कठिन है
किसबिध जाऊं पार मुरारे ॥ १ ॥ जन्म०
तुमबिन और न पालक मेरो
वंचक सब परिवार मुरारे ॥ २ ॥ जन्म०
मैं गुणहीन दोष परिपूरण
अपनी ओर निहार मुरारे ॥ ३ ॥ जन्म०
ब्रह्मानंद विलंब न कीजे
सुनिये मेरी पुकार मुरारे ॥ ४ ॥ जन्म०

(जंगला ताल ३)

नाथ दियो अब दरस तुमारे
सफल करो प्रभु नैन हमारे ॥ टेक ॥
तेजपुंजमय अंग मनोहर
रवि शशि कोटि लजावनहारे ॥ १ ॥ नाथ०
शीश मुकुट मणि जडित विराजे
कानन कुंडल मकराकारे ॥ २ ॥ नाथ०
शंख चक्र कर कमल सुहावे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पीत बसन तन ऊपर धारे ॥ ३ ॥ नाथ०
ब्रह्मानंद चतुर्भुज सुन्दर
मंदहसन हरि गरुड सवारे ॥ ४ ॥ नाथ०

(जंगला ताल ३)

अर्जुनको रणभूमिविषे हरि
ब्रह्मज्ञान निर्मल समझावे ॥ टेक ॥ अर्जु०
तूं किसका है कौन तुमारा
एकहि आवत एकहि जावे ॥ १ ॥ अर्जु०
अविनाशी यह जीव सनातन
देहके संग मरण नहिं पावे ॥ २ ॥ अर्जु०
घटघट भीतर व्यापक हूं मैं
भेदभावना क्यों मन लावे ॥ ३ ॥ अर्जु०
ब्रह्मानंद स्वरूप है तेरा
शोककी बात न क्यों बिसरावे ॥ ४ ॥ अर्जु०

(जंगला ताल ३)

जय शंकर कैलासपति शिव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

पूरण ब्रह्म सदा अविनाशी ॥ टेक ॥ जय०
अंग विभूति गले मुंडमाला
शीश जटा जल गंग विलासी ॥ १ ॥ जय०
चंद्रकला मस्तकपर सोहे
तीन नयन त्रैलोक्य विकाशी ॥ २ ॥ जय०
कर त्रिशूल पहरे मृगछाला
संग बसे गिरिजा नित दासी ॥ ३ ॥ जय०
ब्रह्मानंद करो करुणा प्रभु
भवभंजन भक्तन सुखराशी ॥ ४ ॥ जय०

(जंगला ताल ३)

शिव शिव शिव शिव नाम सुमर नर
सकल मनोरथ पूरणकारी ॥ टेक ॥ शिव०
रावण नाम लियो दृढ़ मनसे
सकल देव आज्ञा सिरधारी ॥ १ ॥ शिव०
नंदीगण जब सुमरण कीनो
कालपाश तत्काल निवारी ॥ २ ॥ शिव०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उपमन्यु मुनि करी तपस्या
दूधसमुद्र कियो बडभारी ॥ ३ ॥ शिव०
ब्रह्मानंद येहि वर मांगे
भक्ति दान दीजे त्रिपुरारी ॥ ४ ॥ शिव०

(राग जंगला ताल ३)

जय दुर्गे दुर्गतिपरिहारिणी
शुंभविदारिणी मात भवानी ॥ टेक ॥ जय०
आदिशक्ति परब्रह्मस्वरूपिणी
जगजननी चहुं वेद बखानी ॥ १ ॥ जय०
ब्रह्मा शिव हरि अर्चन कीनो
ध्यान धरत सुर नर मुनि ज्ञानी ॥ २ ॥ जय०
अष्टभुजा कर खड्ग विराजे
सिंह सवार सकल वरदानी ॥ ३ ॥ जय०
ब्रह्मानंद शरणमें आयो
भवभय नाश करो महारानी ॥ ४ ॥ जय०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

जय जगदीश्वरी मात सरस्वती
शरणागत प्रतिपालनहारी ॥ टेक ॥ जय०
चंद्रबिंबसम वदन विराजे
शीशमुकुट माला गलधारी ॥ १ ॥ जय०
वीणा वाम अंगमें शोभे
सामगीत ध्वनि मधुर पियारी ॥ २ ॥ जय०
श्वेतवसन कमलासन सुंदर
संग सखी शुभ हंससवारी ॥ ३ ॥ जय०
ब्रह्मानंद मैं दास तुमारो
दे दर्शन परब्रह्म दुलारी ॥ ४ ॥ जय०

(बंगला ताल ३)

जय कमले कमलासनसुंदरी
सकलजगतमाता सुखदाई ॥ टेक ॥
रत्नमुकुट मस्तकपर राजे
वनमाला गल बीच सुहाई ॥ १ ॥ जय०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

काननमें कुंडल कर कंकण
पग नूपुर शोभा अधिकाई ॥ २ ॥ जय०
गरुड चढ़ी हरिसंग विराजे
शेषनाग तन सेज विछाई ॥ ३ ॥ जय०
ब्रह्मानंद करे जो सुमरण
सुख संपत नित होत सवाई ॥ ४ ॥ जय०

(जंगला ताल ३)

भाग्य बडे सतगुरु मैं पायो
मनकी दुविधा दूर नसाई ॥ टेक ॥
बाहिर ढूंडफिरा मैं जिसको
सो वस्तु घट मीतर पाई ॥ १ ॥ भाग्य०
सकल जून जीवनके मांही
पूर्ण ब्रह्म जोत दरसाई ॥ २ ॥ भाग्य०
जनमजनमके बंधन काटे
चौरासी लख त्रास मिटाई ॥ ३ ॥ भाग्य०
ब्रह्मानंद चरण बलिहारी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

गुरुमहिमा हरिसे अधिकाई ॥ ४ ॥ भाग्य०

(जंगला ताल ३)

आज सखी सतगुरु घर आये
मेरे मन आनंद भयो री ॥ टेक ॥
दर्शनसे सब पाप विनाशे
दुख दरिद्र सब दूर गयो री ॥ १ ॥ आज०
अमृत वचन सुनत तम नाश्यो
घट भीतर प्रभु पाय लयो री ॥ २ ॥ आज०
जन्मजन्मके संशय टूटे
भवभय ताप मिटाय दयो री ॥ ३ ॥ आज०
ब्रह्मानंद दास दासनको
चरणकमल लिपटाय रह्यो री ॥ ४ ॥ आज०

(राग जंगला ताल ३)

बरज रही मैं इन विषयनसे
मान कही मन मूरख मेरी ॥ टेक ॥
जनमजनमके वैरी तेरे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चौरासी लख फेरत फेरी ॥ १ ॥ बरज०
यह मीठे फल जहर भरे हैं
सुख थोडा अरु विपत घनेरी ॥ २ ॥ बरज०
मृगतृष्णाजल देख लुभायो
प्यास मिटे कबहूं नहि तेरी ॥ ३ ॥ बरज०
ब्रह्मानंद संग तज इनको
पावे मोक्ष लगे नहि देरी ॥ ४ ॥ बरज०

(राग जंगला ताल ३)

चेतन देवकी सेव करो नर
जन्म सफल हो जाय तुमारो ॥ टेक ॥
घटघट पूरण एक निरंजन
द्वैतभाव सब दूर निवारो ॥ १ ॥ चेतन०
हिरदे अंदर मंदिर मांही
जगमग जोत जगे उजियारो ॥ २ ॥ चेतन०
प्रेमपुष्पसे पूजन कीजे
मनदीपक धर ध्यान विचारो ॥ ३ ॥ चेतन०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

ब्रह्मानंद उलट सुरतीको
कर दर्शन भवबंधन टारो ॥ ४ ॥ चेतन०

(राग जंगला ताल ३)

क्या पानीमें मल मल न्हावे
मनकी मैल उतार पियारे ॥ टेक ॥
हाड मांसकी देह बनी है
झरे सदा नवद्वार पियारे ॥ १ ॥ क्या पानी०
पाप कर्म तनके नहि छोडे
कैसे होय सुधार पियारे ॥ २ ॥ क्या पानी०
सतसंगत तीर्थ जल निर्मल
नित उठ गोता मार पियारे ॥ ३ ॥ क्या पा०
ब्रह्मानंद भजन कर हरिका
जो चाहे निस्तार पियारे ॥ ४ ॥ क्या पानी०

(राग जंगला ताल ३)

जीवनको मत मार छुरीसे
मारण हार खडा सिर तेरे ॥ टेक ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जीव मार कर अमर न होवे
क्यों करता फिर पाप घनेरे ॥ १ ॥ जीवन०
मांस खाय तन मांस बढावे
सो तन अंत न संग चलेरे ॥ २ ॥ जीवन०
ईश्वरके सब पुत्र बराबर
नीच ऊंच नैनन मत हेरे ॥ ३ ॥ जीवन०
ब्रह्मानंद दया धर मनमें
जानन हार जान प्रभु नेरे ॥ ४ ॥ जीवन०

(राग जंगला ताल ३)

जीवनकी प्रतिपाल करो नर
मानुष जन्म सफल हो जाई ॥ टेक ॥
जप तप योग यज्ञ बहुतेरे
जीवदया सम धर्म न भाई ॥ १ ॥ जीव०
तन मन धन कर सुख उपजावो
द्वेषभाव मनसे बिसराई ॥ २ ॥ जीव०
मेरा तेरा छोड भरमना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

ईश्वर अंश जान सब मांही ॥ ३ ॥ जीव०
ब्रह्मानंद तजो निज स्वारथ
परउपकार परम सुखदाई ॥ ४ ॥ जीव०

(राग जंगला ताल ३)

काहे शोच करे नर मनमें
कर्म लिखा सोई होवत प्यारे ॥ टेक ॥
होवनहार मिटे नहि कबहूं
कोटि जतन कर कर सब हारे ॥ १ ॥ काहे०
हरिश्चंद्र नल राम युधिष्ठिर
राज्य छोड बनवास सिधारे ॥ २ ॥ काहे०
अपनी करणी निश्चय भरणी
दुश्मन मित्र न कोई तुमारे ॥ ३ ॥ काहे०
ब्रह्मानंद सुमर जगदीश्वर
सब दुख संकट दूर निवारे ॥ ४ ॥ काहे०

(जंगला ताल ३)

कर्म कर्म क्या गावे मूरख

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुरुषारथ कर होय सुखारो ॥ टेक ॥
परमेश्वरकी वस्तुनमांही
सबका है सम भाग तुमारो ॥ १ ॥ कर्म०
इक भोगे इक तरसे मनमें
पुरुषारथ बिन जीव दुखारो ॥ २ ॥ कर्म०
आलस से निर्धन जन होवे
कर्मनका नहि दोष विचारो ॥ ३ ॥ कर्म०
ब्रह्मानंद करो पुरुषारथ
लेकर के जगदीश सहारो ॥ ४ ॥ कर्म०

(जंगला ताल ३)

बाहिर ढूंडन जा मत सजनी
पिया घर बीच बिराज रहे री ॥ टेक ॥
गगन महलमें सेज बिछी है
अनहद बाजे बाज रहे री ॥ १ ॥ बाहिर०
अमृत बरसे बिजली चमके
घुमट घुमट घन गाज रहे री ॥ २ ॥ बाहिर०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

परम मनोहर तेज पियाको
रवि शशि मंडल लाज रहे री ॥ ३ ॥ बाहिर०
ब्रह्मानंद निरख छवि सुंदर
आनंद मंगल छाज रहे री ॥ ४ ॥ बाहिर०

(जंगला ताल ३)

आज सखी स्वपनेमें आये
नारायण वैकुंठविलासी ॥ टेक ॥
मदन अनेक बदनकी शोभा
रवि शशि कोटि तेज परकाशी ॥ १ ॥ आज०
शीश किरीट गले बनमाला
कुंडल श्रवण मधुर मुख हासी ॥ २ ॥ आज०
चतुर्भुजा पीतांबर राजे
शंख चक्र कर कमल विकाशी ॥ ३ ॥ आज०
ब्रह्मानंद रमा संग सोहे
गरुड सवार परम सुखराशी ॥ ४ ॥ आज०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(राग बरहंस ताल धमाल)

नाथ तेरी माया जाल बिछाया
जामें सब जग फिरत भुलाया ॥ टेक ॥ नाथ०
कर निवास नौमास गर्भमें फिर भूतलमें आया
खान पान विषया रसभोगन
मात पिता सिखलाया ॥ १ ॥ नाथ०
घरमें सुंदर नारी मनोहर देख देख ललचाया
सुन सुन मीठी बात सुतनकी
मोहपाशमें फसाया ॥ २ ॥ नाथ०
गृहकाजनमेंनिशदिनफिरतेसकलोजन्मबिताया
आशा प्रबल भई मन भीतर
निर्बल हो गई काया ॥ ३ ॥ नाथ०
पापपुण्यसंचयकर पुनपुन स्वर्ग नरक भटकाया
ब्रह्मानंद कृपा बिन तुमरी
मोक्ष नहीं कोई पाया ॥ ४ ॥ नाथ०

---

१ नाथ कैसे गजके फंद छुडाये १२ भजन तक.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

(बरहंस ताल धमाल)

आज मेरी सुनिये अरज गिरधारी
मैं तो आया हूं शरण तुमारी ॥ टेक ॥ आज०
बालापण सब खेलगमायो तरुणकियोवशनारी
गृहकुटुंबके पोषण कारण परघर होय भिखारी
मैं जानत यह बांधव मेरे स्वारथकी सब यारी
धनसे हीन भयो मैं जबही सबको लाग्यो खारी
आयाथाजिसकाम करनको उसकीयादविसारी
आकर मायाजालमें फस्या निकलनकी नहिवारी
भवसागरमें डूबत हूं अब लीजिये वेग उबारी
ब्रह्मानंद करो करुणा प्रभु तुमविन को हितकारी

(बरहंस ताल धमाल)

राम तेरी रचना अचरज भारी
जाको वर्णन कर सब हारी ॥ टेक ॥ राम०
जलकी बूंदसे देह बनाई तामें नर अरु नारी
हाथ पांव सब अंग मनोहर भीतर प्राण संचारी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नभमें नभचर जीव बनाये जलमैं रचे जलचारी
वृक्षलता वन पर्वत सुंदर सागरकी छबि न्यारी
चांदसूरजदोऊ दीपककीने रातदिवसउजियारी
तारागण सबफिरतनिरंतर चहुंदिशपवनसवारी
ऋषि मुनि निशदिन ध्यान लगावें
लख न सकें गति सारी ॥
ब्रह्मानंद अनंत महाबल ईश्वर शक्ति तुमारी ॥

(बरहंस ताल धमाल)

नाथ कैसे नरसिंघरूप बनाया
जासे भक्त प्रल्हाद बचाया ॥ टेक ॥ नाथ०
नाकोई तुमरा पिता कहावे नाकोई जननीजाया
थंभफोडकर प्रगटभये हरि यहअचरजतेरीमाया
आधारूप धरा प्रभु नरका आधा सिंह सुहाया
हिरणकशिपको पकडधरणमें नखसैंफाड़गिराया
गर्जन सुनकर देवलोकसें ब्रह्मादिक सब आया
हाथ जोडकर विनती कीनी शांतस्वरूपकराया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

अंतर्यामी सर्वं व्यापक ईश्वर वेद बताया ॥
ब्रह्मानंदसत्यकर सबको यह परमाण दिखाया

(बरहंस ताल धमाल)

नाथ कैसे द्रुपदीके चीर बढाये
जांको देख सभी बिसमाये ॥ टेक ॥ नाथ०
कौरव पांडव मिल आपसमें जूवा खेल रचाये
डार कपटका पासा शकुनी पांडव राज्य हराये
द्रुपदसुताको बीचसभाके नगनकरणको लाये
द्वारकानाथलाज रख मेरी तुमबिन कौन सहाये
दुःशासननें पकड केशसें चीर बदनसे हटाये
खेंचत खेंचत अंत न आयो अंबर ढेर लगाये
भीष्म द्रोण कर्ण दुर्योधन सब मनमें शरमाये
ब्रह्मानंद जिनके हरि पालक तिनकोकौनदुखाये

(बरहंस ताल धमाल)

हरि तेरे चरणनकी हुं मैं दासी
मेरी काटो जनमकेरी फांसी ॥ टेक ॥ हरि०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नाजावुं मथुरा न गोकुल जावुं नाजावुं मैं काशी
मोहे भरोसो एक तुमारो दीनबंधु अविनाशी
कोई बरत कोई नेम करत है कोई रहे बनवासी
मैं चरणनको ध्यान लगावुं सबसे होय उदासी
नहि विद्याबलरूप न मेरे नहि संचय धनराशी
शरणागत मोहे जान दयानिधि
राखिये चरणन पासी ॥ ३ ॥ हरि०
नहि मैं राजपाटकछुमांगुं नहिसुखभोगबिलासी
ब्रह्मानंद शरणमें तुमरी केवल दरस पियासी

(बरहंस ताल धमाल)

हरि तुम भक्तनके हितकारी
अब राखिये लाज हमारी ॥ टेक ॥ हरि०
प्रल्हादभक्तको हिरणकशपने कष्टदियाजबभारी
नरसिंहरूप बनाय असुरकी नखसे देह विदारी
ध्रुवने बनमें करी तपस्या मातवचनहिये धारी
दरसदिखायअमरपददीनोजन्ममरणदुखटारी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

जबगजराजग्राहवशकीनो तब हरिनाम पुकारी
गजके फंद छुडावन कारण धाये गरुड सवारी
द्रुपदीने जब सुमरण कीनो बढगये चीर हजारी
ब्रह्मानंद शरणमें आयो कीजिये भवजल पारी

(बरहंस ताल धमाल)

हरि कैसे बलिघर याचन आये
सब जगतके नाथ कहाये ॥ टेक ॥ हरि०
बलिराजा रणधीर महाबल इंद्रादिक डर पाये
तीन लोक अपने वश कीने निर्भय राज्य चलाये
वामनरूप धारकर सुंदर बलिके यज्ञ सिधाये
तीन चरण पृथिवी दे राजन् लेवुं कुटिया बनाये
बलिनेदानदियाजिस क्षणमें अचरज रूप बढाये
तीन लोकमें पांव पसारे बलि पाताल पठाये
चरणकमलसे गंगा निकली देव पुष्प बरसाये
ब्रह्मानंद भक्त हितकारी दानवगर्व गिराये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(बरहंस ताल धमाल)

ऊधो तुझे ज्ञान सार समझावुं
तेरे मनका भरम मिटावुं ॥ टेक ॥ ऊधो०
मैं निर्गुण व्यापक सब जगमें पूरण ब्रह्म कहावुं
धर्म हेत नररूप धार कर धरणी भार नसावुं
संत जनोंकी करुं पालना दुष्टन मार गिरावुं
निज भक्तनके प्रेमभाववश अचरज खेल करावुं
योगी जन नित ध्यान लगावें सुंदररूप बनावुं
सकल जगतके पाप हरणको यश अपना फैलावुं
मेरो रूप सगुण जो ध्यावे निर्गुण पद पहुंचावुं
ब्रह्मानंद नाम जो सुमरे सब भवबंध छुडावुं

(बरहंस ताल धमाल)

ऊधो मुझे संत सदा अति प्यारे
जांकी महिमा वेद उचारे ॥ टेक ॥ ऊधो०
मेरे कारण छोड जगतके भोग पदारथ सारे
निशदिन ध्यान धरें हिरदेमें सबघरकाजबिसारे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

मैं संतनके पीछे जावुं जहां जहां संत सिधारे
चरणन रज निज अंग लगावुं शोधुं गात हमारे
संत मिलें तब मैं मिल जावुं संत न मुझसें न्यारे
बिन सतसंग मुझे नहि पावे कोटिजतनकरडारे
जो संतनके सेवक जगमें सो मुझ सेवक भारे
ब्रह्मानंद संतजन पलमें सब भवबंधन टारे

(बरहंस ताल धमाल)

प्रभु मेरी नैयाको पार उतारो
मैं तो डूबत हुं मझ धारो ॥ टेक ॥ प्रभु०
भवसागर जल दुस्तर भारी सूझतनांहिकिनारो
बीच समुंदर गोते खावे बिन खेवट भयभारो
लंबी लहर उठें पलपलमें नहिं जलथलआधारो
परबलपवनचलेनिशवासर चहुंदिशघोरअंधारो
ग्राह भयंकर फाडफाड मुख सन्मुखहोतहजारो
घेर घुमेर पडें बहु भारी कैसे हो निस्तारो
हाथ पैरमें जोर न मेरे नहिं कोई संग सहारो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्रह्मानंद भरोसो तेरो अब नहिं देर विचारो

(बरहंस ताल धमाल)

प्रभु तैने कैसो खेल रचायो
मैं तो देख देख विसमायो ॥ टेक ॥ प्रभु०
देव रूप हो स्वर्गलोकमें अमृतपान करायो
सुंदरसुंदर अपसर गायन सुनसुन मन हरखायो
मनुजशरीर धार धरणीपर अन्नशाकफल खायो
पशु पक्षी मृगरूप बनाकर बन जंगल बिचरायो
जलचर होकर नदियांसागर सरवर सैल करायो
दानव नाग पताललोकमें रमणकियो मनभायो
आपहि नाना भोजनबनकरआपहिभोगलगायो
ब्रह्मानंद सकल जगमाहीं घटघट बीच समायो

(बरहंस ताल धमाल)

रे मनुवा अब तो समझ मेरे भाई
तेरो अवसर बीतो जाई ॥ टेक ॥
लाख करोडी माया जोडी करकर कपट कमाई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

उंचे उंचे महल बनाये सोयो सेज बिछाई
सुंदर सुंदर वस्तर पहरे भूषण देह सजाई
नयेनये नित भोजन खाये षटरस स्वाद बनाई
जोबन भरिया सुंदर नारी भोगी कंठ लगाई
गजरथवाजी करी सवारी सैल किये मन भाई
बालपणो जोबन पुन बीतो वृद्ध अवस्था आई
ब्रह्मानंद छोडकर तृष्णा शांति पकड मनमाही

(राग बनजारा ताल ३)

[१]मुनि कहत वसिष्ठ विचारी
सुन राम वचन हितकारी ॥ टेक ॥ मुनी०
यह झूठा सकल पसारा । जिम मृगतृष्णा जल-
धाराजी । बिनज्ञानहोयदुखभारी ॥१॥ सुन०
स्वपनेमें जीव अकेला । जिम देखे जगतका
मेलाजी । तिम जान यह रचना सारी ॥ सुन०

---

१ सखी पानियाभरन कैसे जाना । पनघटपे खडा है क्राना, २३ भजन तक.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परब्रह्म एक परकाशे । सब नाम रूप भ्रम
भासेजी । जिम सीपमें रजत निहारी ॥ सुन०
विषयोंमें सुख कछु नाहीं । ब्रह्मानंद तेरे घट
मांहीजी । कर ध्यान देख निरधारी ॥ सुन०

(राग बनजारा ताल ३)

सिरीकृष्ण कहे निरधारा
सुन अर्जुन बचन हमारा ॥ टेक ॥ सिरी०
यह जीव सदा अविनाशी । सुखरूप स्वयं
परकाशीजी । जड देहको चेतनहारा ॥ सुन०
जिम वस्त्र पुराण उतारी । पहरे नवीन नर
नारीजी । तिम जीव शरीर दुबारा ॥ सुन०
मणिका जिम डोर अधारे । तिम सब जग मोर
सहारेजी । मम अंश जीव है सारा ॥ सुन०
यह नश्वर तन थिर नाहीं । क्या शोच करे
मनमांहीजी । ब्रह्मानंद है रूप तुमारा ॥ सुन०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

(राग बनजारा ताल ३)

मुनि कपिल कहे सुन माई
अब सांख्य ज्ञान मन लाई ।। टेक ।। मुनि०
सतरजतमत्रिगुण समाना । सबमिलकर प्रकृति बखानाजी । नित जडपरिणाम धराई ।। अब०
चेतन सम रूप निराला । जांका सब घटमें उजियालाजी । सोईपुरुषजानतनाहीं ।। अब०
यहप्रकृतिपुरुषमिलदोई । सब जगतकी रचना होईजी । बिन तिनके अवर कछु नाहीं ।। अब०
जब पुरुष जुदा करजाना । तब छूटे आवन जानाजी । ब्रह्मानंद स्वरूप समाई ।। अब०

(बनजारा ताल ३)

शुकदेव कहे मुनिज्ञानी
सुन भूप भागवत बानी ।। टेक ।। शुक०
सुखदुख अरु जीवनमरणा । सब अपना करना भरणाजी । कोई करत न किसकी हानी ।। सुन०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यह दुस्तर भवजल धारा । विन भजन न हो निस्ताराजी । हरिनाम सुमर सुखखानी ।। सुन०
सुर नर पशु जीव जहाना । नहि भेद कलपना नानाजी । सब एक ब्रह्ममय जानी ।। सुन०
यह जीव अमर सुखराशी । क्षणभंगुर देह विनाशीजी । ब्रह्मानंद छोडअभिमानी ।। सुन०

(वनजारा ताल ३)

शुकदेव समझ मनमांही
मैं स्वर्गलोकसे आई ।। टेक ।। शुक०
रंभा है नाम हमारा । सब परियोंकी सरदाराजी । कंचन सम देह सुहाई ।। मैं स्वर्ग०
सब जगतवीच सुखकारी । नहिं मुझसी सुंदर नारीजी । मुखचंद सुगंध भराई ।। मैं स्वर्ग०
ईश्वरने जगत बनाया । नरनारी जोग मिलाया जी । तुम भोगो अति सुखदाई ।। मैं स्वर्ग०
तन कोमल उमर कुमारा । क्या वृथा कठिन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

तपधाराजी । ब्रह्मानंद तजो हठताई ॥ मैं०

(बनजारा ताल ३)

शुकदेव कहे तपधारी
सुन रंभा बात हमारी ॥ टेक ॥ शुक०
तुम सुंदर रूप बनाया । सब हारसिंगार सजायारी । क्या मायाजाल पसारी ॥ सुन०
क्षणभंगुर विषय विकारा । नही मन ललचाय हमारारी । हरिनाम परम सुखकारी ॥ सुन०
सब जीव जूनके मांही । नारी सुख दुर्लभ नांहीरी । मानुषतन मोक्ष दुवारी ॥ सुन०
नहि विषयानंद सुहावे । ब्रह्मानंद मेरे मन भावेरी । अपने घर जावो प्यारी ॥ सुन०

(बनजारा ताल ३)

महादेव कहे निर्वानी
सुन गिरजा अमर कहानी ॥ टेक ॥ महा०
जब प्राण अपान मिलावे । तब कुंडलनी उठ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जावेजी । चडे सुन शिखरमें प्राणी ॥ सुन०
जहां अमर गुफा सुखदाई । योगीजन ध्यान
लगाईजी । सब काया सुध विसरानी ॥ सुन०
नही जीव कलेवर मांही । तब काल आय फिर
जाईजी । कर सके नही कछुव हानी ॥ सुन०
तव योगी प्राण उतारे । ब्रह्मानंद अमर तन
धारेजी । मम बचन सत्यकर मानी ॥ सुन०

(राग बनजारा ताल ३)

सिरीराम कहे समझाई
सुन लछमन प्यारे भाई ॥ टेक ॥ सिरी०
बनवास पिताने दीना । मैंने बचन शीशधर
लीनाजी । संग जनकसुता सुखदाई ॥ सुन०
नहि दोष केकई माता । यह लिखिया लेख
विधाताजी । मेरे मनमें शोचकछुनाहीं ॥ सुन०
सुख दुख सब दैवअधीना । नहि कोई किसीका
कीनाजी । जग मूरख जन भरमाई ॥सुन०॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

यह कर्मगती बलवाना। भोगे विन होय नहानाजी। ब्रह्मानंद न मन घवराई ॥ सुन०

(राग बनजारा ताल ३)

सिरीराम कहे सुखकारी
सुन शबरी[1] बात हमारी ॥ टेक ॥ सिरी०
जप तप व्रत योग विधाना। बहु वेद पुराण बखानारी। सबसे मम भक्ति सुखारी ॥ सुन०
कोई छाप तिलक तन धारे। कोई जटाविभूति सुधारेरी। मुझे प्रेम भक्ति इक प्यारी ॥ सुन०
नहि कुल जाती मैं जानुं। निजभक्त ऊंच कर मानुंरी। यह वचन सत्य निर्धारी ॥ सुन०
तुझ प्रेम हेत हम आये। तेरे हाथ बेरफल खायेरी। ब्रह्मानंद हो मोक्ष तुमारी ॥ सुन०

(राग बनजारा ताल ३)

सिरीराम कहे बिलेपाई[2]

---

१ भीलनी. २ विलाप करके.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अब जाग पियारे भाई ॥ टेक ॥ सिरी०
वो मेघनाद हत्यारा । जिन शक्ति बान कस
माराजी । सब तनकी सुध बिसराई ॥ अब०
यह काम बुरा मैं कीना । बनवास संग तुम
लीनाजी । मुझ अवगुण चित न धराई ॥ अब०
इक सीता गई चुराई । अब पडे धरण तुम
शायीजी । किम धीरज मुझको आई ॥ अब०
तुम बिन कैसे घर जावुं । क्या अपना मुख
दिखलावुंजी । ब्रह्मानंद उठो सुखदाई ॥ अब०

(राग बनजारा ताल ३)

सिरीराम कहे हनुमाना
सुन वचन कहुं परमाना ॥ टेक ॥ सिरी०
तुम सीता खबर सुनाई । मेरे मनकी शोच
मिटाईजी । तर आयो वारिनिधाना ॥ सुन०
सागरमें सेतु बनाया । सब लशकर पार

१ समुद्र.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

लंघायाजी । किया लंकपुरीमें ठाना ॥ सुन०
लछमनकी जान बचाई । सब राक्षस सेन गिराईजी । रावण दश शीश उडाना ॥ सुन०
मम काम किया बडभारी । तुम जीवो वर्ष हजारी[1]जी । ब्रह्मानंद भोग सुख नाना ॥ सुन०

(राग बनजारा ताल ३)

सिरीकृष्ण लाज रख मेरी
मैं शरण पडी हुं तेरी ॥ टेक ॥ सिरी०
दुर्योधन कपट चलाया । सब पांडव राज्य हरायाजी । मुझे बीच सभाके घेरी ॥ मैं शर०
दुःशासन हाथ पसारे । मेरे तनसें चीर उतारेजी । सब लोक खडे चहुं फेरी ॥ मैं शर०
अब सकल जगतके मांही । मेरा कोई सहायक नाहींजी । मुझे एक आश तुझ केरी ॥ मैं श०
तुम भक्तनके सुखदाई । अब बेग खबर लो

---

१ हजारो.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आईजी । ब्रह्मानंद चरणकी चेरी ॥ मैं श०

(राग बनजारा ताल ३)

कहे कृष्ण मोरधुज राजा
तुम सब भक्तन सिर ताजा ॥ टेक ॥ कहे०
साधुनका वेष बनाये । हम द्वार तुमारे आये
जी । संगमें बन सिंघ विराजा ॥ तुम सब०
हम भोजनमें हठ कीना । सुत बदन काट तुम
दीनाजी । निज धर्म बचनके काजा ॥ तुम०
सब रुदन करें नरनारी । तुम धीरज मनमें
धारीजी । सब तजी जगतकी लाजा ॥ तुम०
यह देख भक्ति व्रत तेरा । अति हर्ष भया मन
मेराजी । ब्रह्मानंद सबी दुख भाजा ॥ तुम०

(बनजारा ताल ३)

कहे पांडव कृष्ण मुरारी
अब रखिये लाज हमारी ॥ टेक ॥ कहे०
दुर्वासा मुनि चल आया । संग शिष्य हजारों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

लायाजी । अति उग्र तपोवलधारी ॥ अब०
घरमें नहि भोजनत्यारा । किस भांत होय सत-
काराजी । यह आयो संकट भारी ॥ अब०
दुर्योधन कपट विचारा । मुनिराज शाप
निर्धाराजी । वो नाश करे कुल सारी ॥ अब०
अब वेग दया कर आवो । मुनिकोप अगनसे
बचावोजी । ब्रह्मानंद भगत हितकारी ॥ अब०

(बनजारा ताल ३)

यमराज कहे दंडधारी
सुन जीव तुं वात हमारी ॥ टेक ॥ यम०
मानुष तन तुझने पाया । क्यों हरिका नाम
भुलायाजी । पडा नरकबीच दुख भारी ॥ सुन०
है भरतखंड जगमांही । शुभ कर्म भूमि सुख-
दाईजी । तहां किये पाप मति मारी ॥ सुन०
विषयोंमें मन धरलीना । पलभर सतसंग न
कीनाजी । पशुवों सम उमर गुजारी ॥ सुन०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अब क्या पीछे पछतावे । तुझे जरा शर्म नहि आवेजी । ब्रह्मानंद है भूल तुमारी ॥ सुन०

(वनजारा ताल ३)

मैनावती वचन उचारा
सुन गोपीचंद पियारा ॥ टेक ॥ मैना०
जिनकी कंचनसी काया । धन जोबन रूप सवायाजी । सब हो गये कालअहारा ॥ सुन०
यह राज्य संपदा भारी । सब होय पलकमें न्यारीजी । तज माया मोह पसारा ॥ सुन०
सतगुरुकी शरण सिधारो । कर योग अमर तनधारोजी । मिटे जन्ममरण संसारा ॥ सुन०
वो नाथ जलंधर योगी । नित ब्रह्मानंद रस भोगीजी । कर सेवा हो निस्तारा ॥ सुन०

(वनजारा ताल ३)

गोपीचंद बाल तुमारा
गुरुनाथ करो निस्तारा ॥ टेक ॥ गोपी०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

मुझे माता ज्ञान बताया । तज राज्य शरणमें आयाजी । सब झूठा जगत पसारा ॥ गुरु०
सुंदर तन भूपति भारे । सब काल नाश कर डारेजी । मुझे लगे मौत डर भारा ॥ गुरु०
मैं सुना योग बलभारी । सब कालपाश भय-हारीजी । भवबंधन मेटनहारा ॥ गुरु०
मुझे साधन योग बतावो । करुणाकर शिष्य बनावोजी । ब्रह्मानंद चरण सिरधारा ॥ गुरु०

(बनजारा ताल ३)

कहे नाथ जलंधर ध्यानी
सुन गोपीचंद सुजानी ॥ टेक ॥ कहे०
जब मूलबंध दृढ लावे । तब उलट पवन चढ जावेजी । सब दशमें द्वार समानी ॥ सुन०
दिनदिन जब योगवधारा । तब शुष्क होय तन साराजी । भूमी जल तत्त्व सुकानी ॥ सुन०
फिर चंद्रकला रस भीना । सब होय शरीर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नवीनाजी । अजरामर सिद्धि निधानी ॥ सुन०
मरकरके फिर जो जीवे । सोई प्रेम रसायन
पीवेजी । ब्रह्मानंद परम सुखखानी ॥ सुन०

(बनजारा ताल ३)

सब तज कर राज्य समाजा
बन चले भरतरी राजा ॥ टेक ॥ सब०
इक विप्र अमर फल लाया । नृप रानी हेत
पठायाजी । तन अमर होनके काजा ॥ बन०
रानी निज प्रीतम दीना । तिन वेश्या अर्पण
कीनाजी । फिर भूपति भेट विराजा ॥ बन०
जिससे मम प्रेम सवाया । सो सेवे पुरुष
परायाजी । सब मेटी कुलकी लाजा ॥ बन०
मैं मूरख नार अधीना । नहि भजन ईशका
कीनाजी । ब्रह्मानंद वृथा सब साजा ॥ बन०

(बनजारा ताल ३)

जगदीश जगतपति प्यारा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

कर भवदुख दूर हमारा ॥ टेक ॥ जग०
तुम सब जीवनके स्वामी । घटघटके अंतर-
यामीजी । सब व्यापक सबसे न्यारा ॥ कर०
भूमि जल अंबर भारी । सब रचना विश्व
तुमारीजी । अचरज यह खेल पसारा ॥ कर०
ब्रह्मा शिव ऋषि मुनिदेवा । नित करत तुमारी
सेवाजी । सबका तुम पालनहारा ॥ कर०
करुणानिधि दीनदयाला । शरणागत जनप्रति-
पालाजी । ब्रह्मानंद मैं दास तुमारा ॥ कर०

(बनजारा ताल ३)

जगदीश मैं शरण तुमारी
प्रभु सुनिये विनति हमारी ॥ टेक ॥ जग०
यह पांच विषयकी धारा । सब बह्या जात
संसाराजी । करुणा कर पार उतारी ॥ प्रभु०
पंछी जिम जाल अधीना । तिम जीव कर्मवश
कीनाजी । मोहे लीजिये वेग उबारी ॥ प्रभु०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तन धन सुत बांधव नारी। सब झूठ जगतकी यारीजी। तुमबिन नहि को हितकारी॥ प्रभु०
यह प्रबल तुमारी माया। जामें जीव फिरे भरमायाजी। ब्रह्मानंद करो प्रभु न्यारी॥ प्रभु०

(बनजारा ताल ३)

सुन नाथ अरज अब मेरी
मैं शरण पडा प्रभु तेरी॥ टेक॥ सुन०
तुम मानुष तन मोहे दीना। नहि भजन तुमारो कीनाजी। विषयोंने लई मति घेरी॥ मैं श०
सुत दारादिक परिवारा। सब स्वारथका संसाराजी। जिन हेत पाप किये ढेरी॥ मैं०
मायामें जीव भुलाना। नहि रूप तुमारो जानाजी। पडा जन्म मरणकी फेरी॥ मैं०
भवसागर नीर अपारा। कर कृपा करो प्रभु पाराजी। ब्रह्मानंद करो नहि देरी॥ मैं श०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

(राग बनजारा ताल ३)

कहे मारकंड मुनिराया
हरि धन्य तुमारी माया ॥ टेक ॥ कहे०
मैं मनमें सुमरण कीना । सब जलधारा जग भीनाजी । कुटिया संग फिरा बहाया ॥ हरि०
इक बालक वटतरुशाई । मुझे लिया उदरमें पाईजी । तहां सब जग फिर दरसाया ॥ हरि०
मुखसे जब बाहिर डारा । निजआश्रम आय निहाराजी । पलमें बहु वर्ष बिताया ॥ हरि०
तुम पूरण ब्रह्म अपारा । मुझे लीजिये बेग उबाराजी । ब्रह्मानंद शरणमें आया ॥ हरि०

(राग बनजारा ताल ३)

कहे लछमन कोमल बानी
सुन परशुराम अभिमानी ॥ टेक ॥ कहे०
हम बालकपणमें भारे । कई धनुष तोडकर डारेजी । क्या शंकर चाप कहानी ॥ सुन०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कुछ क्षत्रिय नाश कराई । तुम फूल गये मन
मांहीजी । कोई मिला न बीर सुजानी ।। सुन०
मैं विप्र जान शरमावुं । नहि यम घर आज
पठावुंजी । क्या झूठी हठ तुम ठानी ।। सुन०
यह रामचंद्र भगवाना । जिन तोडा धनुष पुरा-
नाजी । ब्रह्मानंद समझ मुनि ज्ञानी ।। सुन०

(राग बनजारा ताल ३)

सुनो सुनो बचन नरनारी
हरिभजन करो सुखकारी ।। टेक ।। सुनो०
जिन रचा शरीर तुमारा । उसका क्यों नाम
विसाराजी । कृतघन शठ मूढ अनारी ।। हरि०
खाना पीना सोजाना । सब काम है पशुसमा-
नाजी । क्यों देह मनुजकी धारी ।। हरि०
क्या गर्व करे मनमांही । तुझे काल पकड ले
जाईजी । पलछिनकी लगे नहि बारी ।। हरि०
विषयोंसें मनको मोडो । हरिचरणकमलमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

जोडोजी । ब्रह्मानंद मिटे भय भारी ॥ हरि०

(राग बनजारा ताल ३)

सुनो सुनो ध्यानसें प्यारा
वो बाजत कूच नगारा ॥ टेक ॥ सुनो०
केई राजा सुंदर रानी । केई योगी पंडित
ज्ञानीजी । केई चले गये सरदारा ॥ वो बा०
केई वैद्य ज्योतिषी स्याने । केई पीर पगंबर
दानेजी । कोई रहे न थिर अवतारा ॥ वो बा०
केई हाथी तुरंग सवारी । केई महल खजाने
भारीजी । केई उठ गये हाट बजारा ॥ वो बा०
क्या गाफिल टांग पसारी । अब उठकर करो
तियारीजी । ब्रह्मानंद चलनकी बारा ॥ वो बा०

(राग बनजारा ताल ३)

सुनो सुनो सखी मुझ प्यारी
कर पियाके मिलनकी त्यारी ॥ टेक ॥ सुनो०
दो दिनका पियर ठिकाना । फिर अंत ससुर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घर जानारी । क्या झूठी मोह पसारी ॥ कर०
सब मैल उतार बदनसे । कर हार सिंगार
जतनसेंरी । नख शिख ले देह सुधारी ॥ कर०
तुझसे गुण रूप सवाई । केई पियाके चरण
लिपटाईरी । मत हो जोबन मतवारी ॥ कर०
पिया बिन न कबी सुख पावे । क्यों बिरथा जन्म
गमावेरी । ब्रह्मानंद रहो मत न्यारी ॥ कर०

(राग बनजारा ताल ३)

चलो चलो सखी अब जाना
पिया भेज दिया परवाना ॥ टेक ॥ चलो०
इक दूत जबर चल आया । सब लशकर संग
सजायारी । किया बीच नगरके ठाना ॥ पि०
गढ कोट किले गिरवाये । सब द्वार बंद कर-
वायेरी । अब किस विध होय रहाना ॥ पि०
जब दूत महलमें आवे । तुझे तुरत पकड ले
जावेरी । तेरा चले न एक बहाना ॥ पिया०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

मग पंथ कठिन है भारी । कर संग समान तियारीरी । ब्रह्मानंद फेर नहि आना ॥ पिया०

(राग बनजारा ताल ३)

दो दिनका जगमें मेला
सब चला चलीका खेला ॥ टेक ॥ दो दि०
कोई चला गया कोई जावे । कोई गठडी बांध सिधावेजी । कोई खडा तियार अकेला ॥ सब०
कर पाप कपट छल माया । धन लाख करोड कमायाजी । संग चले न एक अधेला ॥ सब०
सुत नार मात पितु भाई । कोई अंत सहायक नाहींजी । क्यों भरे पापका ठेला ॥ सब०
यह नश्वर सब संसारा । कर भजन ईशका प्याराजी । ब्रह्मानंद कहे सुन चेला ॥ सब०

(गजल चलत ताल दादरा)

विनां हरिके भजन मुफत जन्म गमाया

---

१ वृजराज आज सांवरो बंसी बजागया ९ तक.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दुनियांकी मौजमैं फिरे सदाही भुलाया ॥ टेक
यह बारबार देह मनुजका न मिलेगा
डालीसे टूटा फूल वो फिरके न खिलेगा
दिन चार पांचके लिये क्या ढंग जमाया ॥१॥
जिनको तुं मानता है मेरे हैं यह पियारे
वो छोडकर तुझे जंगलमें घरको सिधारें
परलोकमें न तेरो कोई होत सहाया ॥ २ ॥
मोहकी मदिराको पीके मरण भुलाया
चूस चूस विषया रसकूं फिरत फुलाया
जबतक न चूहेको बिलीने मुखमें उठाया ॥३॥
कहता है ब्रह्मानंद ब्रह्मानंद लीजिये
सदा हरिका भजन दिल लगाके कीजिये
जिसने किया सो फिर न गर्भवासमें आया ॥४॥

(गजल चलत ताल दादरा)

अये दीनबंधु आज मेरी अरज सुन जरी
दयानिधान जान आन शरणमें पडी ॥ टेक ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

काम क्रोध लोभ मोह चोर धन हरैं
तेरे विना दयाल कोन पालना करे
बडे हैं जोरदार हार खायके डरी ॥ १ ॥
अज्ञानका पडदा मेरे दिलसे उठाइये
विषयोंके जालसे प्रभु मुझको बचाइये
भवसिंधुको तरा सोई जिसपे दया करी ॥२॥
जनममरणका रोग मेरा नाश कीजिये
चरणकमलकी भक्ति दास जान दीजिये
मिटेंगे दुख सबी जबी तेरी नजर हरी ॥ ३ ॥
गुणहीन जानकर मुझे दिलसे न टारिये
जनमजनमका दास जानकर संभारिये
ब्रह्मानंद तेरे नामकी मैं टेक मन धरी ॥ ४ ॥

(गजल ताल दादरा)

मान मान मान कहा मान ले मेरा
जान जान जान रूप जान ले तेरा ॥ टेक ॥
जाने बिना स्वरूपके मिटे न दुख कबी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कहते हैं वेद चार चार बात यह सबी
सतसंगमें मन जोड तोड मोहका घेरा ॥ १ ॥
जाता है देखने जिसे काशी दुवारका
मुकाम है बदनमें तेरे उसही यारका
लेकिन बिना विचारके किसुनें नहिं हेरा ॥२॥
जो नैनकाभी नैन बैनकाभी बैन है
जिसके बिना शरीरमें न पलक चैन है
पिछान ले वही तेरा स्वरूप है नेरा ॥ ३ ॥
कहता है ब्रह्मानंद ब्रह्मानंद तुं सही
बात यह पुराण वेद ग्रंथमें कही
विचार देख मिटे जन्ममरणका फेरा ॥ ४ ॥

(गजल ताल दादरा)

नाम नाम नाम जपो नाम रामका
काम काम काम तजो काम धामका ॥ टेक ॥
बिना हरिके नाम कबी सुख न पायगा
मरकरके अंतकालमें तुं नरक जायगा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

मिलेगा बारबार तुझे तन गुलामका ॥ १ ॥
करता है क्या गुमान तुं जोबन वा मालका
महमान है यह पास तेरे आजकालका
पुतला बिखर जायगा तेरा हाडचामका ॥२॥
तप योग यज्ञ दान कर्म हैं बडे सही
कलियुगमें नामके समान दूसरा नही
मिलता है यतनसे बिना बिनाही दामका ॥३॥
पाकर मनुजका तन जो हरिनाम ना लिया
चिंतामणीको मूढ काचसें बदल दिया
ब्रह्मानंद भजनके बिना जीना न कामका ॥४॥

(गजल ताल दादरा)

जाग जाग जाग मोह नींदसे जरा
भाग भाग भाग भोग जालसें परा ॥ टेक ॥
विषयोंके जालमें फसा छुटे नहीं कबी
जनमजनममें विषय संग होत हैं सबी
बिना बिरागके न भवसिंधुको तरा ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वर्ष गया मास गया दिन गई घडी
दुनियांके कारबारमें खबर नही पडी
नजदीक काल आगया मनमें नही डरा ॥२॥
संगतसें देहकी स्वरूपको बिसारिया
जगतको सत्य मानके मनको पसारिया
दिनरात करे शोच राग द्वेषसे भरा ॥ ३ ॥
अपने स्वरूपको बिचार देखले सही
ईश्वर है तेरे पास वो तुझसे जुदा नही
ब्रह्मानंद येही वेदका सुनले बचन खरा ॥४॥

(गजल ताल दादरा)

सोहं सोहं सोहं सदा बोल रे तोता
नही तो भवसिंधुमें तुं खायगा गोता ॥ टेक ॥
जगत बगीचे बीच फल चूसता फिरें
आतमस्वरूपकी तरफ नजर नही धरें
खायगा यम गुलेल जबी फिरेगा रोता ॥१॥
लालचको देख मूढ पींजरेमें फसगया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

सदाही खान पान मान हेत बश भया
तुं छोडकर इसे कबी जुदा नही होता ॥ २।
इकदिनमें पिंजराभी तेरा टूट जायगा
स्वजन मकान माल सबी छूट जायगा
जिनके तुं वासते मुफत उमर फिरे खोता ॥३।
कहता है ब्रह्मानंद सुनो सुवारे चपल
इस पिंजरेको छोड सदा हो रहो अचल
तुं जाग मोहनींदसे फिरे कहां सोता ॥ ४।

(गजल ताल दादरा)

सोहं सोहं सोहं सदा बोलरी मैना
होता है अष्टपहर येही वेदका कहना ॥ टेक।
तुं बैठ वृक्षडार शब्द बोलती रहें
अपने मुकाममें कबी विश्राम ना लहें
लगेगी बाजकी झपट खुलेंगे तो नैना ॥ १।
जिसको तुं ढूंढने जंगलमें जाती है सदा
वही हैं तेरे पास नही होता कबी जुदा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बतावते है संत येही समझ ले सैना ॥ २ ॥
इस पिंजरेमें बैठ भूल आपको गई
विषयोंकी लालसासें सदा कैद हो रही
तुं छोड विषयसंग तबी पायगी चैना ॥ ३ ॥
यह पिंजरा पुराणा तेरा होत जात है
दिन चार पांच वा घडी वा पलकी बात है
ब्रह्मानंद तेरे संग यह सदा नहीं रहना ॥४॥

(गजल ताल दादरा)

गाफिल तुं जाग देख क्या तेरा स्वरूप है
किस वासते पडा जन्ममरणके कूप है ॥टेक॥
यह देह गेह नाशवान है नही तेरा
वृथाभिमान जालमें फिरे कहां घेरा
तुं तो विनाशसें परे सदा अनूप है ॥ १ ॥
भेद दृष्टि कीन जबी दीन होगया
स्वभाव अपनेसें आप हीन होगया
विचार देख एक तुं भूपनका भूप है ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

तेरे प्रकाशसें शरीर चित्त चेतता
तुं देह तीन दृश्यको सदा है देखता
द्रष्टा नहि होता है कभी दृश्य रूप है ॥ ३ ॥
कहता है ब्रह्मानंद ब्रह्मानंद पाइये
इस बातको विचार सदा दिलमें लाइये
तुं देख जुदा करके जैसे छाय धूप है ॥ ४ ॥

(गजल ताल दादरा)

अपनेको आप भूलके हैरान होगया
मायाके जालमें फसा विरान होगया ॥ टेक ॥
जडदेहको अपना स्वरूप मान मन लिया
दिनरात खान पान कामकाज दिल दिया
पानीमें मिलके दूध एकजान होगया ॥ १ ॥
विषयोंको देखदेखके लालचमें आरहा
दीपकमें ज्यों पतंग जायके समारहा
विना विचारके सदा नादान होगया ॥ २ ॥
कर पुण्य पाप स्वर्ग नरक भोगता फिरे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तृष्णाकी डोरसें बंधा सदा जनम धरे
पीकरके मोहकी सुरा बेभान हो गया ॥ ३ ॥
सतसंगमें जाकर सदा दिलमें विचारले
बदनमें अपने आप रूपको निहारले
ब्रह्मानंद मिले मोक्ष जबी ज्ञान होगया ॥४॥

(गजल ताल धमाल)

अगर है मोक्षकी बांछा
छोड दुनियांकी यारी है ॥ टेक ॥ अगर०
कोई तेरा न तुं किसका सबी मतलबके हैं साथी
फसा क्यों जाल मायाके कालसिरपे सवारी है ॥
बैठ संगतमें संतनकी रूप अपनेको पहचानो
तजो मदलोभ हंकारा करो भगती पियारी है ॥
बसो एकांतमें जाकर धरो नित ध्यान ईश्वरका
रोक मनकी चपलताई देख घटमें उजारी है ॥

---

१ अगर है शौक मिलनेका तो हरदम लौ लगाताजा बिनारघुनाथके देखे नही दिलको करारी है, २५ भजनतक.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

जलाकर कर्मकी ढेरी तोड मायाके बंधनको
ब्रह्मानंदमें मिलो जाकर सदा जो निर्विकारी है।

(गजल ताल धमाल)

अगरहैप्रेमदर्शनका भजनसेप्रीतकरप्यारा ॥ टेक
छोडकर काम दुनियांके रोकविषयोंसें मनअपना
जीतकर नींद आलसको रहो एकांतमें न्यारा॥
बैठ आसन जमाकरके त्याग मनके बिचारोंको
देख भृकुटीमें अंदरसे चमकताहै अजब तारा॥
कबी बिजली कबी चंदा कबी सूरज नजर आवे
कबी फिरध्यानमें भासे ब्रह्मजोतीका चमकारा॥
मिटें सब पाप जन्मोंके कटें सब कर्मके बंधन
वो ब्रह्मानंदमें होवे लीन मन छोड संसारा॥

(गजल ताल धमाल)

अगरहैप्रेममिलनेका तो दुनियांसे क्युं शरमावे॥
पिता प्रल्हादको मारा नाम हरिका न छोडाहै
प्रभु रक्षा करे जिनकी तो मनमें कौन डरपावे॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चला बनमेंतपस्याको मना ध्रुवको किया राजा
लगनजिसकोलगीपूर्ण उसेफिरकौन अटकावे ॥
सभा के बीच द्रुपदीने पुकारा नाम माधवका
भरोसाहैजिसेहरिका क्यों दूजेकी शरण जावे ॥
सदा सतसंगमें जाकर करो हरिका भजन प्यारे
वो ब्रह्मानंद जाताहै वकत फिर हाथ ना आवे ॥

(गजल ताल धमाल)

कृष्ण घर नंदके आये सितारा[1] हो तो ऐसा हो
करें सब प्रेमसे दर्शन दुलारा हो तो ऐसा हो॥टेक
बकासुरको मसल डारा पूतना जानसे मारी
कंसको केशसे खेंचा खिलारा हो तो ऐसा हो ॥
कूद पानीके अंदरसे नागको नाथ कर लाये
चरणफणफणपेधरकरके नचारा होतोऐसा हो ॥
तीर जमुनाके जाकरके बजाई बंसरी मोहन
चलीघरछोडब्रजनारी पियारा हो तो ऐसा हो ॥

---

१ भाग्य.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

रचाई रास कुंजनमें मनोहर रूप बन करके
देवदर्शनको चलआये दिदारा हो तो ऐसा हो ॥
गये जब छोड गोकुलको नही फिर लोटकर आये
सखी रोती रही बनमें किनारा हो तो ऐसा हो ॥
पुरी द्वारावती जाकर महल सोनेके बनवाये
हजारों रानियां व्याही पसारा हो तो ऐसा हो ॥
कुरु पांडव लडे रणमें जीत अर्जुनकी करवाई
बचाई लाज द्रुपदीकी सहारा हो तो ऐसा हो ॥
उतारा भार भूमीका सिधाये धाम अपनेको
वो ब्रह्मानंद दुनियांसे नियारा हो तो ऐसा हो ॥

(गजल ताल धमाल)

राम दशरथके घर जन्मे घराना हो तो ऐसा हो ॥
लोकदर्शनकोचलआयेसुहानाहोतोऐसाहो ॥ टेक
यज्ञके काम करनेको मुनीश्वर ले गया बनमें
उडाये शीश दैत्यनके निशाना हो तो ऐसा हो ॥
धनुषको जायकर तोडा जनककी राजधानीमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भूपसब मनमें शरमाये लजाना होतो ऐसा हो ॥
पिताकी मानके आज्ञा राम बनको चले जबही
नछोडा संग सीताने जनाना होतो ऐसा हो ॥
सियाको लेगया रावण बनाकर बेष जोगीका
कराया नाशसब अपना दिवाना होतो ऐसाहो ॥
प्रीत सुग्रीवसे करके गिराया बाणसे बाली
दिलाईनार फिरउसकी यराना होतो ऐसा हो ॥
गया हनुमान सीताकी खबर लेनेको लंकामें
जलाकरके नगर आया सियाना होतो ऐसा हो ॥
बांध सेतु समुंदरमें उतारा पार सेनाको
मिटाया वंश रावणका हराना होतो ऐसा हो ॥
राज्यदेकर बिभीषणको अयोध्या लोटकर आये
वो ब्रह्मानंदबलअपना दिखाना होतो ऐसा हो ॥

(गजल ताल धमाल)

सदाशिव सर्व वरदाता दिगंबर हो तो ऐसाहो
हरेसबदुःखभक्तनके दयाकरहोतोऐसाहो ॥ टेक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

शिखर कैलासके ऊपर कल्पतरुवोंकी छायामें
रमेनितसंगगिरिजाके रमणघर होतो ऐसाहो ॥
शीशपर गंगकी धारा सुहावे भालमें लोचन
कला मस्तकमें चंदरकी मनोहर होतो ऐसाहो ॥
भयंकर जहर जब निकला क्षीरसागरके मंथनसे
धरा सब कंठमें पीकर विषंधर होतो ऐसाहो ॥
सिरोंको काटकर अपने किया जबहोमरावणने
दियासबराज्यदुनियांका दिलावरहोतोऐसाहो ॥
किया नंदीने जा बनमें कठिन तप कालकेडरसे
बनायाखासगणअपना अमरकरहोतोऐसाहो ॥
बनाये बीच सागरमें तीन पुर दैत्य सेनाने
उडाये एकही शरसें त्रिपुरहर होतो ऐसाहो ॥
दक्षके यज्ञमें जाकर तजी जब देह गिरिजाने
कियासबध्वंसपलभरमें भयंकर होतो ऐसा हो ॥
देव नर दैत्य गण सारे जपें नित नाम शंकरका
वो ब्रह्मानंद दुनियांमें उजागर हो तो ऐसा हो ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(गजल ताल धमाल)

प्रभु सबमें समाया है समाना होतो ऐसा हो
करीसबविश्वकीरचना रचानाहोतोऐसाहो ॥टेक
बिना सामान बाहिरके बिना हथियारके कोई
बनाये हैं भुवन सारे बनाना होतो ऐसा हो ॥
बीजसें देहकी पैदा बदनसें बीजका होना
चलाया चक्र दुनियांका चलाना होतो ऐसाहो ॥
कोई पातालके नीचे बसाये जीव भूतलमें
कोई आकाशके ऊपर बसाना हो तो ऐसा हो ॥
चांद सूरज या तारोंके फिरें आकाशमें मंडल
बिना आधारके कोई फिराना होतो ऐसाहो ॥
बनाई देह मानुषकी दिये सब भोगके साधन
बिनाउपकारके करुणा निधाना होतोऐसाहो ॥
चराचर सर्व जीवनकी करे नित पालना पोषण
सकल संसारकामालिक कहाना होतो ऐसाहो ॥
जगतके आदिसे पहले रहे मौजूद आखिरमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

पिता संसार सारेका पुराणा होतो ऐसाहो ॥
शरणमें जीव जो आवे मिटें सब जाल मायाके
वो ब्रह्मानंद बंधनसे छुडाना होतो ऐसाहो ॥

(गजल ताल धमाल)

सुनोजगदीशदिलदेकेअरजअबतोहमारीहै ॥ टेक
जुदा जबसे हुया तुमसे फसा मायाके चक्करमें
निकलनाहै कठिनभारी नजरआवे न वारीहै ॥
आयाथा एकला तुमरे भजन करणेको दुनियांमें
कुटुंबपरिवार सुत दारा जाल झूठी पसारी है ॥
कर्मकी डोरसे बांधा पडा कायाके पिंजरमें
फिराविषयोंकीलालचमें उमरसारी गुजारीहै ॥
माफकर दोष सब मेरे दास अपना बनालीजे
वो ब्रह्मानंद चरणोंकी भक्ति दीजे तुमारीहै ॥

(गजल ताल धमाल)

अगरहैज्ञानकोपानातोगुरुकीजाशरणभाई ॥टेक
जटा सिरपे रखानेसे भस्म तनमें रमानेसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सदा फलमूल खानेसे कबी नहि मुक्तिको पाई ॥
बने मूरत पुजारी है तीरथ यात्रा पियारी है ॥
करे व्रतनेम भारी है भरम मनका मिटे नाही
कोटिसूरज शशी तारा करें परकाश मिल सारा
बिना गुरु घोर अंधारा न प्रभुका रूप दरसाई ॥
ईश सम जान गुरु देवा लगा तनमन करो सेवा
ब्रह्मानंद मोक्षपद मेवा मिले भवबंध कटजाई ॥

(गजल ताल धमाल)

शरणमें आपडातेरी प्रभु मुझकोभुलानाना ॥ टेक
तेरा है नाम दुनियांमें पतितपावन सबी जानें
देखकर दोषको मेरे नजर मुझसे हटानाना ॥
कालकी है नदी भारी बहा जाता हूं धारामें
पकडले हाथ अब मेरा नाथ देरी लगानाना ॥
भगत तेरे हैं बहुतेरे करें सुमरण सदा मनमें
जानकर दास दासनका मुझे उनसे छुडानाना ॥
तेरा है रूप अविनाशी जगतसारेमें है पूरण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

वो ब्रह्मानंद नैननसे मेरे कबहूं छिपानाना ॥

(गजल ताल धमाल)

नजरभर देखलेमुझकोशरणतेरीमें आयाहुं ॥टेक
कोई माता पिता बंधु सहायक है नही मेरा
कामअरु क्रोधदुशमनने बहुतदिनसेसतायाहुं ॥
भुलाकर यादको तेरी पडा दुनियांकी लालचमें
मायाके जालमें चारों तरफसे मैं फसायाहुं ॥
कर्म सब नीच है मेरे तुमारा नाम है पावन
तार संसारसागरसे गहन जलमें डुबायाहुं ॥
छुडाकर जन्मबंधनसे चरणमें राखले अपने
वो ब्रह्मानंद मैं मनमें येही आशा लगाया हुं ॥

(गजल ताल धमाल)

नजरभरदेखले मुझको शरणमेंआपडातेरी ॥ टेक
तेरा दरबार है ऊंचा कठिन जाना है मंजिलका
हजारों दूत मारगमें खडे हैं पंथको घेरी ॥
नहीं है जोर पैरोंमें न दूजा संगमें साथी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सहारा दे मुझे अपना करो नहि नाथ अब देरी।।
नहीं है भोगकी वांछा न दिलमें मोक्ष पानेकी
प्यासदर्शनकीहै मनमें सफलकर आशको मेरी।।
क्षमा कर दोषको मेरे बिरदको देखके अपने
वो ब्रह्मानंद कर करुणा मिटा दे जन्मकी फेरी।।

(गजल ताल धमाल)

सुनोदिलकोलगाप्यारेधुनीअनहदकीहोतीहै।टे०
बजे है बंसरी बीना शंख घडियाल मिरदंगा
गरज बादलकी है भारी कर्मकी मैल धोती है।।
उठे धुनके सहारेसे बदन सारेमें गुंजारा
अमृतकी धार तालुसें सदा मुखमें निचोती है।।
लगे मन नादके अंदर भुले तनकी खबर सारी
हिरदेके बीचमें सुंदर प्रगटहो दिव्यजोती है।।
खुलें जब दृष्टिके पडदे नजर आवें भुवन सारे
वो ब्रह्मानंदकी लहरी प्रेमरसमें भिगोती है।।

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

(गजल ताल धमाल)

ऊधोवोसांवरीसूरतहमें दिलजानसेभातीहै ।।टेक
वो काले बाल माथेपे मुकुट मोरनके पांखोंकी
मकरकुंडलकी कानोंमें झलकवो यादआतीहै ।।
गले बनमालकी शोभा पीतांबरकी छटा तनपे
वो बंसीकी मधुरबोली हमें तनमन भुलातीहै ।।
कटीमें मेखला सुंदरसजी मोतिनकी लडियोंकी
वो नूपुरकी धुनी पगमें हमारा दिल चुराती है ।।
वो बनमें रासकी लीला वो जमुनातीरकेलिनकी
वो ब्रह्मानंदकी बातें सुमरते रैन जाती है ।।

(गजल ताल धमाल)

ऊधोवोसांवरी सूरतहमें फिरकबदिखावोगे ।।टेक
विरहकी आगने हमरा जलाया है बदन सारा
मोहनके प्रेमपानीसें जलन वो कब बुझावोगे ।।
सुधीखाने वा पीनेकी रही हमको न सोनेकी
प्यासदर्शनकी है मनमेंकृष्णकोकब मिलावोगे ।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फिरें दिन रैन हम रोती वो बृंदावनकी कुंजनमें
मनोहर बंसरीकी धुन हमें फिर कब सुनावोगे ॥
न हमको योगसें मतलब न मुक्तिकी हमे वांछा
वो ब्रह्मानंद सुंदरमें हमारा दिल लगावोगे ॥

(गजल ताल धमाल)

ऊधो वो सांवरीसूरत हमारे दिल समाईहै ॥ टेक
न दिनको चैन नैननमें नींद नहि रातको आवे
खबर घरबारतनमनकी सबी हमको भुलाई है ॥
बांधकर प्रेमबंधनसे छोड हमको गये मोहन
सही जाती नहीं हमसे शामकी अब जुदाई है ॥
छोडकर काम हम घरके बनाकर वेष जोगनका
करेंगी खोज बनबनमें मिले कैसे कन्हाई है ॥
चरणका ध्यान योगीजन सदाजिनका करेंमनमें
वो ब्रह्मानंद दर्शनकी लगन हमको लगाई है ॥

(गजल ताल धमाल)

ऊधोवो सांवरीसूरतलगे हमको पियारी है ॥ टेक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

धर्मकी पालना करने लिया अवतार नारायण
हमारे भाग्यथे जागे मिले हमको मुरारी है ॥
करें तपयोग बहुतेरे मिले दर्शन नहीं जिनका
वो हमारे साथ कुंजनमें फिरे वन वन विहारी है
ज्ञान अरु योगकी चर्चा हमारे मन नही भावे
पिया रस प्रेमभक्तीका और सब बात खारीहै ॥
नहीं देखा है निर्गुणको न हमारे ध्यानमें आवे
वो ब्रह्मानंद मोहनकी छबी दिलबीच धारी है ॥

(गजल ताल धमाल)

ऊधो वो सांवरीसूरत हमारादिल चुरायाहै ॥ टे०
बजाकर बंसरी सुंदर सुनाकर गीत रागनके
रचाकर रास कुंजनमें प्रेम हमको लगाया है ॥
छोड करके हमें रोती बसे वो द्वारका जाकर
खबर लीनी नही फिरके हमेंदिलसेंभुलाया है ॥
हमारा हाल जाकरके सुनाना शाम सुंदरको
तुमारे दरसके कारण हमें बनबन फिराया है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न भावें भोग दुनियांके न वांछा योग करनेकी
वो ब्रह्मानंद माधवका रूप मनमें समाया है ॥

(गजल ताल धमाल)

ऊधोवोसांवरीसूरत नहींहमको दिखातेहो ॥ टेक
जगतहित कारण हरिने धरी है देह मानुषकी
मनोहर मोहनी मूरत नजरसें क्यों छिपातेहो ॥
कृष्णचंदरके चरणोंमें लगाया ध्यान है हमने
कथा तुमरूप निर्गुणकी हमेंअवक्यासुनाते हो ॥
तरे संसारसागरको जपे जो नाम माधवका
कठिनवोयोगकासाधनहमें फिरक्योंसिखातेहो ॥
लगीदिल बीचमें हमरे लगन दिनरात दर्शनकी
वो ब्रह्मानंद किसकारण अबी देरी लगाते हो ॥

(गजल ताल धमाल)

ऊधो वो सांवरीसूरत हमारे नैनका तारा ॥ टेक
अगर हम जानती मोहन चले जायेंगे गोकुलसे
लगाती प्रेम ना उनसे छोडघरकाज हम सारा ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

तुमारी ज्ञानकी बातें असर करती नही दिलमें
बसा है कृष्ण हिरदेमें नही होता कबी न्यारा॥
रहेंगे कंठमें जबतक हमारे प्राण देहीमें
न भूलेगा कबी हमको मनोहररूप वो प्यारा॥
करोतुमहीवोनिर्गुणका ध्यानअरु योगकासाधन
वो ब्रह्मानंद हमने तो हरि दिल बीचमें धारा॥

(गजल ताल धमाल)

मिलादो शामसेऊधोतेरागुणहमभीगावेंगी॥टे॰
मुकुट सिर मोरपंखनका मकरकुंडल हैं कानोंमें
मनोहररूप मोहनका देख दिलको रिझावेंगी॥
हमनको छोड गिरधारी गये जबसे नही आये
चरणमें शीश धरकरके फेर उनको मनावेंगी॥
प्रेम हमसें लगा करके बिसारा नंदनंदनने
खता क्याहोगई हमसे अरज अपनी सुनावेंगी॥
कबी फिर आय गोकुलमें हमे दर्शन दिलावेंगे
वो ब्रह्मानंद हम दिलसें नही उनको भुलावेंगी॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(गजल ताल धमाल)

बिनाहरिनामकेसुमरे गतिनहीहोयगीतेरी ॥टेक
लगाले भस्म इस तनमें करो तप जाके वा बनमें
समझले खूब यह मनमें मिटेनहिजन्मकी फेरी ॥
फिरो मथुरा वा काशी है सदा तीरथनिवासी है
रहो सबसे उदासी है छुटेनहि आश मनकेरी ॥
करो व्रत नेम अरु दाना फिरो जंगलमें मस्ताना
जो प्रभुका रूपनहिजाना जलेनहिकर्मकीढेरी ॥
जपो हरिनाम सुखकारी झूठ दुनियांकी हैयारी
ब्रह्मानंद कालबलकारी करो मत भूल करदेरी ॥

(गजल ताल धमाल)

करोहरिकाभजनप्यारेउमरियाबीतजातीहै ॥टे॰
पूर्वशुभकर्म कर आया मनुजतन धरणिमें पाया
फिरेविषयोंमें भरमाया मौतनहियाद आतीहै ॥
बालापन खेलमें खोया जोबनमें कामबश होया
बुढापे खाटपर सोया आश मनको सताती है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

कुटुंब परिवार सुतदारा स्वपनसम देखजगसारा
मायानें जाल विस्तारा नही यह संग जाती है ॥
जोहरिकेचरणचितलावे सोभवसागरकोतरजावे
ब्रह्मानंद मोक्षपद पावे वेदवाणी सुनाती है ॥

(गजल ताल धमाल)

जतनकरआपनाप्यारेकर्मकीआशमतकीजे ॥टे.
मनुजकी देह गुणकारी अकलपशुवोंसे है न्यारी
ईश्वरकी है दयाभारी फेरक्या मांगकर लीजे ॥
आलससें मूढ दुख पावे कर्मका दोष बतलावे
न गुणको सीखने जावे रातदिन शोचमेंछीजे ॥
कर्मके आसरे सोवे नीच उसकी दशा होवे
लोकपरलोकसुखखोवे जतन बिनकौनपरतीजे ॥
करोविधिसे जतन भाई सफल सबकाम हो जाई
वो ब्रह्मानंद सुखपाई धीरज मनकोसदादीजे ॥

(गजल ताल धमाल)

लगाले प्रेम ईश्वरसे अगर तुं मोक्षच्हाताहै ॥ टेक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रचा उसने जगत् सारा करे वो पालना सब की
वहीमालिकहैदुनियांका पितामाता विधाताहै ॥
नही पातालके अंदर नही आकाशके ऊपर
सदा वो पास है तेरे कहां ढूंडनको जाताहै ॥
करो जप नेम तप भारी रहो जाकर सदा बनमें
बिनासतगुरुकीसंगतसे नहीवोदिलमेंआताहै ॥
पडेजो शरणमें उसकी छोडदुनियांकीलालचको
वो ब्रह्मानंद निश्चयसे परम सुखधाम पाताहै ॥

(गजल ताल धमाल)

दिलादे नाथअबदर्शनखडाहुंद्वारपेआकर ॥ टेक
सुना जग बीचमें तेरा जबीसे नाम भवतारण
फिरा मैं पूछता तेरी खबरको जाब जा जाकर ॥
नही लायक हुं मैं गरचे तेरे दीदार पानेका
क्षमाकर दोषको मेरे दया दिल बीचमें लाकर ॥
न मांगुं भोग दुनियांके न वांछा मोक्षकी केवल
तेरे दरबारमें मुझको बनाले चरणका चाकर ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

न जावुं द्वारका नगरी न मथुरा ढूंढने तुमको
वो ब्रह्मानंद घटघटमें दिखादे रूप करुणाकर ॥

(गजल ताल धमाल)

दिलादे भीखदर्शनकी प्रभुतेरा भिखारीहुं ॥ टेक
चलाकर दूर देशनसे तेरे दरवारमें आया
खडा हुं द्वारपे दिलमें तेरीआशाका धारी हुं ॥
फिरा संसारचक्रमें भटकता रातदिन विरथा
बिना दीदारके तेरे हमेशां मैं दुखारी हुं ॥
तुंही माता पिता बंधु तुंही मेरा सहायक है
तेरे दासोंके दासनका चरणका सेवकारी हुं ॥
भरा हुं पाप दोषनसें क्षमा कर भूलको मेरी
वो ब्रह्मानंद सुन विनती शरणमें मैं तुमारी हुं ॥

(गजल ताल धमाल)

पिलादे प्रेमकाप्याला प्रभुदर्शनापियासी हुं॥टेक
छोडकर भोग दुनियांके योगके पंथमें आई
तेरे दीदारके कारण फिरुं बन बन उदासी हुं ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न जानुं ध्यानका धरना न करनाज्ञानचरचाका
नही तपयोग हैं केवल तेरे चरणोंकी दासी हुं ॥
न देखो दोषको मेरे दयाकी फेर दृष्टीको
न दूजा आसरा मुझको तेरेदरकी निवासी हुं ॥
कोई वैकुंठ बतलावे कोई कैलासपर्वतको
वो ब्रह्मानंद घटघटमें रूपकी मैं बिलासी हुं ॥

(गजल ताल धमाल)

बिना सतसंगके मेरे नही दिलको करारीहै ॥टेक
जगतके बीचमें आया मनुजकी देहको पाकर
फसाया जाल मायाके याद प्रभुकी बिसारीहै ॥
सकल संसारके अंदर नही हितकार है कोई
नजर फैलायकरदेखा सबी मतलबकी यारीहै ॥
किये जप नेम तप पूजन फिरा तीरथके धामोंमें
न जाना रूप ईश्वरका उमर सारी गुजारी है ॥
फटे अज्ञानका पडदा कटें सब कर्मके बंधन
वो ब्रह्मानंद संतनका समागम मोक्षकारी है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

(गजल ताल धमाल)

मुझे क्या कामदुनियांसेविरहमें मैं दिवानाहुं ।।टे.
प्यारेकी खोजमेंनिशदिन फिरा जंगलपहाडोंमें
पता मुझको नही पाया बहुत दिनसेंहिरानाहुं ।।
किये जपनेम तप भारी उसेमिलनेकी लालचसें
मिलादर्शन नही मुझको गमीमें मैं समाना हुं ।।
किसीको योगमनभावे किसीको ज्ञानकीचरचा
प्रेमसागरके पानीमें हमेशां मैं डुबाना हुं ।।
बसी दिल बीचमें मेरे छवी दिलदारकी सुंदर
वो ब्रह्मानंद तनमनकी सुधीसारी भुलानाहुं ।।

(गजल ताल धमाल)

मुझे है काम ईश्वरसे जगत रूठेतो रूठनदे ।। टेक
कुटुंबपरिवार सुतदारा मालधन लाजलोकनकी
हरिके भजन करनेमें अगर छूटे तो छूटनदे ।।
बैठ संगतमें संतनकी करूं कल्याण मैं अपना
लोक दुनियांके भोगोंमें मौजलूटें तो लूटनदे ।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रभुके ध्यान करनेकी लगी दिलमें लगन मेरे
प्रीत संसार विषयोंसें अगर टूटे तो टूटनदे ॥
धरी सिर पापकी मटकी मेरे गुरुदेवने झटकी
वो ब्रह्मानंदने पटकी अगर फूटे तो फूटनदे ॥

(गजल ताल धमाल)

बतादे मोक्षका मारग गुरु मैं शरणमें तेरी ॥टेक
जगतके बीचमें नाना किसमके पंथ हैं भारे
सुनाते हैं कथा अपनी भटकते हो गई देरी ॥
कोई मूरतके पूजनको बतावें होम करनेको
कोई तीरथके दर्शनको फिराते हैं सदा फेरी ॥
कितावें धर्मचर्चाकी हजारों बांचकर देखी
मिटा संशय नही मनका अकल जंजालमें घेरी ॥
सकल दुनियांमें है पूरण सुना मैं रूप ईश्वरका
वो ब्रह्मानंद बिन देखे मिटेनही भरमना मेरी ॥

(गजल ताल धमाल)

समझकरदेखलेप्यारे मोक्षकापंथहै न्यारा ॥टेक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

यज्ञ तप दान करनेसे स्वर्गके धामको पावे
भोगकरभोगदेवनके जमीपर होय अवतारा ॥
कर्मकी डोरसे बांधा कबी नीचे कबी ऊपर
भटकता जीव जूनोंमें फिरे नहि होय निस्तारा॥
करे पूजा फिरे तीरथ अगनमें होम नित कीजे
बरत उपवास बहुतेरे नही हो ज्ञान उजियारा॥
बैठ कर संत संगतमें विचारे रूप ईश्वरका
वो ब्रह्मानंदको पावे मिटे भवजाल संसारा ॥

(गजल ताल धमाल)

दिखादे रूपईश्वरका मुझेगुरुदेवकरुणाकर ॥टेक
कोई वैकुंठके ऊपर कोई कैलासपर्वतमें
कोई सागरके अंदरमें बतावें शेषशय्यापर ॥
कोई दुर्गा गजाननको कहें जगदीश सूरजको
कोई सब सृष्टिका कर्ता चतुर्मुखदेव परमेश्वर ॥
धरें नित ध्यान योगीजन कोईनिर्गुणनिरंजनका
कोई मूरत पुजारीहैं कोई अगनीके हैं चाकर ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सकल संसारमें पूरण कहें वेदांतके वादी
वो ब्रह्मानंद संशयको मिटाकरतार भवसागर ॥

(गजल ताल धमाल)

सुनोदिलकोलगाप्यारेरूपईश्वरकाअविनाशी ॥टे
चलें जिसके सहारेसें सकल संसारके कारज
वो चेतन रूप ईश्वरका समझले विश्वपरकाशी ॥
वही वैकुंठके ऊपर वही कैलासपर्वतमें
वही सागरके अंदरमें सदा पातालकावासी ॥
उसीका तेज सूरजमें चांदतारोंमें बिजलीमें
वही सब देवतारूपी सदा निर्गुणनिराभासी ॥
बदनके बीचमें तेरे निरंतर जोत है उसकी
वो ब्रह्मानंद सुरतीको उलटकरदेखसुखराशी ॥

(गजल ताल धमाल)

दिखादेयारअबमुखडाघुंगटमेंक्योंछिपायाहै।टे॰
हुसन तेरेका है सानी न दूजा बीच दुनियांके
करुंक्यामैं सिफततेरी चांद मनमें लजायाहै ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

नजारा प्रेमका भरके लगायाहै जिगर मेरे
जुदाईका अबी पडदा बीचमें क्यों गिरायाहै ॥
तेरे मिलनेकी खातिरको हजारों लोक तरसावें
खुले किस्मत बडी जिसकी वही दीदारपायाहै ॥
नहीहै आशइसतनकी न धनकी लालसामुझको
वो ब्रह्मानंद दे दर्शन येही दिलमें समायाहै ॥

(गजल ताल धमाल)

भरोसा है मुझे तेरा तुंही मेरा सहायक है ॥टेक
सकल दुनियांके अंदरमें अखंडित राज्य है तेरा
चराचरविश्वकामालिक तुंहीसबगुणकेलायकहै
जगतमें जीव हैं जेते तेरे आधीनमें सारे
सबी नरदेवदैत्यनका तुंही सिरताजनायकहै ॥
धार विश्वासको दिलमें शरणमें जो पडे तेरी
करे सब कामनापूरण भोगअरुमोक्षदायकहै ॥
नही है शानका तेरी जगतमें दूसरा कोई
वो ब्रह्मानंद सबजगका तुंहीकारणविधायकहै ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(गजल ताल धमाल)

मुसाफिर जागते रहना नगरमेंचोरआतेहैं॥ टेक
संभालो माल अपनेको बांधकर धर सिरानेमें
जरासी नींद गफलतमें झपटगठडी उठातेहैं॥
कपटका है यहां चलना सबी व्यापार दिनराती
दिखाकर सूरतें सुंदर जालमें वो फसाते हैं॥
कबी किसकानहीकरना भरोसा इसजगादिलमें
लगाकर प्रीत मतलबसे फेर पलमें हटाते हैं॥
ठिकाना है नही कायम किसीका इससरायेमें
वो ब्रह्मानंद दिनदिनमें सबीचलचलकेजातेहैं॥

(गजल ताल धमाल)

फकीरीमेंमजाजिसकोअमीरीक्याविचारीहै। टे०
तजे सब काम दुनियांके फिकर घरबारके छूटे
सदा एकांतमें वासा याद प्रभुकी पियारीहै॥
नहीनौकर किसीजनके न दिलमेंलालसाधनकी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

सबूरी धारकर मनमें फिरे जंगल बिहारीहै ॥
मिला सत्संग संतनका चले नितज्ञानकीचरचा
पिछाना रूप अपनेको द्वैत सब दूर टारी है ॥
सबी जग जीवसें प्रीती बराबर मान अपमाना
वो ब्रह्मानंद पूरणमें मगन दिनरैन सारी है ॥

(गजल ताल धमाल)

नबजियाँवैद्यक्यादेखेमुझेदिलकीबिमारीहै ॥टेक
कबी कफरोग बतलावें कबी तासीर गरमीकी
जिगरका हाल तुं मेरा नही जाने अनारी है ॥
सनमकी मोहनी मूरत बसी दिल बीचमें मेरे
न मनमें चैनहै तनकी खबर सारी बिसारी है ॥
असर करती नही कोई दवाई कीमिया तेरी
बिना दीदार दारूके मिटे नहि बेकरारी है ॥
अगर दिलदार को मेरे मिलावे तुं कबी मुझसें
वो ब्रह्मानंद गुण तेरा करुं मैं यादगारी है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(गजल ताल धमाल)

संदेसा आगया यमका
चलनकी कर तियारी है ॥ टेक ॥
बाल सिरके हुये धोले सफेदी आंख पर छाई
श्रवणसे सुन पडे ऊंचा दांत हिलनाभी जारीहै १
कमर सब होगई कुबड़ी चले लकड़ी सहारेसे
गई सब देहकी ताकत लगी तनमें बिमारीहै ॥ २
छुटी सब प्रीत तिरियाकी पुत्र सब होगये न्यारे
बने सब मित्र मतलबके झूठ लोकनकी यारीहै ३
करो जगदीशका सुमरण भरोसा राखके मनमें
वो ब्रह्मानंद है तेरा एकही सहायकारी है ॥ ४ ॥

(गजल ताल ३)

हरिको सुमर पियारे उमरा विहा रही है
दिनदिनघडीघडीमें छिनछिनमेंजारहीहै ॥ टेक
दीपककी जोत जावे नदियोंका नीर धावे

१ दिलदार यार प्यारे गलियोंमें मेरी आजा । १४ भजनतक.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

जाती नजर न आवे चंचल समारही है ॥ १ ॥
पिछली भली कमाई मानुषकी देह पाई
प्रभु हेतना लगाई विरथा गमा रही है ॥ २ ॥
घर मालमीत नारी दुनियांकी मौज भारी
होवे पलकमें न्यारी दिलको फसारही है ॥३॥
क्या नींदमें पडा है सिर काल आखडा है
ब्रह्मानंद दिन चडा है रजनी बितारहीहै ॥४॥

(गजल ताल ३)

क्या भूलिया दिवाने दुनियांमें सार नाही
दिन चारका तमाशा आखिरकरार नाही ॥ टेक
राजा वजीर रानी पंडित सुबीर ज्ञानी
सब होगये हैं फानी जिनकाशुमार नाही ॥१॥
सूरज वा चांद तारे सागर पहाड भारे
होवेंगे नाश सारे तनका अधार नाही ॥ २ ॥
दुनियांसे होय न्यारा सतसंग कर पियारा
सुन ज्ञानका विचारा नरजन्म हार नाही ॥३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भवसिंधु नीर भारी हरिनाम पार तारी
ब्रह्मानंद मोक्षकारी दिलसे विसार नाही ॥४॥

(गजल ताल ३)

गाफिल तुं शोच मनमें हरिनाम क्यों विसारा
सुनता नही बजेहै सिर कालका नगारा ॥ टेक
जोबन भरी है नारी दिलको लगे पियारी
जब मौतकी तियारी तुझसे करे किनारा ॥१॥
घर माल धन खजाना संगमें कोई न जाना
क्यों देखके लुभाना सब झूठ है पसारा ॥२॥
सुंदर है देह तेरी होवे भसमकी ढेरी
पलकी लगे न देरी विरथा करे विचारा ॥ ३ ॥
मायाके जालमांही मूरख रहा फसाई
ब्रह्मानंद मोक्षपाई हरिचरणको सहारा ॥ ४ ॥

(गजल ताल ३)

ईश्वर में दास तेरो मुझको नही विसारो
भवसिंधुमें पडा हुं प्रभु वेग पार तारो ॥ टेक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

तुमरी अपार माया जिन खेल यह रचाया
मनको मेरे भुलाया नही ध्यान है तुमारो ॥१॥
मद लोभ मोह यारी दुश्मन बडे हैं भारी
करते हैं मारमारी प्रभु दीजिये सहारो ॥ २ ॥
अंजलिका नीर जावे उमरा सबी विहावे
फिरके गई न आवे पलका नही अधारो ॥३॥
सुत मात तात चेरा कोई नही है मेरा
ब्रह्मानंद बाल तेरा करके दया निहारो ॥ ४ ॥

(गजल ताल ३)

जगदीश ईश प्यारे सुन बेनंती हमारी
तुमरी शरणमें आया प्रभु लीजिये उबारी ॥ टेक
तुमने जगत बनाया सब साजसे सजाया
किसने न भेदपाया क्याशक्ति है तुमारी ॥१॥
हम जीव सुत तुमारा तुमहो पिता हमारा
सबका तुंही सहारा सुखरूप निर्विकारी ॥२॥
सब पाप दोष टारो हमरी मती सुधारो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुखशांतिको वधारो हमपे दयाविचारी ॥ ३ ॥
हमरे कसूर भारे दिलसे विसार सारे
ब्रह्मानंद दे हमारे भवबंधको निवारी ॥ ४ ॥

(गजल ताल ३)

जगदीश ईश प्यारे हिरदेमें मेरे आजा
तेरा स्वरूप पूरण मुझको प्रभु दिखा जा ॥ टेक
तुझ नाम निर्विकारी सब पाप दोषहारी
तुमरी छबी पियारी दिलमें मेरे बिठा जा ॥१॥
तुं है दयानिधाना सब विश्वमें समाना
नित वेदगुण बखाना दर्शन मुझेदिलाजा ॥२॥
गुणहीन दीन भारी प्रभु मैं शरण तुमारी
मुझे लीजिये उबारी भवजालसे छुडाजा ॥३॥
करके दया निहारो प्रभु दास हुं तुमारो
ब्रह्मानंद बंध टारो निजरूपमें मिला जा ॥४॥

(गजल ताल ३)

जगदीश मैं तुमारी कैसे करूं बडाई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

तेरी अपार माया किससे लखी न जाई ॥टेक
सब वेद ग्रंथ भारे मुनिराज सिद्ध सारे
करकर विचार हारे अज हुं न पार पाई ॥१॥
चौदें भुवन रचाकर सब साजसें सजाकर
फिर जीवगण बसाकर लीलाअजबबनाई ॥२॥
तुझ रूप है अनाशी चेतन आनंदराशी
सब विश्वमें प्रकाशी सब जां रहा समाई ॥ ३ ॥
तुझको जो जीव ध्यावे सब पाप दोष जावे
महानंद मोक्ष पावे भवबंधको मिटाई ॥ ४ ॥

(गजल ताल ३)

ईश्वर तेरी बडाई मुझसे कही न जावे
लीला अनंत भारी प्रभु कौन पार पावे ॥ टेक
गुणसिंधु तुं अपारा सब विश्वका अधारा
सबमें सबीसे न्यारा नित वेदवाक्य गावे ॥१॥
भूमी अकाश पानी नर देव दैत्य प्राणी
रचना तेरी सुहानी तुझ शक्तिको जनावे ॥२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जग पाप पुण्य दोई तुझसे छिपा न कोई
पावे है मोक्ष सोई तुझ शरणमें जो आवे ॥३॥
सब झूठ जग पसारा तुझ नाम सत्य प्यारा
ब्रह्मानंद बारबारा दिलसे नही भुलावे ॥ ४ ॥

(गजल ताल ३)

ईश्वर तुं है दयालु दुख दूर कर हमारा
तेरी शरणमें आया प्रभु दीजिये सहारा ॥ टेक
तुं है पिता वा माता सब बिश्वका विधाता,
तुझसा नही है दाता तेरा सबी पसारा ॥ १ ॥
भूमी आकाश तारे रवि चंद सिंधु भारे
तेरे हुकममें सारे सबका तुंही अधारा ॥ २ ॥
जगचक्रमें चडा हुं भवसिंधुमें पडा हुं
दरपे तेरे खडा हुं अब दे मुझे दिदारा ॥३॥
अपनी शरणमें लीजे सब दोष दूर कीजे
ब्रह्मानंद दान दीजे तुझ नाम निर्विकारा ॥४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

(गजल ताल ३)

ईश्वर तुं दीनबंधु हम दास हैं तुमारे
अपनी दया नजरसें सब दोष हर हमारे ॥ टेक
हम बाल हैं अजाने तुझ रूपको न जाने
पूरण सबी ठिकाने कहते हैं बेद सारे ॥ १ ॥
तुं है चरा अचरमें जंगल गिरी नगरमें
सब जीव नारनरमें तुमरे सबी सहारे ॥ २ ॥
भवसिंधु है अपारा बहता हुं बीच धारा
नही दूसरा सहारा प्रभु कीजिये किनारे ॥३॥
मायाके जालमांही हम तो रहे फसाई
ब्रह्मानंद ले छुडाई करुणानिधान प्यारे ॥ ४ ॥

(गजल ताल ३)

ईश्वरको जान बंदे मालिक तेरा वही है
करले तुं याद दिलसे हरजांमें वो सहीहै ॥ टेक
भूमी अगन पवनमें सागर पहाड बनमें
उसकी सबी भुवनमें छाया समारही है ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसने तुझे बनाया जग खेल है दिखाया
तुं क्यों फिरे भुलाया उमरा बिता रहीहै ॥२॥
विषयोंकी छोड आशा सब झूठ है तमाशा
दिनचारका दिलासा माया फसारही है ॥३॥
दुनियांसे दिल हटाले प्रभु ध्यानमें लगाले
ब्रह्मानंद मोक्ष पाले तनका पता नहीहै ॥४॥

(गजल ताल ३)

नजरोंसे देख प्यारे ईश्वर है पास तेरे
क्या ढूंढता है बनमें तनमें कबी न हेरे ॥ टेक
पूर्वको कोई जावे पश्चिम दिशाको धावे
प्रभुका न भेद पावे बिरथा फिरे है फेरे ॥१॥
भूतल आकाशमांही उसका मुकाम नाही
दुनियां रही भुलाई जाने नही है नेरे ॥ २ ॥
वो है सबी ठिकाने घटघटकी बात जाने
उसको जो दूर मानें वो मूढ हैं घनेरे ॥ ३ ॥
जगमें जगा न कोई ईश्वर जहां न होई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

ब्रह्मानंद जानसोई सुन सत्य वाक्य मेरे ॥४॥

(गजल ताल ३)

नजरोंसे देख प्यारे यह क्या दिखा रहा है
सब चीज सब जगामें ईश्वर समारहा है ॥ टेक
प्रभुनें जबी विचारा जगका हुया पसारा
चौदें भुवन नियारा मनसे बना रहा है ॥१॥
कहीं नर बना है नारी कहीं देव दैत्य भारी
पशु पक्षी रूपधारी बनबनके आरहा है ॥२॥
भूमी वही अगन है पानी वही पवन है
सूरज वही गगन है निर्गुण गुणा रहाहै ॥३॥
तज भेदभाव मनमें बनमें वही है तनमें
ब्रह्मानंद ज्यों स्वपनमें रचना रचारहाहै ॥४॥

(गजल ताल ३)

नजरोंसे देख प्यारे क्या रूप है तुमारा
अपनेको भूल तनमें बाहिर फिरे गंवारा ॥टेक
करमें कंगण छिपावे ढूंडनको दूर जावे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फिरके समीप पावे मनमें करो विचारा ॥१॥
मृगनाभिमें सुगंधी सूंघे वो घास गंदी
दुनियां सबी है अंधी समझे नही इशारा ॥२॥
जिम दूधके मथनसे मिलता है घी जतनसे
तिम ध्यानकी लगनसे परब्रह्म ले निहारा॥३॥
जड जान देह सारी क्षणभंग दुःखकारी
ब्रह्मानंद निर्विकारी चेतन स्वरूप न्यारा ॥४॥

(गजल ताल ३)

ब्रजराज आज प्यारे दर्शन दियो मुरारी
रस प्रेमका लगाके हमरी सुधी बिसारी ॥ टेक
मूरत तेरी कन्हाई नैननमें है समाई
हमसे सहा न जाई तुमरा बियोग भारी ॥१॥
तेरे दरसकी प्यासी बनबन फिरें उदासी
चरणोंकी जानदासी मिलजा हमे बिहारी ॥२॥
बंसीकी धुन सुनादे फिर रासको रचादे
मुखचंदको दिखादे सुन बेनती हमारी ॥ ३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

घर माल जान प्यारी तुझपे सबी है वारी
ब्रह्मानंद मनमें धारी मोहन छबी तुमारी ॥४॥

(गजल ताल ३)

ब्रजराज आज प्यारे गलियोंमें मेरी आना
तेरी छबी मनोहर मुझको हरी दिखाना ॥ टेक
सिर मोरमुकुट राजे बनमाल गल बिराजे
नूपुर चरणमें बाजे करमें कंगण सुहाना ॥१॥
कुंडल श्रवण लगाकर बंसी अधर बजाकर
तन पीतपट धराकर कटिमेखला सजाना ॥२॥
मेरी अर्जको प्यारे सुन नंदके दुलारे
इकबार तो हमारे तनकी तपत बुझाना ॥३॥
तेरे दरसकी प्यासा अब ना करो निराशा
ब्रह्मानंद मेरी आशा करके दया पुराना ॥४॥

(गजल ताल ३)

क्या सोरहा मुसाफिर बीती है रैन सारी
अब जागके चलनकी करले सबी तियारी ॥टेक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तुझको है दूर जाना नहि पासमें समाना
आगे नही ठिकाना होवे बडी खुवारी ॥ १ ॥
पूंजी सबी गमाई कुछ ना करी कमाई
क्या ले वतनमें जाई करजा कियाहै भारी ॥२॥
वशमें ठगोंके आया दृढ जालमें फसाया
परदेश दिल रमाया घरकी सुधी बिसारी ॥३॥
उठ चल न देर कीजे संगमें समान लीजे
ब्रह्मानंद कालछीजे मतनींदकर पियारी ॥४॥

(गजल ताल ३)

मिलजा मुझे पियारे क्यों देरियां लगाई
जलवा दिखाकेअपना किसजांगयेछिपाई ॥ टेक
खाना नही है पानी दिलको बडी हैरानी
फिरतीहुं मैं दिवानी दिन रैन चैन नाही ॥ १ ॥
कर प्रेमका इशारा दिल लेलिया हमारा
अबक्यों मुझे विसारा सूरत नही दिखाई ॥२॥
बिरहेकी आग भारी तनमन दिया है जारी
तुमरी छबी पियारी मनमें रही समाई ॥ ३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

कर माफ भूल मेरी दासनकी दास तेरी
ब्रह्मानंद कर न देरी चरणोंमें ले लगाई ॥४॥

(गजल ताल ३)

दिल ले लिया है मेरो वो नंदके दुलारे
पनियाभरन गईथी जमुनानदीकिनारे ॥ टेक
सिरपे मुकुट जडाथा कानों कुंडल पडाथा
पनघटनिकट खडाथा कर प्रेमके इशारे ॥१॥
गलबीच फूलमाला लोचन परम रसाला
कटिमेखला विशाला तन पीतबसन धारे ॥२॥
बंसी अधर लगाई मधुरी धुनी सुनाई
तनकी खबर भुलाई घर काज सब बिसारे ॥३॥
सुंदर छबी मोहनकी दिलमें बसी सोहनकी
ब्रह्मानंद मेरे मनकी आशा पुरानहारे ॥ ४ ॥

(गजल ताल ३)

सुनरी सखी मोहनकी वो बंसरी पियारी
जमुनाके तीर बनमें गायन करे मुरारी ॥ टेक
जबसे धुनी सुनाई तनकी खबर भुलाई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मनमें बसे कन्हाई नहि चैन रैन सारी ॥ १ ॥
मीठी स्वरोंसे गावे दिलको मेरे सुहावे
कोई आनके मिलावे मोहे सांवरो विहारी ॥२॥
तज काज लाज तनमें गोपी गई हैं बनमें
हम रहगई भवनमें किस्मत बुरी हमारी ॥ ३ ॥
मेरे नैनोंका तारा बंसी बजानेहारा
ब्रह्मानंद देदिदारा दासी हुं मैं तुमारी ॥ ४ ॥

(गजल ताल ३)

मन क्या भुला रहा है दुनियांकी मौजमांही
करके विचार देखो कछु सार बस्तु नाहीं ॥ टेक
मायाका जाल भारी पुतली बनी है नारी
मत भूल देख प्यारी सबको रही फसाई ॥१॥
जोवन बहार तनकी महमान चार दिनकी
जिम रोशनी स्वपनकी सब बेग बीतजाई ॥२॥
धनमाल मीत प्यारे कोई संग ना सिधारे
जब काल आय मारे सबसें करे जुदाई ॥ ३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

हरिनामको सुमरले कुछ कामनेक करले
ब्रह्मानंद ध्यान धरले ईश्वर सदा सहाई ॥४॥

(गजल ताल ३)

शंकर तेरी जटामें भाती है गंगधारा
कालीघटाके अंदर जिम दामिनी उजारा ॥ टेक
गल मुंडमाल राजे शशी भालमें विराजे
डमरु निनाद बाजे करमें त्रिशूल भारा ॥ १ ॥
दृग तीन तेजराशी कटिबंध नागफांसी
गिरिजा है संग दासी सब विश्वके अधारा ॥२॥
मृगचर्म वसनधारी वृषराजपे सवारी
निजभक्तदुःखहारी कैलासमें विहारा ॥ ३ ॥
शिवनाम जो उचारे सब पाप दोष टारे
ब्रह्मानंद ना विसारे भवसिंधु पार तारा ॥४॥

(गजल कवाली)

नाम हरीका लीना नहीं तैने
मूरख काम निकाम किया ॥ टेक ॥

---

१ प्रीतका वैदा करके सनम तैने प्रीतनिभाना छोड दिया
१८ भजनतक। कोई ऐसी सखी चातुर न मिली मुझे पीके०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बालपणो हस खेलनमें अरु जोबन कामिनी-
संग गया । बूढे हूये तन छीन भया तब
रोगने आय मुकाम किया ॥ १ ॥
तेरे लिये परमेश्वरने सब वस्तु रची बहु
भांतनकी । याद किया न कबी उसको
तैंने खायके माल हराम किया ॥ २ ॥
मानुष जन्म मिला तुझको यह मोक्ष दुवार
खुला जगमें । घर बारके कार विहारणमें
तैंने भूलके नाश तमाम किया ॥ ३ ॥
काल बिताय चला सबही अब तो कर सोच
जरा मनमें । ब्रह्मानंद बिना प्रभुके सुमरे
तैंने नाम तेरा बदनाम किया ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

नाम लिया हरिका जिसने
तिन औरका नाम लिया न लिया ॥ टेक ॥
पशु पक्षि सबी जग जीवनको जिसने अपने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

सम जान सदा। सबका परिपालन नित्य किया
तिन विप्रन दान दिया न दिया ॥ १ ॥
जिनके घरमें प्रभुकी चर्चा नित होवत है
दिनरात सदा। सतसंग कथामृत पान किया
तिन तीरथनीर पिया न पिया ॥ २ ॥
जिन काम किये परमारथके तनसें मनसें
धनसें करके। जग अंदर कीरत छाय रही
दिन चार विशेष जिया न जिया ॥ ३ ॥
गुरुके उपदेश समागमसे जिसने अपने
घट भीतरमें। ब्रह्मानंद स्वरूपको जान लिया
तिन साधन योग किया न किया ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

दीनदयाल दया करके
भवसागरसे कर पार मुझे ॥ टेक ॥
नीर अपार न तीर दिसे किम धीर धरुं
अब मैं मनमें। मेरी नाव डुबाय रही मगमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शरणागत जानके तार मुझे ॥ १ ॥
ग्राह बसें बलवान बडे जल घेर पडें
बहु मारगमें । बाज रही बिपरीत हवा
तुंही एक बचावनहार मुझे ॥ २ ॥
छूट गया सब साथ मेरा कुछ हाथमें जोर
रहा भी नही । अब नाथ न देर लगाय जरा
निज बांह पसार उबार मुझे ॥ ३ ॥
तेरा नाम जहाज बडा जगमें सब वेद पुराण
बतावत हैं । ब्रह्मानंद जपुं दिन रात सदा
प्रभु कीजिये पार किनार मुझे ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

ध्यानका वादा करके सजन तैंने
ध्यान लगाना छोड दिया ॥ टेक ॥
शीश तले पग ऊपर थे जब मातके पेटमें
लेट रहा । तब ईश्वरसे इकरार किया
तैनें भूलके वो सब तोड दिया ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

देख लुभाय गया जगकी रचना सब सुंदर साज बनी। उस सर्जन हारकी सार नही तैने भोगनमें मन जोड दिया ॥ २ ॥
घर काजन बीच फसाय रहा दिन रात न मौतकी याद रही। उमरा सब बीतत जाय चली तैने क्यों प्रभुसें मुख मोड दिया ॥ ३ ॥
बारहि बार फिरा जग भीतर जीवनकी सब जूननमें। ब्रह्मानंद भजा भगवंत नही भवसागरमें सिर बोड दिया ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

विश्वपति जगदीश्वर तुं शरणागत पालन कारण है ॥ टेक ॥
तेरी रची सब है रचना गिरि सागर सूरज चांद मही। सब जीव तेरा परिवार बसा तुंही एक चराचरधारण है ॥ १ ॥
सब भीतर बाहिरमें जगमें परिपूरण तुं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुखरूप सदा । नहि पामरलोक पिछान
सकें तेरा नाम सबी दुःखहारण है ॥ २ ॥
करुणानिधि दीनदयाल सदा प्रतिपाल
करे सब जीवनकी । तुझ ध्यान धरे नर
जो मनमें पलमें भवसागर तारण है ॥ ३ ॥
मुझ दोष अपार निहार नही निजदास विचार
करो करुणा । ब्रह्मानंद पडा तुझ चरणनमें
प्रभु कीजिये बंध निवारण है ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

हेरी सखी बतलाय मुझे
पियांके मन भावनकी बतियां ॥ टेक ॥
गुणहीन मलीन शरीर मेरा कछु हार सिंगार
किया भी नही । नहि जानुं मैं प्रेमकी बात
कोई मेरी कांपत है डरसे छतियां ॥ १ ॥
पिया अंदर मेहल विराज रहे घरकाजनमें
अटकाय रही । नहि एक घडी पल संग

१ परमात्मा. २ हृदयकमल.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

किया बिरथा सब बीत गई रतियां[1] ॥ २ ॥
पिया सोवत ऊंची अटारिनमें[2] जहां जीव
परिंदकी गंम नही । किस मारग होयके जाय
मिलुं किसभांत बनाय लिखुं पतिया ॥ ३ ॥
निज स्वारथका संसार सबी किससे अब
प्रीत करूं मनमें । ब्रह्मानंद पिया हितकार
मेरा जग भीतर और नही गतियां ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

हेरी सखी चल ले चल तुं
अब देश पियाका दिखाय मुझे ॥ टेक ॥
ढूंडत ढूंडत ढूंड फिरी सब जंगल झाड
पहाडनमें । कोई ऐसा न राह नजीर मिला
पियाके ढिग देत पुगाय मुझे ॥ १ ॥
उस देसपे मैं बलिहार गई जहां मोर पिया
नित वास करे । सिर धूल धरूं उसके पगकी

१ उमरा. २ ब्रह्मरंध्र.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जोई जायके आज मिलाय मुझे ॥ २ ॥
मछली बिन नीर न धीर धरे जिम चातक
मेघ निहारत है । अब तो पिया दर्शन दे
अपना किस काज रहे तरसाय मुझे ॥ ३ ॥
पियाकी छबी सुंदर देख सखी जहां सूरज
चांद लजाय रहे । ब्रह्मानंद मैं दामन गीर
तेरी पिया चरणनमें लिपटाय मुझे ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

दे दे पिया दर्शन तो मुझे
मैं तो शरण तुमारी आय पडी ॥ टेक ॥
मात पिता घर बार तजा तेरे काज मेरी सब
लाज गई । मैं तो छोडके आश सबी जगकी
तेरे द्वारपे ध्यान लगाय खडी ॥ १ ॥
सब जोबनके दिन बीत गये अब मैं मनमें
पछताय रही । करुणा कर अंग लगाय
मुझे तेरे संगबिना नही चैन घडी ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

मेरे जसी अनेक खडी दर पे तेरे दर्शनको
तरसाय रही । तेरी जानके दासन दास
मुझे मेरी पूरण कीजिये आश बडी ॥ ३ ॥
कर माफ कसूर मेरे सबही अब देख दयाकी
नजरसे मुझे । ब्रह्मानंद तेरी सुख धाम छबी
प्रभु नित्य मेरे दिल बीच जडी ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

आज सखी सतसंगतमें
मिलके हरिके गुण गान करो ॥ टेक ॥
कलिमें हरिनामसमान बडो कोई और
उपाय नही जगमें । सब पाप निवारण
कारण है भवतारण है मनमें सुमरो ॥ १ ॥
बिन संतसमागम ज्ञान नही बिन ज्ञान न
मोक्ष मिले कबही । कर ले तप तीरथ दान
घने चहुं धाम न बीच भले बिचरो ॥ २ ॥
विश्वचराचरमें परिपूरण चेतन ब्रह्म स्वरूप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सदा । घट भीतर जान पिछान सही मन
बीच निरंतर ध्यान धरो ॥ ३ ॥
सब संशय दूर करावत है निजरूप लखावत
है तनमें । ब्रह्मानंद सुनो गुरु ज्ञान सदा
भवसागर दुस्तर पार तरो ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

ऐसी करी गुरु देव दया मेरा
मोहका बंधन तोड दिया ॥ टेक ॥
दौड रहा दिन रात सदा जगके सब कार
विहारणमें । स्वप्नें सम विश्व दिखाय मुझे
मेरे चंचल चित्तको मोड दिया ॥ १ ॥
कोई शेष गणेश महेश रटे कोई पूजत पीर
पगंबरको । सब पंथ गरंथ छुडा करके
इक ईश्वरमें मन जोड दिया ॥ २ ॥
कोई ढूंडत है मथुरा नगरी कोई जाय
बनारस वास करे । जब व्यापक रूप पिछान
लिया सब भर्मका भंडा फोड दिया ॥ ३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

कौन करूं गुरु देवकी भेट न वस्तु दिसे तिहुं लोकनमें । ब्रह्मानंद समान न होय कबी धन माणिक लाख करोड दिया ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

जाग मुसाफिर देख जरा
वो तो कूचकी नौवत बाज रही ॥ टेक ॥
सोवत सोवत बीत गई सब रात तुझे परभात भई । सब संगके साथी तो लाद गये तेरे नैनन नींद विराज रही ॥ १ ॥
कोई आज गया कोई काल गया कोई जावन काज तियार खडा । नहि कायम कोई मुकाम यहां चिरकालसे येहि रिवाज रही ॥ २ ॥
इस देशमें चोर चकोर घने निज मालकी राख संभाल सदा । बहुते हुशियार लुटाय गये नहि कोईकी साबत लाज रही ॥ ३ ॥
अब तो तज आलसको मनसे कर संग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समान तियार सबी । ब्रह्मानंद न देर लगाय
जरा बिजली सिर ऊपर गाज रही ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

मान कही मन मूरख तुं
अब तो भज नाम निरंजनका ॥ टेक ॥
जून अनेकनमें फिरते फिरते यह मानुष
देह मिली । कर ले परमारथ काम कछु
तज लालच तुं धन संचनका ॥ १ ॥
पेटहिमें जब पेट भरा अब पेटके काज
कहां भटके । सब विश्वको नित्य भरे प्रभु
जो सोई पालनहार तेरे तनका ॥ २ ॥
मात पिता सुत दार सहोदर माल मकान
समान सबी । कोई वस्तु नही थिर है जगमें
विरथा ममता मद जोबनका ॥ ३ ॥
काल कराल फिरे सिरपे जिम बाज चिडी
पर धावत है । ब्रह्मानंद विचार निहार जरा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

कर ध्यान सदा भयभंजनका ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

देखो सखी विंदराबनमें
वो तो वंसरी शाम बजावत है ॥ टेक ॥
धर्मके पालन कारणसे हरिने ब्रजमें
अवतार लिया । मिल ग्वालन बालनके
संगमें जमुनातट धेनु चरावत है ॥ १ ॥
सिर मोरके पांखकी टोप धरे मकराकृत
कुंडल काननमें । गलमें बनमाल बिराज रही
कटिमें पट पीत सुहावत है ॥ २ ॥
बन कुंजनमें हरि रास रची सखियां संगमें
मिल गान करे । भाग्य बडे ब्रज गोपिनके
हरि हाथ मिलाय नचावत है ॥ ३ ॥
मधुरी मुरलीधुनको सुनके सब देवसमाज
जुडे नभमें । ब्रह्मानंद निहार छबी प्रभुकी
अपने मनमें सुख पावत है ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(गजल कवाली)

प्रीतकी रीत न जाने सखी वो तो
नंदको बालक सांवरिया ॥ टेक ॥

जमुनातट जायके गाय चराय बजायके
बंसरी गावत है । सखियां संग केलि कलोल
करे दधि लूटत खेलत फागरिया ॥ १ ॥
संग लेकर ग्वालन बाल घने मग रोकत
है ब्रजनारिनको । तनसे चुनरी पटको
झटके सिरसे पटके जल गागरिया ॥ २ ॥
बिंदराबनकी घन कुंजनमें मिल गोपिनके
संग रास करे । पगनूपुरकी धुन बाज रही
नित नाचत है नट नागरिया ॥ ३ ॥
निज भक्तनके हितकार प्रभु ब्रज मंडल
बीच विहार करे । ब्रह्मानंद न रूपको जान
सकें बहु बात बनावत बावरिया ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

(गजल कवाली)

पूरण ब्रह्म सनातन तुं महादेव सदा-
शिव शंकर है ॥ टेक ॥
अंग विभूत विराज रही नित संग बसे
गिरिराजसुता । सिर ऊपर गंग तरंग चले
गल बीच भुजंग विषंकर है ॥ १ ॥
चंद्रकला शुभ मस्तकमें दृग तीन मनोहर
जूट जटा । कटिमें मृगचर्म सुहाय रहा
कर बीच त्रिशूल भयंकर है ॥ २ ॥
कैलासके बीच निवास करे गणयूथ निरंतर
साथ रहें । मुनि ध्यान धरें मन बीच सदा
सुरवृंद सबी पदकिंकर है ॥ ३ ॥
गुणखान विमोक्ष निधान सदा शरणागत
जान दया करके । ब्रह्मानंद करो प्रभु दान
मुझे तेरा नाम अपार सुखाकर है ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(गजल कवाली)

प्रीतम प्रीत लगी तुझसैं न भुलाना
मुझे मिल जाना सही ॥ टेक ॥
तेरे लिये सब देश दिगंतर छान विरान
हिरान हुया । अब जानके दासन दास मुझे
तेरा खास मकान बताना सही ॥ १ ॥
घरके सब काम तमाम तजे विन दाम
गुलाम तेरे दरका । बिन तेरे मुझे परतीत
नही अब रीतसैं प्रीत निभाना सही ॥ २ ॥
तेरी सूरत मोहनी मूरत है क्या जरूरत है
अब देर करी । तेरे दर्शनकी दिल प्यास
बडी मेरी आशको आज पुराना सही ॥ ३ ॥
तेरे द्वारपे अर्ज गुजार खडा इकबार निहार
जरा मुझको । ब्रह्मानंद सदा सुखकंद तेरा
मुखचंद मुझे दिखलाना सही ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

(गजल कवाली)

आशक मस्त फकीर हुया जब क्या
दिलगीरपणा मनमें ॥ टेक ॥
कोई पूजत फूलन मालनसे सब अंग सुगंध
लगावत हैं। कोई लोक निरादर कार करें
मग धूल उडावत हैं तनमें ॥ १ ॥
कोई काल मनोहर थालनमें रसदायक
मिष्ट पदारथ हैं। किस रोज जला सुकडा
टुकडा मिल जाय चबीना भोजनमें ॥ २ ॥
कबी ओढत शाल दुशालनको सुख सोवत
महल अटारिनमें। कबी चीर फटी तनकी
गुदड़ी नित लेटत जंगल वा बनमें ॥ ३ ॥
सब द्वैतके भावको दूर किया परब्रह्म सबी
घट पूरण है। ब्रह्मानंद न वैर न प्रीत कहीं
जगमें बिचरे सम दर्शनमें ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(गजल कवाली)

पूरण प्रेम लगा दिलमें जब नेमका
बंधन छूट गया ॥ टेक ॥
कोई पंडित लोक बतावत हैं समझावत हैं
जग रीतनको । जब प्रीतमसें दृढ प्रीत भई
सब रीतका बंधन टूट गया ॥ १ ॥
कोई तीरथ पर्सन जावत हैं कोई मंदिरमें
नित दर्शनको । घट भीतर देव दिदार हुया
तब बाहिरसें मन रूठ गया ॥ २ ॥
कोई जीव कहें कोई ईश कहें कोई गावत
ब्रह्म निरंजनको । जब अंदर बाहिर एक
हुया सब द्वैतका पडदा फूट गया ॥ ३ ॥
सोई एक अनेक स्वरूप बना परिपूरण है
जलमें थलमें । ब्रह्मानंद करी गुरुदेव दया
भवसागरका भय ऊठ गया ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

कामिल काम कमाल किया तैने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

ख्यालसैं खेल बनाय दिया ॥ टेक ॥
नहि कागज़ कलम जरूरत है विन रंग बनी
सब मूरत है । इन मूरतमें इक सूरत है
तैने एक अनेक दिखाय दिया ॥ १ ॥
जल बूंदको लेकर देह रची सुर दानव मानव
जीव जुदा । सबके घट अंदर मंदिरमें
तैने आप मुकाम जमाय दिया ॥ २ ॥
कोई पारनवार अधार विना सब विश्व
चराचर धार रहा । विन भूमि मनोहर महल
रचा विन बीजके बाग लगाय दिया ॥ ३ ॥
सब लोकनके नित संग रहे फिर आप असंग
स्वरूप सदा । ब्रह्मानंद आनंद भयो मनमें
गुरुदेव अलेख लखाय दिया ॥ ४ ॥

(राग प्रभाती ताल दादरा)

जैयजय जगदीश ईश शरण मैं तुमारी ॥ टेक ॥

---

१ ठुमक चलत रामचंद्र बाजत पाजनिया ८ तक.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्रह्मा वेद बचन रटत शंभु सदा ध्यान धरत
सुर नर मुनि गान करत महिमा अति भारी १
स्वर्ग भू पताललोक चंद्र सूर यथायोग
नानाविध पानभोग रचिया नरनारी ॥ २ ॥
माया तुमरी दुरंत मोहे सब जीवजंत
जतन करत साधुसंत उतरे कोई पारी ॥ ३ ॥
तुमरी जो शरण आय जनम मरण छूट जाय
ब्रह्मानंद धाम पाय निर्मल सुखकारी ॥ ४ ॥

(प्रभाती ताल दादरा)

भजरे नर रामचरण निश दिन सुखदाई ॥ टेक
नरतन यह बारबार जगमें नहि मिलनहार
कोई दिनकी बहार पीछे पछताई ॥ १ ॥
नारी सुत मात तात चार दिवसकी जमात
कोई नही संग जात नरकमें सहाई ॥ २ ॥
धनका क्या करत मान पंकजजललवसमान
करले कुछ करसें दान बहत नदी जाई ॥ ३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

बारबार रामनाम भजले तज सकल काम
ब्रह्मानंद परम धाम अंतकाल पाई ॥ ४ ॥

(प्रभाती ताल दादरा)

राम सुमर राम सुमर राम सुमर भाई ॥ टेक
राजा रानी वजीर पंडित ज्ञानी सुधीर
बडे बडे शूर वीर धरणिमें समाई ॥ १ ॥
ब्रह्मादिक देववृन्द तारागण सूर चंद
सागर पर्वत बुलंद सबन काल खाई ॥ २ ॥
सेना गढ राज पाट वाजी गजराज ठाठ
नारी घर बार हाट छूटें पलमांही ॥ ३ ॥
झूठे सब कारबार जगमें हरिनाम सार
ब्रह्मानंद बारबार जपले मनलाई ॥ ४ ॥

(प्रभाती ताल दादरा)

आज सखी शाम सुंदर बंसिया बजावे ॥ टेक
मोरमुकुट सिर चडाय पगमें नूपुर सुहाय
बंसी मुखमें लगाय मधुर मधुर गावे ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जमुनाको रुकत वार पक्षीगण मौन धार
धेनु मुख घास डार धुनिमें मन लावे ॥ २ ॥
ब्रह्मा सुरराज शेष शंकर गौरी गणेश
धार धार मनुजवेष बृंदावन आवे ॥ ३ ॥
बंसीधुन सुन अपार भूले मुनि मन बिचार
ब्रह्मानंद गोपनार तनमन बिसरावे ॥ ४ ॥

(प्रभाती ताल दादरा)

हेरी सखि आज मुझे शामसे मिलायदे ॥ टेक
मोरमुकुट शीश धरे मकर कुंडल कान पडे
पीतबसन मंद हसन मधुर मधुर गाय दे ॥१॥
जमुनाको बिमल नीर नंदलाल खडो तीर
बंसरीकी टेर एक बेर तो सुनाय दे ॥ २ ॥
गहन बिपिन लता पुंज चांद चांदनी निकुंज
गोप नार संग रंग रास तो रचाय दे ॥ ३ ॥
नाच करत मंद मंद गगन खडे देववृंद
ब्रह्मानंद चंदवदन नैनसे दिखाय दे ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

(प्रभाती ताल दादरा)

वृंदावन कुंजभवन नाचत गिरधारी ॥ टेक
धरधरधर मुरलिअधर भरभर स्वर मधुरमधुर
करकर नटवर स्वरूप सुंदर सुखकारी ॥ १ ॥
घनघनघन बजत ताल ठुमठुमठुम चलत चाल
चरणन छनछनछनछन नूपुरधुन प्यारी ॥२॥
घिरघिरघिर करत गान फिरफिरफिर देत तान
मिलमिलमिल रचत रास संग गोपनारी ॥३॥
वदवदवदवदनचंद हसहसहसहसनमंद
ब्रह्मानंदनंदनंदनंदन बलिहारी ॥ ४ ॥

(प्रभाती ताल दादरा)

देख सखी कृष्णचंद्रकी छबी सुहावनी ॥ टेक
सिरपे मुकुट अलक भाल श्रवणकुंडल हगरसाल
गलमें माल भुज विशाल पीतपट धरावनी १
बाजुबंद कंगण हाथ कमरमणी तिलक माथ
बंसी अधर मधुर मधुर सरस राग गावनी २

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चंदबदन मंद हास सखियन संग करत रास
पगमें छनन छनन नूपुरोंकी धुन बजावनी ३
सजल मेघ शाम रंग संग राधिका उमंग
ब्रह्मानंद श्रीमुकुंद चरणरति लगावनी ॥ ४ ॥

(प्रभाती ताल दादरा)

आज मेरी लाज हरि आयके बचाईये ॥ टेक
कौरवोंकी सभा बीच जुडे सबी लोक नीच
खींच रहे केश मेरे बेगसें छुडाईये ॥ १ ॥
पति हमारे शूर बीर धर्महेत धरे धीर
चीर हरण करत दुष्ट देर ना लगाईये ॥ २ ॥
भीष्म द्रोण कर्ण वर्म[1] लोभहेत तजा धर्म
कर्म बुरा करें नाथ हाथ दे रखाईये ॥ ३ ॥
सकल जगतके अधार प्रभु मेरी सुन पुकार
ब्रह्मानंद हो सवार गरुडपे सिधाईये ॥ ४ ॥

---

१ कृतवर्मा.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

(शाम कल्याण ताल दादरा)

आज मेरी बेंनती दीनबंधु सुन जरा ॥ टेक
सकल जगतके अधार निर्गुण नित निर्विकार
जनममरण तापहार परमधामसुखकरा ॥ १ ॥
चौदें भुवनमें समान पूरण सब गुणनिधान
ऋषिमुनिगणधरतध्यानसकलदुःखभयहरा ॥ २
महिमा तुमरी अपार बेद रटत बार बार
पावत नही परमपार कोई सुरासुरनरा ॥ ३ ॥
नाथ मेरी अरज मान दीजे अपनी भक्तिदान
ब्रह्मानंद तेरो जान चरणकमलकिंकरा ॥ ४ ॥

(शाम कल्याण ताल दादरा)

आज मेरी बेनती दीनबंधु मान ले ॥ टेक
भाई बंधु मीत नार चार दिवसका सहार
तुमरे चरणका अधार एक मुझे जान ले ॥१॥
कोई जपत श्रीगणेश कोई रटत है महेश
मैं तो तेरो हुं हमेश दास निजपिछान ले ॥२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मोह नदी जल अपार डूब रहा बीच धार
अब तो दयाकर निहार बांहपकड तार ले ।। ३ ।।
सकल पाप दोष हरण परम धाम मोक्ष करण
ब्रह्मानंद अपनी शरणमें दया निधान ले ।।४।।

(शाम कल्याण ताल दादरा)

आज मुझे आयके नाथ दरस दीजिये ।। टेक
शीशमुकुट तिलकभाल श्रवणकुंडल दृगविशाल
कंठमें बेजंती माल नयन सफल कीजिये ।।१।।
सजल मेघ शाम रंग पीत बसन लसित अंग
रमा बसत सदा संग शरण अपनी लीजिये २
शंख चक्र गदा धार कमर मेखला बिहार
गरुड पीठपे सवार दास जान रीझिये ।। ३ ।।
चंदवदन मंद हास शेष नाग तन निवास
ब्रह्मानंद मेरी आश दया कर पुरीजिये ।। ४ ।।

(शाम कल्याण ताल दादरा)

राम नाम सुमर ले उमर बीत जा रही ।। टेक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

अंजली जल न थिर रहाय बूंदबूंद टपक जाय
पलक पलकमें बिहाय चंचला समा रही ॥१॥
अब तो चेत रे गवार सिरपे काल है सवार
झूठ जगत कारबारमें सबी गमा रही ॥ २ ॥
धन शरीर महल माल बिछड जात अंतकाल
माया मोह विषयजाल बीच दृढ फसारही ॥३॥
तीरथ बरत पुण्यदान तुलें न नामके समान
ब्रह्मानंद बचन मान क्यों सदा भुलारही ॥४॥

(शाम कल्याण ताल दादरा)

आज सखी कुंजनमें रास रचत है हरी ॥ टेक
जमुनासरित बिमल नीर हरितघासपुलिन तीर
चलत मधुर गतिसमीर धीर परम सुखकरी १
सिरपे मोरमुकुट धार गलमें पहन फूलहार
मुरली अधर धुन बिहार चरण युगल नूपुरी २
मिलके ग्वाल बाल संग करत सरस नाच रंग
गोपनार मन उमंग परम प्रेम रस भरी ॥३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बजत घन मृदंग ताल गान करत नंदलाल
ब्रह्मानंद प्रणतपाल ललितछबी मनोहरी ॥४॥

(राग शाम कल्याण)

दीनबंधु दयाकरी दीजो दरस मोहे हरी ॥ टेक
शीश रतन मुकुटधार श्रवण कुंडल मकरकार
अखियां परम मोदभरी ॥ १ ॥ दीजो०
तनपे सुंदर पीतबसन मुखसरोज मंद हसन
गलमें विमल माल धरी ॥ २ ॥ दीजो०
चतुर भुजा श्यामवरण शंख चक्र गदा धरण
कमर मोतिन हार लरी ॥ ३ ॥ दीजो०
चरण नूपुर धुन बिहार मोहनी मूरत निर्विकार
ब्रह्मानंद मनोहरी ॥ ४ ॥ दीजो०

(श्याम कल्याण)

अबतो नाथदयाकरो मैंतो तेरी शरणपडो ॥ टेक
भवसमुद्र जल अपार डूब रहा बीचधार

१ आवो नगर मोरे हरी । मैं तो तेरी शरण पडी ५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

बाहु पकड पार तरो ॥ १ ॥ मैं तो०
काम क्रोध लोभ मोह रात दिवस करत द्रोह
प्रबल वैरि देख डरो ॥ २ ॥ मैं तो०
प्रभु मेरी सुन पुकार विनती करुं बारबार
जनम मरण दुःख हरो ॥ ३ ॥ मैं तो०
मागुं एक नाम दान दीजिये करुणानिधान
ब्रह्मानंद मनमें धरो ॥ ४ ॥ मैं तो०

(शाम कल्याण)

मान मान मेरी कही उमर तेरी बीतरही ॥ टेक
मनुज देह फिर न आय पलक पलकमें बिहाय
जैसे नदिया जात बही ॥ १ ॥ उमर०
मात तात मीत नार स्वारथ हेत करत प्यार
कोई भी संग चलत नही ॥ २ ॥ उमर०
छोड विषय भोग राग मोह नींद त्याग जाग
सोवत सोवत देर भई ॥ ३ ॥ उमर०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जपले हरिको नाम सार सकल पाप दोष हार
ब्रह्मानंद वचन सही ॥ ४ ॥ उमर०

(शाम कल्याण)

देखोरी आज प्यारी अली
आवत श्याम मोरी गली ॥ टेक ॥
मोरमुकुट सिर धराय पीतवसन तन सुहाय
भाल तिलक अलक ढली ॥ १ ॥ आवत०
गलमें माल भुज बिशाल चलत मंद मंद चाल
संग ग्वाल बाल बली ॥ २ ॥ आवत०
कमर बीच मणि तडाग गावत मधुरमधुर राग
बंसी अधर बजत भली ॥ ३ ॥ आवत०
सुंदर बदन सुखनिधान सुरनरमुनि धरत ध्यान
ब्रह्मानंद दनुज दली ॥ ४ ॥ आवत०

(गजल राग देस)

श्रीकृष्ण नामसार ऊधो कठिन योग है ॥ टेक

१ वैराग योग कठिन ऊधो हमी न करबहो ४.
५ ब्र. भ.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

आसन मूलबंध तान प्राण पवन कर समान
कैसे धरें ध्यान सबी तजके भोग है ॥ १ ॥
शीश मुकुट कुंडल कान वंसी अधर मधुर गान
हमसे सहन होय नही वो वियोग है ॥ २ ॥
कलिमें केवल हरिकानाम लेतमिलत मोक्षधाम
मनमें सदा जपत मुनी सिद्ध लोग है ॥ ३ ॥
बरत नेम यज्ञ दान कोई न नामके समान
ब्रह्मानंद हरण जन्म मरण रोग है ॥ ४ ॥

(गजल राग देस)

श्रीराम नाम सुमर उमर बीत जात है ॥ टेक
जोबन धन शरीरमाल सबका नाश करत काल
जगमें कोई बस्तु नही थिर रहात है ॥ १ ॥
भाई बंधु नार मीत स्वारथ हेत करत प्रीत
मरणकालमें न कोई काम आत है ॥ २ ॥
लोक विभव राज्य पाट गज तुरंग महल हाट
निकस जांय प्राण जबी सब बिलात है ॥ ३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जगत झूट जान जान धरो प्रभु ध्यान ध्यान
ब्रह्मानंद मान मान हमरी बात है ॥ ४ ॥

(गजल राग देस)

देख सखी बनको चले आज राम है ॥ टेक
दशरथके कुंवरबाल कोमल तन भुज विशाल
जनकसुता संग जात अंग वाम है ॥ १ ॥
जटाजूट सोहे माथ धनुष बाण धरे हाथ
पीत बसन कमर बीच मुंज दाम है ॥ २ ॥
भूपति वर दिया दान धर्म हेत तजे प्राण
केकई नादान किया कठिन काम है ॥ ३ ॥
भूमीके भार हरण आये सुरकाजकरण
ब्रह्मानंद कंद चरण मोक्ष धाम है ॥ ४ ॥

(गजल राग देस)

जगदीश सकल जगतका तुम ही अधार है ॥ टेक
भूमि नीर अगन पवन सूरज चांद शैल गगन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

तेरा किया चौदें भुवनका पसार है ॥ १ ॥
सुर नर पशु जीव जंत जल थल चर है अनंत
तेरी रचनाका नही अंत पार है ॥ २ ॥
करुणानिधि विश्वभरण शरणागत तापहरण
सत चित सुख रूप सदा निर्विकार है ॥ ३ ॥
निर्गुण सबगुणनिधान निगमागम करत गान
ब्रह्मानंद नमन करत बार बार है ॥ ४ ॥

(गजल राग पीलु)

सुनो आज जगदीश बिनती हमारी
पडा हुं शरण बीच आकर तुमारी ॥ टेक ॥
माता तुंही है पिता तुं हमारा
बिधाता जगतका तुं है निर्विकारी ॥ १ ॥
विषयोंकी लालचमें तुझको बिसारा
क्षमा कर प्रभु मेरे अवगुण हजारी ॥ २ ॥

---

१ किसीमस्तके आनेकी आरजू है बिपासाकिया सागरे मुशक्क्बू है ९ भजनतक,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संसारसागरमें गहरा फसाया
मुझे अब दया करके लीजे उबारी ॥ ३ ॥
तेरे बिना और पालक न मेरो
ब्रह्मानंद पूरण करो आश भारी ॥ ४ ॥

(गजल राग पीलु)

प्रभु आज चरणोंमें आयो तुमारे
दयाकर सबी दोष हरिये हमारे ॥ टेक ॥
चौदें भुवनमें तुं है एक पूरण
तेरे रचे चांद सूरज सितारे ॥ १ ॥ प्रभु०
नही जानुं ज्ञान न ध्यान न पूजन
केवल पडा हुं मैं तुमरे सहारे ॥ २ ॥ प्रभु०
बिछा जाल मायाका चारों तरफसें
बचा ले मुझे दीनबंधु पियारे ॥ ३ ॥ प्रभु०
नदी कालकी बेगसें जा रही है
ब्रह्मानंद कीजे मुझे अब किनारे ॥ ४ ॥ प्रभु०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

(गजल राग पीलु)

दिखा दे नजरसैं वो जलवा तुमारा
जुदाईका पडदा करो दूर प्यारा ॥ टेक ॥
तेरी खूब सूरत है शकले जिमी पे
तुंही स्वर्ग परियोंका सुंदर नजारा ॥ १ ॥
करुं क्या बडाई मैं तेरे हुसनकी
लजाते हैं सूरज वा चंदर सितारा ॥ २ ॥
करे कौन तेरे गुणोंका निरूपण
कितावें कवीश्वर मुनीश्वर भी हारा ॥ ३ ॥
सुनो मेरी बिनतीको दिलसे दयाकर
ब्रह्मानंद चरणोंमें दीजे सहारा ॥ ४ ॥

(गजल राग पीलु)

प्रभु मेरे दिलमें सदा याद आना
दया करके दर्शन तुमारा दिलाना ॥ टेक ॥
सदा जानकर दास अपने चरणका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुझे दीनबंधु न दिलसें भुलाना ॥ १ ॥
सबी दोष जन्मोंके मेरे हजारों
क्षमा करके अपने चरणमें लगाना ॥ २ ॥
किया काम कोई न तेरी खुशीका
अपना बिरद देख मुझको निभाना ॥ ३ ॥
फसाया हुं मायाके चँकरमें गहरा
ब्रह्मानंद बंधनसें मुझको छुडाना ॥ ४ ॥

(गजल राग पीलु)

देखो नजरसें वो जाती उमरिया
कबी हाथमें फिर न आती गुजरिया ॥ टेक ॥
दिन दिन घडी पलमें छिन छिनमें जावे
जैसे नदी बेग पानी लहरिया ॥ १ ॥
क्या सो रहा है बेफिकरीसे गाफिल
फिरे कालकी तेरे सिरपे चकरिया ॥ २ ॥
मानुषकी देहीको दुनियांमें पाकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

बिरथा न खोवो रतनकी पिटरिया ॥ ३ ॥
सुमरो सदा नाम दिलसें निरंजन
ब्रह्मानंद सब भवबंधन हरिया ॥ ४ ॥

(गजल राग पीलु)

मानुष जनम फिरके आना नही है
बिना ज्ञानके मोक्ष पाना नही है ॥ टेक ॥
मिले ज्ञानमारग न कब हुं जगतमें
अगर संतसंगतमें जाना नही है ॥ १ ॥
सबी विश्वमें एक ईश्वर समाया
अज्ञान कारण पिछाना नही है ॥ २ ॥
खपनेकी माया यह रचना है सारी
कोई वस्तु कायम रहाना नही है ॥ ३ ॥
संसार विषयोंमें फिरता भुलाया
ब्रह्मानंद निज रूप जाना नही है ॥ ४ ॥

(गजल राग पीलु)

बिना कृष्णदर्शनके शांती नही है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऊधो ज्ञानचरचा सुहाती नही है ।। टेक ।।
क्या तुम सुनाते हो निर्गुण कहानी
हमारी समझ बीच आती नही है ।। १ ।।
बसी दिलके अंदरमें मोहनकी मूरत
घडी पल कबी दूर जाती नही है ।। २ ।।
नही योगसाधनकी हमको जरूरत
विना प्रेमकी बात भाती नही है ।। ३ ।।
जपें नाम माधवका हम तो निरंतर
ब्रह्मानंद दिलसें भुलाती नही है ।। ४ ।।

(गजल राग पीलु)

किधरको बताउं मैं तेरा मकाना
सबी विश्वमें एक पूरण समाना ।। टेक ।।
नीचे न ऊपर न चारों दिशामें
मिलता है मुझको अखीरी ठिकाना ।। १ ।।
जहां देखता हुं नजरसें हमेशां
सबीजांमें जाहिर है तेरा निशाना ।। २ ।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

कहुं कौनको नीच ऊंचा जगतमें
बराबर सबी जीवमें तुं बसाना ॥ ३ ॥
मिटा द्वैतका भाव दिलसें हमारे
ब्रह्मानंद व्यापक निरंजन पिछाना ॥ ४ ॥

(गजल राग पीलु)

जाती जिधरको नजरिया हमारी
उधर देखता हुं मैं सूरत तुमारी ॥ टेक ॥
खिला है यह दुनियाका सुंदर बगीचा
सबी डाल पातोंमें तेरी हरारी ॥ १ ॥
करें काठकी नाच पुतली हजारों
कला एक तेरीसें फिरती हैं सारी ॥ २ ॥
बदलती है रंगत हमेशां जगतकी
तुंही सबके अंदरमें है निर्विकारी ॥ ३ ॥
तेरी रोशनीसें चमकता है अंबर
ब्रह्मानंद घटघटमें तेरी उजारी ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(भजन राग पीलु चलित)

जय जय जय जगदीश्वर प्यारा
विश्व चराचर सर्जनहारा ॥ टेक ॥
अचरज भारी रचना सारी
भुवन चतुरदश न्यारा न्यारा ॥ १ ॥ जय०
रवि शशि तारे गिरिवर भारे
सरवर सागर नीर अपारा ॥ २ ॥ जय०
सुर नर नारी जल थल चारी
तुम सब जीवनका रखवारा ॥ ३ ॥ जय०
ब्रह्मानंद दयाल दयाकर
कीजिये भवभय दूर हमारा ॥ ४ ॥ जय०

(राग पीलु चलित)

सुन सुन सुन प्रभु बिनती हमरिया
शरण पडे हम आय तुमरिया ॥ टेक ॥
भवभयहारी सब सुखकारी
ऋषि मुनि गण तुझ नाम सुमरिया ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

दयानिधाना सबसुखखाना
सकल जगत निशदिन हितकरिया ॥ २ ॥
घट घट गामी अंतरयामी
सुर नर पशु जग जीवन भरिया ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद शरणमें तेरी
जन्म मरण सब संकट हरिया ॥ ४ ॥

(राग पीलु चलित)

प्रभु प्रभु प्रभु मैं दास तुमारो
मुझे न अपने दिलसें बिसारो ॥ टेक ॥
भवजलधारा दुस्तर पारा
डूब रहा हुं पार उतारो ॥ १ ॥ प्रभु०
परम कृपाला दीनदयाला
करुणा कर निज नैन निहारो ॥ २ ॥ प्रभु०
क्षमा करीजे दर्शन दीजे
मेरे अवगुण लाख हजारों ॥ ३ ॥ प्रभु०
ब्रह्मानंद चरणको चेरो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दीन जान भवबंध निवारो ॥ ४ ॥ प्रभु०

(राग पीलु चलित)

हरि हरि हरि नित नाम सुमरणा
भवसागरजल पार उतरणा ॥ टेक ॥
विन हरि सुमरे कबहुं न उबरे
पुन पुन पुन जग जीवनमरणा ॥ १ ॥ हरि०
जो जन ध्यावे परपद पावे
सुंदर बदन मनोहर चरणा ॥ २ ॥ हरि०
पलमें सारे पाप निवारे
सकल मनोरथ पूरण करणा ॥ ३ ॥ हरि०
ब्रह्मानंद दयाके सागर
भक्तजनोंके सबदुखहरणा ॥ ४ ॥ हरि०

(राग पीलु चलित)

चल चल चल सखी देश हमारे
बास करे जहां प्रीतम प्यारे ॥ टेक ॥
बिन घन गाजे अनहद बाजे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

घंटा शंख मृदंग नगारे ॥ १ ॥ चल०
बिजली चमके अमृत टपके
पुन पुन झलकत रवि शशि तारे ॥२॥ चल०
बिन जल थलमें गगनमहलमें
सुंदर सेज बिछी रतनारे ॥ ३ ॥ चल०
ब्रह्मानंद निरख छबि निर्गुण
तेजपुंजमय परम उजारे ॥ ४ ॥ चल०

(राग बरहंस अथवा आशावरी ताल धमाल)

अहो प्रभु अचरज माया तुमारी
जिसे मोहे सकल नरनारी ॥ टेक ॥
ब्रह्मा मोहे शंकर मोहे मोहे इन्द्र बलकारी
सनकादिकनारदमुनिमोहेदुनियांकौनाबिचारी ॥
योग करंते योगी मोहे बनमें मोहे तपधारी
बेद पढंते पंडित मोहे भूल गये सुधि सारी ॥
पांचविषयकी जाल बिछाई बंधन रचिया भारी
लालचसें सबजीवफसाये निकलनकौनहिवारी ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जिसपर किरपा होय तुमारी सो जन उतरेपारी
ब्रह्मानंद शरणमें आयो लीजिये मोहे उबारी ॥

(राग आशावरी ताल धमाल)

प्रभु इक नाम तेरा सुखकारी
सब दुनियां परम दुखारी ॥ टेक ॥
गर्भवासमें उलटे तनसे नौ दस मास गुजारी
बाहिरआयपडापृथिवीपरमायालिपटीतुमारी ॥
बालापणमें पराधीन नित माता गोद खिलारी
सुखदुखसबहीव्यापततनमेंवचनसकेनउचारी ॥
जोबनमें नित काम सतावे मोह लियो मन नारी
बालबचोंके पालनके हित परघरदास भिखारी ॥
वृद्धपणेमें रोग लगे सब काया निर्बल हारी
ब्रह्मानंद भजनबिन तुमरे जन्ममरणभय भारी॥

(राग आशावरी ताल धमाल)

प्रभु तेरी महिमा किसबिध गावुं
तेरो अंत कहीं नहीं पावुं ॥ टेक ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

अलखनिरंजनरूपतुमारोकिसविधध्यान लगावुं
वेद पार अजहुं नहि पायो मैं कैसे बतलावुं ॥
गंगा यमुना नीर बहाये मज्जन किम करवावुं
वृक्ष बगीचे रचना तेरी कैसे पुष्प चढावुं ॥
पांच भूतकी देहन तुमरी चंदन किमलिपटावुं
सकलजगतकेपालनकर्ताकिसविधभोगलगावुं ॥
हाथ जोडकर अरज करूं मैं बारबार शिरनावुं
ब्रह्मानंद मिटादे पडदा घटघट दर्शन पावुं ॥

(राग आशावरी ताल धमाल)

प्रभु तेरी महिमा कौन बखाने
जाको ब्रह्मादिक नहिं जाने ॥ टेक ॥
तुं सर्वज्ञ चराचर पूरण व्यापक सबी ठिकाने
घटघटभीतर जोत तुमारी ढूंडत दूर दिवाने ॥
कैसे देह रची है तुमने किसविध प्राण चलाने
जीव कहांसें आवे जावे कोई सके न पिछाने ॥
सूरज चांद सितारे पर्वत नदियां नीर बहाने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भुवनचतुरदश रचनातेरी तुझमें सकल समाने॥
तेरी शरण पडे जो प्राणी मोक्षधाम पहुंचाने
ब्रह्मानंद विना तुझसुमरण जन्मजन्मभटकाने ॥

(राग आशावरी ताल धमाल)

प्रभु तेरी महिमा परम अपारा
जांको मिलत नहीं कोई पारा ॥ टेक ॥
सकल जगतको आप रचावे सबका पालनकारा
अंदरबाहिरसबघटपूरण सबसेंनिशदिनन्यारा ॥
कैसे सूरज गर्म बनाया शीतल चांद उजारा
जुदाजुदा नित नभकेमांही कैसे चमकत तारा ॥
उंचे उंचे पर्वत कीने सरिता निर्मल धारा
कैसे भूमी अचल निरंतर क्यों सागरजल खारा॥
किसविध बीज बनेबिरछनके नाना भांतहजारा
ब्रह्मानंद अंत नहिं आवे सुर नर मुनिगणहारा ॥

(राग आशावरी ताल धमाल)

रे मनुवा क्यों जगमें लिपटायो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

तेरो कोई नहीं है सहायो ॥ टेक ॥
यह संसार स्वपनकी माया बिरथा भरमभुलायो
क्षणभंगुर सबबस्तुविनाशी प्रीतलगापछतायो॥
विषया रस मृगतृष्णा पानी देखदेखकर धायो
कबहुं प्यासमिटेनहितेरी जनमजनमभटकायो॥
जो प्रभुनित्य सहायकतेरो तिसकोक्योंबिसरायो
सकलव्यापक अंतरयामी जिनसबजगउपजायो
तेरी मेरी करते निश दिन सबही जन्म बितायो
ब्रह्मानंद ध्यानकर प्रभुका जो चाहे सुख पायो॥

(राग आशावरी ताल धमाल)

अहो प्रभु काल बडो बलकारी
जांको भोजन है नर नारी ॥ टेक ॥ अहो०
ब्रह्मा रुद्र इन्द्र गण खाये खाये दैत्य हजारी
बडे बडे पृथवीके राजा खाये जिम तरकारी॥
सूरज चांद सितारे नदियां सागर पर्वत भारी
कालचक्रमें सब पिसजावें अपनी अपनी वारी॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जलचर नभचर वनचर भूचर लघुदीर्घ तनधारी
सबही जीव कालके मुखमें घूमरहे दिनचारी ॥
नाम तुमारो अमर निरंतर कालपाशभयहारी
ब्रह्मानंद शरणमें तेरी कीजिये भवजलपारी ॥

(राग धुन ताल ३)

जो जन हरिका ध्यान लगावे
सो भवसागर पार तरे रे ॥ टेक ॥ जो जन०
हिरदे बीच कमलके अंदर सिंघासन निर्माण
करे रे । तिसके ऊपर कोटि भानुसम हरि
स्वरूप मनमें सुमरे रे ॥ १ ॥ जो जन०
पग नूपुर कटिमें मणिमेखल सुंदर पीतांबर
पहरे रे । कौस्तुभ मणि बनमाल गलेमें कुंडल
कानन बीच परे रे ॥ २ ॥ जो जन०
चतुरभुजा बाजुबंद सोहे कर कंकण धुनि
मनको हरे रे । शीश मुकुटमणि रतनजडित है

१ देखोरी इक बाला जोगी द्वारे हमरे आया है री । ४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

शंख चक्र गदा पद्म धरे रे ॥ ३ ॥ जो जन०
वाम अंकमें लक्ष्मी विराजे शेष नाग सिर छत्र करे रे । शिव सनकादि खडे कर जोडे ब्रह्मानंद मन मोद भरे रे ॥ ४ ॥ जो जन०

(राग धुन ताल ३)

जो जन ध्यान धरे निर्गुणको
सो ईश्वरका दर्शन पावे ॥ टेक ॥ जो जन०
जाय इकांत भुवनमें बैठे कोमल आसन भूमि बिछावे । चिंता फिकर छोड सब मनके त्रिकुटी महलमें सुरति जमावे ॥१॥ जो जन०
पहले पहले रवि शशि तारे पल पलमें बिजली चमकावे । दूर दूरके दिव्य देवगण पुन पुन तेज बीच दरसावे ॥ २ ॥ जो जन०
दिनदिन ध्यान धरे योगी जन ब्रह्मजोत घटमें प्रगटावे । कोटि भानु सम झिलमिल झिलमिल रोमरोममें सुख उपजावे ॥ ३ ॥ जो जन०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कर्मनके बंधन सब टूटें माया मोहजाल कट
जावे । ब्रह्मानंद मोक्षपद पावे गर्भवास
फिरके नहि आवे ॥ ४ ॥ जो जन०

(राग धुन ताल ३)

काहे शोच करे नर मनमें
वो तेरा रखवारा है रे ॥ टेक ॥ काहे०
गर्भवाससे जब तूं निकला दूधकुचनमें डारा हैरे
बालापणमें पालनकीनो मातामोहदुवारा हैरे॥
अन्नरचा मनुजोंकेकारण पशुवोंकेहितचारा हैरे
पक्षीवनमेंपानफूलफलसुखसें करतअहारा हैरे॥
जलमें जलचर रहतनिरंतर खावें मांसकरारा हैरे
नाग बसें भूतलकेमांहि जीवें वर्षहजारा हैरे॥
स्वर्गलोकमें देवनकेहित बहत सुधाकीधारा हैरे
ब्रह्मानंदफिकरसबतजकर सुमरोसर्जनहारा हैरे

(राग धुन ताल ३)

जाग मुसाफर क्या सुख सोवे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

आखिर तुझको जाना है रे ॥ टेक ॥
इस सरायमें रहननपावे क्याराजा क्याराना हैरे
काहेपैर फैलावे मूरख घडी पलक ठहराना हैरे॥
इकआवत दूजा चलजावे कायमनहीठिकाना हैरे
यहछलभरियांसुंदरपरियां काहेदेखलुभानाहैरे
इस मकानमें चोरबसतहैं अपनामालबचाना हैरे
आपरदेसखर्चमतकीजे यहांतो तुझेकमाना हैरे
दूर देशमें जाना तुझको पास नकछु समाना हैरे
ब्रह्मानंदसुकृतकरप्राणी जो आगेसुखपाना हैरे॥

(राग धुन ताल धीमा)

गायरेनरगायप्यारे अबतोहरिगुणगायरे॥ टेक
बालापण जोबनगया फिर विरध हो गई कायरे
छोडदे दुनियांकी लालच क्यों रहालिपटायरे॥
नदिया चाली नीरकीजिम गई समुद्र समायरे
रातदिन उमरा बिहावे पलकथिर न रहायरे॥
माल धन सुत मीत नारी कोई संग न जायरे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चार दिनके जान साथी अंत सकल बिलायरे॥
दीनबंधु दयाल प्रभुके चरणमें चित लायरे
ब्रह्मानंद मिटें सबी दुःख सदा होय सहायरे ॥

(राग धुन ताल धीमा)

जागरेनरजागप्यारे अबतोगाफिलजागरे ॥ टेक
स्वपन जैसी जान रचना खिला दुनियां बागरे
देखते मुरझाय जावे क्या करत है रागरे ॥
काम क्रोध हंकार तृष्णा संग इनको त्यागरे
ध्यान धर जगदीशका नित मोडमनकीवागरे ॥
जाल मायाका बिछा है दूर इससें भागरे
जानले निजरूप तेरो गुरुचरण अनुरागरे ॥
नामसम कलिकालमें नहि दान जपतप योगरे
ब्रह्मानंद भजन बिना सब व्यर्थ योगबिरागरे ॥

(राग धुन ताल धीमा)

मानरे मनमान मूरख बात मेरी मानरे ॥ टेक
जैसे बिजली बीच बादल होत है चल मानरे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

मालधन जोबन नही थिर क्याकरेअभिमानरे॥
जगमें मानुष देह पाई परम मोक्ष निधानरे
भजन बिन बिरथा गमाई भूलकर नादानरे॥
करले जो कुछ हो सकेरे योग जप तप दानरे
मनमें फिर पछतायगा जब निकसजावें प्राणरे॥
संत संगत बीच जाकर श्रवण कीजे ज्ञानरे
ब्रह्मानंद स्वरूप पूरण घटमें अपने जानरे॥

(राग धुन ताल धीमा)

चेतरे नर चेत प्यारे अबतो मनमें चेतरे ॥ टेक
क्यों भुलायो नाम हरिको जीव मूढ अचेत रे
बिखर जावे देह तेरी जैसे बालु रेतरे ॥
मिटी न मनकी आश तेरी बाल हो गये श्वेतरे
भजन बिन भगवानके तुं मरके होवे प्रेतरे ॥
बिषय लालचमें फसायो किया न प्रभुसे हेतरे
धर्मका नही बीज बोयो खाली रहगया खेतरे॥
सर्व व्यापक रूप ईश्वर जान उसका भेदरे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्रह्मानंद मिटे सबी दुख जन्ममरण समेतरे ॥

(लावणी कवाली)

अब तुम दया करो श्रीकृष्णजी
ब्रजराज कहानेवाले ॥ टेक ॥
तुम मात देवकी जाये जसमतिके पुत्र कहाये
मथुरासे गोकुलआयेजी माखनके चुरानेवाले ॥
लडकन संग माटी खाई सुन मात जसोदा धाई
तुम अपने मुखकेमांहीजी सबविश्व दिखानेवाले
तुम दैत्य बकासुर मारा नलकूबरशाप निवारा
जलनागनाथकरडाराजी गिरवरके उठानेवाले॥
थन चूस पूतना मारी कुबरीकी देह सुधारी
तुम कंसराज बधकारीजी दुष्टनके दबानेवाले ॥
जमुनातट बंसी बजाई सबसखियां सुनकर आई
बृंदाबन रासरचाईजी मिल नाच नचानेवाले ॥
तुम पुरी द्वारका आये सोनेके महल बनाये
रुकमणकोजीतकरलायेजी यदुबंश बढानेवाले ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

तुम अर्जुनके रथवाही पांडवकी जीत कराई
द्रुपदीकी लाज रखाईजी भक्तनके बचानेवाले॥
सब दैत्यनको संहारा भूमीका भार उतारा
ब्रह्मानंददेवदुखटाराजी निजधामसिधानेवाले॥

(लावणी कवाली)

अबतुमदयाकरोश्रीरामजी रघुनाथकहानेवाले॥
बन जाय ताडका मारी खरदूषण फौज संहारी
सब विघ्नदियेतुमटारीजी मुनियज्ञ करानेवाले॥
तुम जनकपुरी पगधारा शिवधनुष तोडकरडारा
राजोंका गर्व निवाराजी सीताको विहानेवाले॥
भई राजतिलककी त्यारी तबकेकईकीमतिमारी
दशरथआज्ञासिरधारीजी बनवाससिधानेवाले॥
तुम चित्रकूटचलआये सबऋषिमुनिसुखउपजाये
जहांभरतमिलापकरायेजी निजकंठलगानेवाले॥
तुम पंचवटीमें जाई निज पर्णकुटी बनवाई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तहां सीता गई चुराईजी मृगमार गिरानेवाले ।।
सुग्रीवको मित्र बनाया बालीको मार गिराया
हनुमान दूत भिजवायाजी लंकाजलवानेवाले ।।
तुम सागर पुल बनवाई सब सेना पार लंघाई
रावणसे करी लडाईजी सब बंश मिटानेवाले ।।
घर जनकसुताको लाये दे राज्य बिभीषण आये
ब्रह्मानंदबिमलयशगायेजी सुरकाजबनानेवाले।।

(लावणी कवाली)

अबतुमदयाकरोमहादेवजी कैलासबसानेवाले।।
सब अंग बिभूति रमाई सिर ऊपर जटा सुहाई
गिरिराजसुतासुखदाईजी निजअंगबिठानेवाले।।
काननमें कुंडल राजे मस्तकमें चंद्र बिराजे
तननागविभूषणसाजेजी मृगछालबिछानेवाले।।
नरमुंडमाल गलधारी करमें त्रिशूल भयकारी
नंदीगण पीठ सवारीजी डमरूके बजानेवाले ।।
गंगा नद बेग अपारा जब नभसे उतरी धारा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

तुम बीच जटाके डाराजी जलबूंदबनानेवाले ॥
जब रावणने तप कीना तब मनवांछितवरलीना
तुमतीनलोकपतिकीनाजी सबराज्यदिलानेवाले
तुम कामदेव तन जारा त्रिपुरासुर मार विदारा
सब दक्षयज्ञ संहाराजी गणसेन पठानेवाले ॥
मुनि मार्कंड तप धारी जब आयो शरण तुमारी
यमपाश पलकमें टारीजी तनअमरकरानेवाले ॥
तुम दीनबंधु व्रतधारी निज भक्तनके हितकारी
ब्रह्मानंदसकलभयहारीजी सुखधामपुगानेवाले

(लावणी कवाली)

अबतुमदयाकरोजगदीशजीसबविश्वरचानेवाले
तुम मनमें प्रथम विचारा तब पांचतत्त्व रचडारा
फिरहूयाजगतविस्ताराजी सबभुवनबनानेवाले॥
कोई नभचर जीवबनाये कोईपृथिवीबीच बसाये
जलचर जलमें उपजायेजी बहुरूप धरानेवाले ॥
कहींअमृतफल रचदीनेकहीं अन्न बहुतविधकीने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तुमभोजननित्यनवीनेजी सबकोदिलवानेवाले।।
नही जीव कर्म चतुराई तुमने सब वस्तु बनाई
सब जगा सबी सुखदाईजी सब ढंगजमानेवाले
तुम पंखा पवन चलाया दीपक रविचंद्र जलाया
नितनदियांनीरबहायाजी सबजीवजिलानेवाले
जड चेतन जीव बनाये फिर बीजसे बीज लगाये
कोईनाशहोननहिपायेजी जगचक्र चलानेवाले
तुमको सब जीवसमाना निज कर्म कियेपरधाना
फिरऊंचनीचजगठानाजी सबखेलदिखानेवाले
तुम पार ब्रह्म अविनाशी घटघटके अंतरवासी
ब्रह्मानंदपरम सुखराशीजी भवबंधमिटानेवाले।।

(गजल ताल कवाली)

भजलेरामनामसुखधाम तेरा पूरणहो सबकाम।।
काशी जावे मथुरा जावे तीरथ फिरे तमाम

१ रंगमे कैसे होरी खेलुंरी मां सांवरियाके संग ६.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

जाय हिमाचल करे तपस्या नहि पावे विश्राम॥
जटा रखाये भस्म रमाये जंगल किया मुकाम
सतगुरुकी संगत नहिकीनी मिले न आत्माराम
आसन साधे भोजन साधे साधे प्राणायाम
घटमें ब्रह्मस्वरूप न चीनो कीनोजतननिकाम॥
संतसमागम करे निरंतर जगसे हो उपराम
ब्रह्मानंद परम पद पावे होवे मन निष्काम ॥

(भजन ताल कवाली)

देखो वृन्दावनकी कुंजमें री नाचे नंदकुमार ॥
मोरमुकुट सिर ऊपर सोहे गल फूलनके हार
पीतांबर कटि बीच विराजे मुरलीअधरसुधार॥
वीणा ताल मृदंगी बाजे बाजे झांज सितार
छनछन छनछन नूपुर बाजे करकंकणझनकार॥
सखियांके संग राधा नाचे नाचे ब्रजकी नार
ग्वालबाल सब मिलकरनाचें करकरके सिंगार॥
जलचर मोहे थलचर मोहे मोहे नभसंचार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्रह्मानंद मुनीश्वर मोहे बंसी धुन निर्धार ॥

(भजन ताल कवाली)

बंसीका बजाना छोडदेरे नंदमहरके लाल॥टेक
तेरी बंसरी रसकी भीनी बाजे मधुर रसाल
सुनसुन सारी ब्रजकी नारी भूलगई घरमाल॥
बनमें जाते धेनु चराते मोह लिये सब ग्वाल
दधि बेचनको चली गुजरिया रोकलई तत्काल
पक्षी मौनहुये पशवोंने तजा चरनका ख्याल
ध्यानछुटामुनियोंका बनमें सुनकरधुनीविशाल
मोर मुकुट पीतांबर सोहे गल बेजंती माल
ब्रह्मानंदकी सुनो बेनती दीजे दरस दयाल ॥

(भजन ताल कवाली)

बंसीका बजानारी सखी मैं कैसेछोडुंआज ॥ टेक
इस बंसीमें सब रागनकी सुंदर भरी अवाज
वीणा ताल मृदंग सरंगी बाजें सबही साज ॥
इस बंसीकी धुनको सुनके मग्न भये मुनिराज

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

स्वर्गलोकसें सुनने आवें मिलकर देवसमाज ॥
इस वंसीमें निगमागमकी बाणी रही विराज
जो सुनपावे मोक्षसिधावे सफलहोय सबकाज ॥
वृन्दावनमें कृष्णचंद्रकी रही वंसरी बाज
ब्रह्मानंद शरणमें आयो राखिये मेरी लाज ॥

(भजन ताल कवाली)

मनुवाउलटीतेरीरीत कीनीपरदेसीसेंप्रीत॥ टेक
क्षणभंगुर यह काया तेरी इसकी क्या परतीत
पलमें बिखर जाय यहसारी जिमबालूकीभीत॥
स्वारथके सब बंधु जगतमें सुत दारा अरु मीत
जीव अकेला आवे जावे कोई नही संगीत ॥
यह संसार स्वपनकी रचना तुं समझे विपरीत
घडीपलकका नही ठिकाना क्याबांधेथिरनीत॥
हरिका भजन करो नितप्यारे मनअपनेको जीत
ब्रह्मानंद परम पद पावे भव भय जावे बीत ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(भजन ताल कवाली)

मनुवा सोचसमझकर देखलेरे नश्वरसबसंसार॥
राजा जावे रानी जावे जावे सब परिवार
महल खजाना सब चल जावे जावे घरदरबार॥
सूरज चांद सितारे पर्वत सागर नीर अपार
दिनदिन काल सबीको खावे धावे पवनसवार॥
बालपणा जोबन सब बीता बीता काम बिहार
मौत खडी सिर ऊपर तेरे अबतो चेत गवार॥
प्रभुकानामसुमरनिशबासरछोडजगतव्यवहार
ब्रह्मानंद मिटे भवबंधन छूटे सकल विकार॥

(भजन ताल कवाली)

अबतोछोडजगतकी लालसारेसुमरोसर्जनहार॥
बालापण खेलनमें खोयो जोबन मोह्यो नार
बूढापण तन जर्जर होयो मन तृष्णा बिस्तार॥
पलपल छिनछिन उमराजावे जैसे अंजली धार
गयावक्त फिर हाथनआवे कीजे जतनहजार॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

मातपिता नारी सुत बांधव स्वारथका व्यवहार
अंतकाल कोई संग न जावे मनमें देख बिचार॥
स्वपन समान जगतकी रचना झूठा सब संसार
ब्रह्मानंद भजन कर हरिका पावे मोक्ष दुवार॥

(भजन ताल कवाली)

तुं तोउडतापंछीयार तेराकौनकरेइतबार॥ टेक
नौ खिडकीका पिंजरा तेरा खुले पडे सब द्वार
आनाआनामुशकिलतेरा जाना सहज शुमार॥
तेरे कारण महल बनाये संचे सुत धन दार
सबको छोडजाय तुं पलमें निरमोही निरधार॥
सुंदर भोजन नित्य खिलावुं पहरावुं सिंगार
मलमलअतर फुलेललगावुं नहि माने उपकार॥
कोट बनावुं किले बनावुं बांधुं बंध हजार
ब्रह्मानंद रहें तुं नाहीं निकल जाय बलधार॥

(भजन ताल कवाली)

मैंतोरमताजोगीराममेराक्यादुनियांसैंकाम॥टेक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हाडमांसकी बनी पुतलिया ऊपर जडिया चाम
देख देख सब लोक रिझावें मेरो मन उपराम ॥
माल खजाने बाग बगीचे सुंदर महल मुकाम
एक पलकमें सबही छूटें संग चले नहि दाम ॥
मातपिता अरु मीत पियारे भाई बंधु सुतवाम
स्वारथका सब खेल बना है नही इनमें आराम ॥
दिनदिनपलपलछिनछिनकायाछीजतजायतमाम
ब्रह्मानंद भजन कर प्रभुका मैं पाउं विश्राम ॥

(खमाच ताल ३)

प्रभु कर सब दुख दूर हमारे
शरण पडे हम दास तुमारे ॥ टेक ॥
सकल जगत तुमने उपजाया
तुमही हो प्रतिपालनहारे ॥ १ ॥ प्रभु०
सकल व्यापक अंतरयामी
ध्यावत सुरनर मुनि गण सारे ॥ २ ॥ प्रभु०

१ गणपतिविघनविनाशनहारे ४.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

नाम तुमारो सब सुखदायक
सकल दोष भय पाप निवारे ॥ ३ ॥ प्रभु०
सत चित आनंद रूप तुमारो
ब्रह्मानंद सदा मन धारे ॥ ४ ॥ प्रभु०

(खमाच ताल ३)

प्रभु तुम सकल जगतके स्वामी
घट घटके नित अंतरयामी ॥ टेक ॥
निर्मल पूरण रूप तुमारो
भुवन चतुरदश जल थल गामी ॥ १ ॥ प्रभु०
तुमरा नाम लेत सब उधरें
पामर नीच जीव खल कामी ॥ २ ॥ प्रभु०
तुझ बेमुख सुख कबहुं न पावे
नरककुंड नर पडत हरामी ॥ ३ ॥ प्रभु०
ब्रह्मानंद दयाल दया कर
भवदुखहारण सबसुखधामी ॥ ४ ॥ प्रभु०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(खमाच ताल ३)

प्रभु तुम सब जग सर्जनहारे
सकल शक्तिमय पिता हमारे ॥ टेक ॥
भूमी पर्वत नदियां सागर
तुमरी रचना रवि शशि तारे ॥ १ ॥ प्रभु०
सुर नर पशु सब जीव जगतमें
तुम अधीन सब पुत्र तुमारे ॥ २ ॥ प्रभु०
नानाविध सब भोग पदारथ
सबके सुख कारण विस्तारे ॥ ३ ॥ प्रभु०
ब्रह्मानंद शरणमें तुमरी
जन्ममरणभयभंजनहारे ॥ ४ ॥ प्रभु०

(खमाच ताल ३)

हरि तुम भगतनके रखवारे
सकल जगतके नित हितकारे ॥ टेक ॥
गजको पकड ग्राहने खेंचा
गरुड सवार पधार उबारे ॥ १ ॥ हरि०
प्रल्हाद भगतकी रक्षा कीनी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

हिरणकशप तन तुरत विदारे ॥ २ ॥ हरि०
द्रुपदसुताकी लाज बचाई
खेंच खेंच पट कौरव हारे ॥ ३ ॥ हरि०
ब्रह्मानंद शरणमें आयो
कीजिये भवजल सिंधु किनारे ॥ ४ ॥ हरि०

(खमाच ताल ३)

चंचल मन निशदिन भटकत है
एजी भटकत है भटकावत है ॥ टेक ॥
जिम मर्कट तरु ऊपर चडकर
डार डार पर लटकत है ॥ १ ॥ चंच०
रुकत जतनसें क्षण विषयनतें
फिर तिनहीमें अटकत है ॥ २ ॥ चंच०
काचके हेत लोभकर मूरख
चिंतामणिको पटकत है ॥ ३ ॥ चंच०

---

१ दर्शनबिन अखियां तरस रही एजी तरस रही तरसाय रही ८ तक.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्रह्मानंद समीप छोडकर
तुच्छ विषय रस गटकत है ॥ ४ ॥ चंच०

(खमाच ताल ३)

हरिसुमरण विन दिन जाय रहे
एजी जाय रहे नित धाय रहे ॥ टेक ॥
बालपणा खेलनमें खोया
जोबन काम लुभाय रहे ॥ १ ॥ हरि०
वृद्धपणेमें शिथिल भयो तन
नाना रोग सताय रहे ॥ २ ॥ हरि०
जप तप दान योग नहि कीनो
बिरथा जन्म गमाय रहे ॥ ३ ॥ हरि०
ब्रह्मानंद भजन विन प्रभुके
भवसागर भटकाय रहे ॥ ४ ॥ हरि०

(खमाच ताल ३)

हरिनाम सुमर सुखकारण रे
सुखकारण रे भवतारण रे ॥ टेक ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

सोवत जागत फिरत निरंतर
सुखसे करो उच्चारण रे ॥ १ ॥ हरि०
जन्म जन्मके संचित सारे
पलमें पाप निवारण रे ॥ २ ॥ हरि०
जप तप योग कठिन कलिमांही
होय न भवभयहारण रे ॥ ३ ॥ हरि०
ब्रह्मानंद करो प्रभुके नित
चरणकमल चित धारण रे ॥ ४ ॥ हरि०

(खमाच ताल ३)

अनहदधुनी सिरपर बाज रही
एजी बाज रही अरु गाज रही ॥ टेक ॥
बाजत शंख मृदंग बंसरी
धन गर्जत अति छाज रही ॥ १ ॥ अन०
सुनकर मस्त भया मन मेरा
चंचलता सब भाज गई ॥ २ ॥ अन०
तनके धर्म कर्म सब छूटे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लोक वेदकी लाज गई ॥ ३ ॥ अन०
ब्रह्मानंद गिरा गमनाही
शून्य समाधि विराज रही ॥ ४ ॥ अन०

(खमाच ताल ३)

मेरी सुरत गगनमें जाय रही
एजी जाय रही अरु धाय रही ॥ टेक ॥
त्रिकुटी महलमें चडकर देखा
जग मग जोत जगाय रही ॥ १ ॥ मेरी०
अमृत बरसे बादल गरजे
बिजली चमक मन भाय रही ॥ २ ॥ मेरी०
दसवें महलमें सेज पियाकी
चुन चुन फूल बिछाय रही ॥ ३ ॥ मेरी०
ब्रह्मानंद देहसुध बिसरी
सहजस्वरूप समाय रही ॥ ४ ॥ मेरी०

(खमाच ताल ३)

मुझे लगन लगी प्रभु पावनकी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

एजी पावनकी घर लावनकी ॥ टेक ॥
छोड काज अरु लाज जगतकी
निशदिन ध्यान लगावनकी ॥ १ ॥ मुझे०
सुरत उजाली खुलगई ताली
गगन महलमें जावनकी ॥ २ ॥ मुझे०
झिलमिलकारी जोत निहारी
जैसे बिजली सावनकी ॥ ३ ॥ मुझे०
ब्रह्मानंद मिटी सब प्यासा
निरख छबी मन भावनकी ॥ ४ ॥ मुझे०

(खमाच ताल ३)

मुझे सतगुरु संत मिलाय सखी
मेरे मनकी तपत बुझाय सखी ॥ टेक ॥
आन बसी चोरनकी नगरिया
खोस खोस कर खाय सखी ॥ १ ॥ मुझे०
झूठे कार बिहार जगतके
बिरथा रही फसाय सखी ॥ २ ॥ मुझे०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बिन गुरु ज्ञान मोक्ष नहि होवे
कोटिन जतन कराय सखी ॥ ३ ॥ मुझे०
ब्रह्मानंद मिले गुरु पूरा
भवबंधन मिट जाय सखी ॥ ४ ॥ मुझे०

(खमाच ताल ३)

भजले नर शारंगपाणीरे भजले नर शारंगपाणी
मानुष तन पुन पुन नहि आवे । दिन दिन
घडी घडी पल पल छिन छिन । स्रवत जात
जैसे अंजलिको पानी ॥ टेक ॥
नरमूढ पापसें डररे । हरिचरणकमल चित
धररे । संतन सम संगति कररे ।
तज धन जोबनका मद मनसे शरण गहो
सतगुरुज्ञानी ॥ १ ॥ भज०
विषयारस फिरत भुलाना । निजसुख स्वरूप
नहि जाना । फिर मरकर मन पछताना ।

---

१ जग दर्शनका मेला है । दिननीके वीते हैं २ तक.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

भटकत पुन पुन लख चौरासी सुख न लहत क्षण अभिमानी ॥ २ ॥ भज०

सुत दारादिक परिवारा । क्षणभंगुर देख विचारा । जिम बिजलीका चमकारा । करकर पाप करत धनसंचय नरक पडत पामर प्राणी ॥ ३ ॥ भज०

जो नाम हरिका गावे । भवसागरको तर जावे । फिर गर्भवास नहि आवे । ब्रह्मानंद परम पद पावत जावत ब्रह्मस्वरूप समानी ॥ ४ ॥ भज०

(खमाच ताल ३)

जगस्वपनेकीमायासाधो जगस्वपनेकीमायाहै॥ शोच समझ नर दिल अपनेमें । कौन है तुं किस कारण इस दुनियांमें । मनुजतन पाया है ॥ टेक मारी सुतबांधव चेराहै । नहि तेराहै नहि मेराहै । चिडियांका रैन बसेराहै । अपने अपने कर्मनके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बश कोई जावत कोई आया है ॥ १ ॥ जग०
घर मंदिर माल खजाना है। दो दिनका यहां ठहराना है। फिर आखिर तुझको जाना है। कर अपने करसे शुभ कारज जो परलोक सहाया है ॥ २ ॥ जग०
चेहरेकी सुंदरताई है। थोडेदिनकी रुसनाई है। फिरखाकमें खाक मिलाई है। सुमरण कर हरिका निशदिन। दिनदिन छीजत यह काया है ॥ ३ ॥
यह झूठा सब संसारा है। मायानेजाल पसारा है। क्यों भूला फिरत गवारा है। ब्रह्मानंद रूपबिन जाने। जन्ममरण भटकाया है ॥ ४ ॥ जग०

(खमाच ताल ३)

सुनलेप्रभु अरजहमारीरे सुनलेप्रभुअरजहमारी॥ दीनदयाल सकल दुखभंजन। अशरणशरणपरम सुखदायक जन्ममरणभवबंधन हारी ॥ टेक ॥
तुम सकल जगतके स्वामी हो। घटघटके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

अंतरयामी हो । सब विश्व चराचरगामी हो । जलथल गिरिवर नदियां सागर तुमरी अचरज रचना सारी ॥ १ ॥ सुन०

कहीं सूरज चांद सितारा है । कहीं बिजलीका चमकारा है । कहीं भुवन चतुरदश न्यारा है । सुर नर पशुगण जीव चराचर सब जग पालक नित हितकारी ॥ २ ॥ सुन०

कोई निगमागम गुण गाते हैं । कोई निर्गुण रूप बताते हैं । कोई मुनिजन ध्यान लगाते हैं । तुमरा अंत पार नहि पावें अचरज परबल महिमा भारी ॥ ३ ॥ सुन०

तुम परमधाम अविनाशी हो । सतचित सुखरूप विलासी हो । सब व्यापक विश्वविकासी हो । ब्रह्मानंद करो करुणा अब शरण पडो मैं आय तुमारी ॥ ४ ॥ सुन०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(ध्रुवपद ताल ४)

प्रथम सुमर श्रीगणेश गौरीसुत प्रिय महेश ॥
सकल विघन भय कलेश दूरसे निवारे ॥ १ ॥
लंब उदर भुज विशाल कर त्रिशूल चंद्र भाल
शोभत गल पुष्पमाल रक्तबसनधारे ॥ २ ॥
ऋद्धि सिद्धि दोऊ नार चमर करत वार वार
मूषकवाहन सवार भक्तन हितकारे ॥ ३ ॥
पूरणगुणगणनिधान सुर मुनियश करत गान
ब्रह्मानंद चरण ध्यान सकल काज सारे ॥४॥

(ध्रुवपद ताल ४)

शीशमुकुट तिलक भाल कानन कुंडल विशाल
कंठमें बेजंती माल शोभत अति भारी ॥ १ ॥
विलसत तन पीत बसन वदन मंद मंद हसन
तीन लोक ताप ग्रसन चतुरभुजाधारी ॥ २ ॥
शंख चक्र गदा संग रमा बसत वाम अंग

---

१ प्रथम मान ओंकार० ५ भजन तक.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

सुंदर शुभ शाम रंग गरुडके सवारी ॥ ३ ॥
कुटिल कुटिल अलक राजे पगमें नूपुर बिराजे
ब्रह्मानंद मदन लाजे रूपको निहारी ॥ ४ ॥

(ध्रुवपद ताल ४)

जय महेश जटाजूट कंठ सोहे कालकूट
जन्म मरण जाय छूट नाम लेत जांके ॥ १ ॥
तीन नयन चंद्र भाल गलमें मुंडनकी माल
शोभत तन मिरगछाल कटिमें नाग बांके ॥२॥
गौरी बसत सदा संग भस्म लसत अंग अंग
शीश गंगके तरंग वाहन वृषभाके ॥ ३ ॥
कर त्रिशूल अरु कुठार ब्रह्मानंद निर्विकार
जाकी महिमा अपार कहत वेद थाके ॥ ४ ॥

(ध्रुवपद ताल ४)

ईश्वर तुं है दयाल जगतपति प्रणतपाल
व्यापक पूरण विशाल सत चित सुखदाई ॥१॥
सकल भुवन जन्म करण जीवनके परम शरण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शरणागततापहरण निगमागम गाई ॥ २ ॥
तेरी महिमा अपार कोई नहि पावे पार
ऋषि मुनि करकर बिचार अंत हार जाई ॥३॥
ब्रह्मा श्रीपति गणेश नारद शारद सुरेश
ध्यावत मनमें हमेश ब्रह्मानंद पाई ॥ ४ ॥

(ध्रुवपद ताल ४)

आदिदेव विश्वनाथ भक्तनके सदा साथ
पकड प्रभु मेरो हाथ दास मैं तुमारो ॥ १ ॥
सुर नर मुनि धरत ध्यान वेद वचन करत गान
तुंही सब गुणनिधान जगसर्जनहारो ॥ २ ॥
पाप हरण तेरो नाम सुख स्वरूप परम धाम
अचरज सब तेरे काम दयाकर निहारो ॥ ३ ॥
सकल जगतके अधार निर्गुण नित निराकार
ब्रह्मानंद सुन पुकार भवसागर तारो ॥ ४ ॥

(राग सारंग ठुमरी ताल ३)

प्रभु निर्विकार जग रचनहार । महिमा

---

१ इक चतुर नार करकर सिंगार० ४ भजन तक.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

अपार नहि मिलत पार । करकर विचार ।
मैं तो निशदिन हारो ॥ १ ॥ प्रभु०
सब विश्वभरण भवतापहरण । दीननके
शरण दुख दूर करण । मेरो जनम मरण ।
सब बंधन टारो ॥ २ ॥ प्रभु०
तुम जगत नाथ मैं हुं अनाथ । मेरो पकड
हाथ रख अपने साथ । धरुं चरण माथ ।
दया करके निहारो ॥ ३ ॥ प्रभु०
मेरी सुन पुकार करुं बार बार । तेरी आश
धार पडो आय द्वार । ब्रह्मानंद पार ।
भवसागर तारो ॥ ४ ॥ प्रभु०

(राग सारंग ठुमरी ताल ३)

हरिनाम सुमर तेरी जाय उमर । घडिपल छिन
भर नहि दिलसे विसार । सब शोच फिकर ।
नर मनसे विहाई ॥ १ ॥ हरि०
सुत मीत नार घर कारबार । जगकी बहार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दिन देख चार । कोई अंत बार ।
तेरे संग न सहाई ॥ २ ॥ हरि०
राजा वजीर रणशूर बीर । गुणिगण गभीर
नहि धरत धीर । कोई सिद्ध पीर ।
जग थिर न रहाई ॥ ३ ॥ हरि०
बिन प्रभुके भजन सब झूठ जतन । करके
थिर मन मेरो सुनले बचन । ब्रह्मानंद रटन ।
नित कर मनमांही ॥ ४ ॥ हरि०

(राग सारंग ठुमरी ताल ३)

आली नंदको लाल लोचन विशाल । गलफूलन
माल शोभे तिलक भाल । चले ललित चाल ।
नित बंसरी बजावे ॥ १ ॥ आली०
घनशाम वदन मुख चंद किरण । तन पीत
बसन मृदु मंद हसन । पग नूपुर धुन सुन ।
मन हरखावे ॥ २ ॥ आली०
अति विमल नीर जमुनाके तीर । कसे कमर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

चीर करे नाच धीर । संगमें अहीर ।
मिल रास रचावे ॥ ३ ॥ आली०
चली ब्रजकी नार करकर सिंगार । हरि छवि
निहार भुली सदन कार । ब्रह्मानंद पार ।
नहि मुनि जन पावे ॥ ४ ॥ आली०

(राग सारंग ठुमरी ताल ३)

देखो देखोरी लंगर मेरो रोकत डगर । मेरी
बंयरा पकर तलपटकी गगर । मैंतोजोडतहुंकर ।
नहि मानत बिहारी ॥ १ ॥ देखो०
सिर मुकुट धार गल पहनहार । संग बाल
डार नित करत रार । मैं तो गईरी हार ।
बडो ढीठ अनारी ॥ २ ॥ देखो०
सखी नागर नट ठाडो जमुनाके तट । कर
कपटझपट मेरो हरलियो पट । बंसिबटझटपट ।
चड गयोरी मुरारी ॥ ३ ॥ देखो०
धर मुरली अधर स्वर गात मधुर । मैं तो धुन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुनकर सुध गईरीबिसर । ब्रह्मानंद नजर ।
बीच बसो गिरधारी ॥ ४ ॥ देखो०

(ठुमरी खमाच)

रस भरी रे मोहन तेरी अखियां ॥ टेक ॥
डगर चलत पग धरत हरत मन करत रार
नहि माने लंगर कर रही पुकार सब सखियां १
चुनरी झटकमोरी गगरी पटकदीनी मटकचाल
गयोनंदकोलालआली अलक भालपर रखियां २
जमुनातट पनघट बंसीवट गावत मधुरी
बेन बजावत नाचत परम हरखियां ॥ ३ ॥
श्यामल तन मुख चंद्रकिरणसम ब्रह्मानंद
मुकुंद छबी मन मोहन नैन निरखियां ॥ ४ ॥

(ठुमरी खमाच)

मोकुं जाने दे जाने देरे कन्हैया ॥ टेक ॥
जमुनाको जलभरमैंतोचलीनिजघरठाडो मगपर
करे साररनिडर मैं तो कहुंगी जाय तोरी मैया १

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

काहेकोमुरारीमगरोकतहमारीतुमसारीव्रजनारी
हम गारी देदे हारी नहि मानतहै धेनुचरैया २
निपटअजानमांगेदानव्रजनारीनसेकंसकोनकरे
मान देखोरीबडो गुमानबलवान निठुरलडैया ३
नंदके दुलारे मेरे नैननके तारे हरि ब्रह्मानंद
बिहारे ब्रज अंदर सुंदर रूप धरैया ॥ ४ ॥

(ठुमरी खमाच)

दर्शन बिन जियरा तरसे ॥ टेक ॥
घडिघडि दिनदिन पलपल छिनछिन कलन
पडत नहि धरत धीर मन नीर नैनसैं बरसे १
विनतीहमारी अबसुनो गिरधारी तुम जावुंबलि
हारीतेरेचरणकमलतोपेवारीमेरीजानजिगरसे २
कीजियेसुनाईमेरीदेरक्योंलगाईअबऔरनसहाई
तेरेबिनायदुराई मुझेलीजियेबचाई निजकरसे ३
दूषण हमारो सब दिलसें बिसारो प्रभु ब्रह्मानंद
निहारो निज नैनन तारो भवसिंधु लहरसे ४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(ठुमरी खमाच)

दर्शन बिन तरसे नैना ॥ टेक ॥
सांवरीसूरतप्यारीवनमालगलधारीजबसेनिहारी
सारीतनकीविसारी सुधपडतनघडी पलचैना १
जमुनाके नीरेतीरे विमलसमीरे सखी धीरेधीरे
गावेनंदलालग्वालबाल संगमधुरमधुरस्वरबैना
शीश मुकुट कटि पीत विमल पट रास करत
नटवर बन कुंजन पग नूपुर धुन छैना ॥ ३ ॥
सुंदर अलक झलक श्रुति कुंडल ब्रह्मानंद
पलक नही विसरत सकल मनोरथ दैना ॥ ४ ॥

(राग कसूरी ताल ३)

दीनानाथ दयालसुने मैं भक्तन हितकारी ॥ टेक
हिरणकशिपने बांध भक्तको चाबुक जब मारी
थंभफोडकर प्रगट भये हरि नखसेकमरफाडी १
गजको पकडले चला ग्राह जब जलमें बलकारी

१ सदा रहो अमलस्त नामकी पीलेना बूटी । भजन ७.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

मार चक्र ग्रहका सिरकाटा गजकि बिपतटारी२
बीच सभाके नगन करी जब पांडवकी नारी
दुःशासनकी भुजा चीरको खेंच खेंच हारी ३
ध्रुवनें नामलिया जब दीना अचल धाम भारी
ब्रह्मानंद देर नहि कीजे अब मेरी वारी ॥ ४ ॥

(राग कसूरी ताल ३)

पियामिलनकेकाजआज जोगनबनजावुंगी ॥टे०
हारसिंगार छोडकर सारे अंग बिभूत रमावुंगी
सिंगी सेली पहर गलेमें अलख जगावुंगी ॥ १ ॥
काशी मथुरा हरिद्वार सब तीरथ नावुंगी
जाय हिमाचल करूं तपस्या तनको सुखावुंगी २
ऋषि मुनियोंके आश्रम जाकर खोज लगावुंगी
अंदर बाहिर सब जग ढूंढुं नहि अटकावुंगी ३
निशदिन उसका ध्यान लगाकर दर्शन पावुंगी
ब्रह्मानंद पिया घर लाकर मंगल गावुंगी ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(राग कसूरी ताल ३)

हरिनाम सुमर सुखधाम
जगतमें जीवन दो दिनका ॥ टेक ॥
पाप कपटकर माया जोडी गर्व करे धनका
सबी छोडकरचला मुसाफिर वासहुया बनका १
सुंदर काया देख लुभाया लाड करे तनका
छूटा श्वासबिखर गई देही ज्यों मालामनका २
जोबन नारी लगे पियारी मौज करे मनका
कालबलीका लगे तमाचा भूल जाय ठनका ३
यह संसार स्वपनकी माया मेला पलछिनका
ब्रह्मानंद भजनकर बंदे नाथ निरंजनका ॥४॥

(कसूरी ताल ३)

तेरी शरण पडा मैं आय नाथ
मोहे दे दर्शन प्यारा ॥ टेक ॥
गोकुल ढुंडी मथुरा ढुंडी विंदराबन सारा
काशीपुरी सकल फिर ढुंडी ढुंडा हरिद्वारा १

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

कोई वैकुंठ कैलास बतावे कोई सागर पारा
कोई कहे सब जगके भीतर व्यापक कर्तारा २
संत बतावें घटके मांही परगट उजियारा
कोई कहे वो अलख निरंजन सबसे है न्यारा ३
चतुर्भुजा पीतांबर सोहे शीश मुकुट धारा
ब्रह्मानंद मैं दर्शन पावुं जावुं बलिहारा ॥ ४ ॥

(कसूरी ताल ३)

तेरो जन्म मरण मिट जाय
हरिका नाम सुमर प्यारे ॥ टेक ॥
जगमें आया नरतन पाया भाग्य बडे भारे
मोह भुलाना कदर न जाना रेत रतन डारे १
बालापनमें मन खेलनमें सुख दुख नहि धारे
जोबन रसिया कामन बसिया तनमन धनहारे२
बूढा होकर घरमें सोकर सुने बचन खारे
दुर्बल काया रोग सताया तृष्णा तन जारे ३
प्रभु नहि सुमरा बीती उमरा काल आय मारे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्रह्मानंद विना जगदीश्वर कोन विपत टारे ४

(कसूरी ताल ३)

शरण पडेकी लाज आज
तुम राखो भगवाना ॥ टेक ॥
जप तप योग यज्ञ नहि कीने नहि तीरथ दाना
बिरथा बीत गई सब उमरा विषयन भरमाना १
सत संगतमें बैठ तुमारा किया न गुण गाना
भवसागरजल दुस्तर भारी कैसे तर जाना २
चौरासी लख जीव जूनमें पुन पुन भटकाना
तुमरे भजन विना नहि कबहुं होय मोक्षपाना ३
दीनदयाल दयाके सागर तुम सबगुणखाना
ब्रह्मानंद मैं दास तुमारो मुझे न विसराना ४

(कसूरी ताल ३)

तुम जाय बसे मोहन मथुरा
गोकुल कब आवोगे ॥ टेक ॥
मोरमुकुट पीतांबर माला गल पहरावोगे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

जमुनातटपर ग्वालनके संग धेनु चरावोगे १
मीठी धुनसें शाम मनोहर बेन बजावोगे
बृन्दावनकी कुंज गलिनमें रास रचावोगे ॥२॥
छिनछिन सखियनसें दधि माखन कब खावोगे
राधा प्यारी शोच करे मन फिर मिल जावोगे३
अखियां तरस रही दर्शनको कब दिखलावोगे
ब्रह्मानंद हमारे मनकी आश पुरावोगे ॥ ४ ॥

(राग रासडा)

हेरिभजन करोरे नर नारियांरे
मिटे जनममरणकी खुवारियांरे ॥ टेक ॥
मानुषतन दुर्लभ है भाई । भजन बिना बिरथा चलजाई । गयावकतनहिआवे दुजी वारियांरे१
बालापन खेलनमें जावे । जोबन कामकला मनभावे । बूढे तनमें लागे घणी बिमारियांरे २
यह संसार सराय तमाशा । मूरख करे भोगकी

१ जावुं जावुंरे सांवरिया तोपे वारणारे ६ तक.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आशा । सिरपेकाल खडा है करे तियारियांरे ३
सुतदारा धन मीत पियारे । कोई न जावे संग
तुमारे । ब्रह्मानंद जगतकी झूठी यारियांरे ४

(राग रासडा)

हरिभजन करे तो सुख पायगारे
नहि तो जनम जनम भटकायगारे ॥ टेक ॥
भवसागरमें नीर अपारा । हरिका नाम जहाज
सुखारा । जपे जो निश्चय धार पार लगायगारे १
मायाजाल बडाहै भारी । निकलनकी नहि दूजी
बारी । मानुषतन जबछूटे फिर पछतायगारे २
चार दिवसका जगमें डेरा । क्याकरता है मेरा
मेरा । खालीआयाथा फिरखाली जायगारे ३
सकलजगतकाकर्ता स्वामी । घटघटका प्रभुअंतर
यामी । ब्रह्मानंद सुमर नरदुख मिटायगारे ४

(राग रासडा)

हरिचरणकमल चित लावनारे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

फिर मानुषजनम नहि आवनारे ॥ टेक ॥
मैथुन नींदखानअरु पाना। यहसब जीवस्वभाव समाना। नरतनमें कुछकरले कर्म सुहावनारे १
गर्भवासमें किया करारा। अब क्यों प्रभुकानाम बिसारा। झूठे जग व्याहार देख भुलावनारे २
मंदिर महल अटारी डेरे। क्या करता है मेरे मेरे। चारदिवसका रहना आखिरजावनारे ३
तीरथदान बरत अरु पूजा। भजन समान उपाय न दूजा। ब्रह्मानंद विचार मोक्षपद पावनारे ४

(राग रासडा)

चलो चलो सखियां मिल जाइयेरे
सतसंगतमें हरिगुण गाइयेरे ॥ टेक ॥
सतसंगतमें लाभ घनेरा। जन्म जन्मका मिटे अंधेरा। परमेश्वरका दर्शन घटमें पाइयेरे ॥ १ ॥
सतसंगत महिमा अतिभारी। ऋषि मुनि वेद पुराण पुकारी। ज्ञान विवेक विचार सदा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मन लाइयेरे ॥ २ ॥ चलो०
करे हजार जतन जो कोई । सतसंगत विन
ज्ञान न होई । जप तप संयम साधन सफल
कराइयेरे ॥ ३ ॥ चलो०
पापी नीच मूढ नर नारी । सब सुधरें सत
संगत धारी । ब्रह्मानंद मनुज तन नही
गमाइयेरे ॥ ४ ॥ चलो०

(राग रासडा)

आवो आवो सखि बात बिचारियेरे
इस मनुषजनम को सुधारियेरे ॥ टेक ॥
जिम अंजलिका जावे पानी । दिनदिन उमरा
जाय विहानी । हरिका नाम सुमर कर काल
गुजारियेरे ॥ १ ॥ आवो०
स्वपनसमान जगत सब जानो । हर्ष शोक
मनमें नहि आनो । प्रभुका ध्यान सदा हिरदेमें
धारियेरे ॥ २ ॥ आवो०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

स्थावर जंगम जग नर नारी । परमेश्वरकी रचना सारी । ऊंच नीच सब मनसें भेद निवारियेरे ॥ ३ ॥ आवो०

सतगुरु शरण गहो दृढ मनमें । परब्रह्म खोजो निज तनमें । ब्रह्मानंद सकल भवबंधन टारियेरे ॥ ४ ॥ आवो०

(राग रासडा)

सुनो सुनो सखी ज्ञान विचारणारे भवसागरसें पार उतारणारे ॥ टेक ॥

पांच तत्त्वकी देह बनाई । क्षणभंगुर जड रूप कहाई । सुख दुख जीवन मरण धर्म तन कारणारे ॥ १ ॥ सुनो०

ईश्वर अंश जीव अविनाशी । चेतनरूप परम सुखराशी । निर्गुण निर्मल अचल सदा निर्धारणारे ॥ २ ॥ सुनो०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घटजल सागरजल नहि दोई । ईश्वर जीव
भेद नहि कोई । व्यापक पूरण ब्रह्म अखंड
निहारणारे ॥ ३ ॥ सुनो०

सीपमांहि जिम रजत निहारा । जिम
मृगतृष्णा जलकी धारा । ब्रह्मानंद झूट सब
जगत पसारणारे ॥ ४ ॥ सुनो०

(राग जिला ठुमरी ताल ३)

दे दर्शन[1] मोहे आज सांवरिया
विन दर्शन मन धीर न धरिया ॥ टेक ॥
सांवरी सुरत मेरे दिलमें समाई । खान पान
तन सुध बिसराई । कलन पडत निशदिन
पल घडिया ॥ १ ॥ दे द०
जिम चातक बर्षाविन होई । हरिके मिलन बिन

---

१ गोविंदभजनकी येहि तेरी विरिया ५ तक.
७ ग्र. अ.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

मम गति सोई । तडफ रही विननीर
मछलिया ॥ २ ॥ दे द०
मेरे अवगुण नाथ बिसारो । कर किरपा मम
धाम पधारो । जनम जनमकी मैं दास
तुमरिया ॥ ३ ॥ दे द०
ब्रह्मानंद दरसकी प्यासी । करुणा करो जान
निजदासी । बारबार येहि मांग हमरिया ॥४॥

(जिला ठुमरी ताल ३)

हरिका भजन करलेरी मेरी मतिया
भजनबिना न मिलेरी शुभ गतिया ॥ टेक ॥
क्या विषयोंमें फिरत भुलानी । अंतकाल
सब नरकनिशानी । जावत बीत काल दिन
रतिया ॥ १ ॥ हरि०
जग दुर्लभ मानुषतन पाया । हरिके भजन बिन
काम न आया । जिम निष्फल दीपक बिन
बतिया ॥ २ ॥ हरि०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रीतम है तेरे तन अंदर । क्या खोजे बन पर्वत कंदर । उलट देख घटमांहि सुरतिया ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद बचन हितकारी । छोड जगतकी झूठी यारी । हरिचरणनमें करो नित रतिया ॥ ४ ॥ हरि०

(जिला ठुमरी ताल ३)

अब तो सुनो प्रभु अरज हमरिया
शरण पडा मैं आय तुमरिया ॥ टेक ॥
सकल जगतके पालक स्वामी घटघटके प्रभु अंतरयामी । तुम सागर जगजीव लहरिया॥१॥
पापहरण तुझ नाम निरंजन मायामोहजाल-भयभंजन । गावत सुरनर मुनिमनधरिया ॥२॥
मैं मतिमंद सकल गुणहीना जपतप योग भजन नहि कीना । दीन जानकर फेर नजरिया ॥३॥
ब्रह्मानंद कहे कर जोरी भक्तिदान दीजे प्रभु तोरी । जन्ममरणदुख संकट हरिया ॥४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

(जिला ठुमरी ताल ३)

अब तो सुमर नर रामचरणको
जन्ममरणदुख दूर करणको ॥ टेक ॥
चौरासी लख भटकत आया जगमें दुर्लभ
नरतन पाया। क्यों खोवे इस परम रतनको॥१॥
श्रवण सुने नहि नैन न सूझे वृद्ध भया कोई
बात न बूझे। क्या विरथा भटकावत मनको॥२
आज गया जैसे कल जावे बीता वकत फेर
नहि आवे। करले बेग विचार जतनको ॥३॥
ब्रह्मानंद कहे हित बाणी प्रभुकी शरण
पडोरे प्राणी। भवसागरजल पार तरणको ॥४॥

(जिला ठुमरी ताल ३)

अब तो तजो नर रति विषयनकी
करले फिकर परलोकगमनकी ॥ टेक ॥
बालपणा जिम गई जुवानी सुंदर काया भई
पुराणी। तदपि मिटे नहि लालच मनकी ॥१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जरा दूत यमराज पठाया रोग फौज संग लेकर आया। मूरख आश करे क्या तनकी॥२॥ स्वारथ हेत करें सब प्रीति सकल जगतकी है यह रीति। छोड ममत धन धाम सुतनकी॥३॥ ब्रह्मानंद वचन सुन लीजे निशिदिन हरि-चरणन चित दीजे। पाश कटे तेरी जनम-मरणकी ॥ ४ ॥ अब तो०

(गजल ताल ३)

तेरी शरणमें आयके फिर
आश किसकी कीजिये ॥ टेक ॥
नहि देख पडताहै मुझे दुनियामें तेरी शानका
गंगाकिनारे बैठके किम कूपका जल पीजिये १
हरगिज नही लायक हुं मैं गरचे तेरे दरबारका
मेरी खताको माफ कर दीदार अपनादीजिये २
पतितपावन नाम सुनके मैं शरण तेरी पडा

१ शामकी उधो जुदाई अब सही जाती नही ७ तक.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

सफल कर इस नामको अपना मुझे करलीजिये३
मिलता है ब्रह्मानंद जिसके नाम लेनेसे सही
ऐसे प्रभुको छोडकर फिर कौनसे हित कीजिये४

(गजल ताल ३)

जो भजे हरिको सदा
सोई परमपद पायगा ॥ टेक ॥
देहके माला तिलक अरु छाप नहि किसु कामके
प्रेमभक्तिके विना नहि नाथके मन भायगा १
दिलके दर्पणको सफा कर दूर कर अभिमानको
खाक हो गुरुके कदमकी तो प्रभु मिलजायगा
छोड दुनियाके मजे सब बैठकर एकांतमें
ध्यानधरहरिके चरणका फिर जनम नहिआयगा
दृढ भरोसा मनमें करके जो जपे हरिनामको
कहताहै ब्रह्मानंद ब्रह्मानंद बीच समायगा ॥४॥

(गजल ताल ३)

दे पिया दर्शन मुझे तेरा वियोग सतारहा ॥टेक॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

छोडकर घरमें मुझे तुम जा बसे परदेसमें
यह मेरा दिनचारका जोबन मुफतमें जारहा
खाना व पीना सोवना घर कामकाजभुलादिया
दिनरात मन मेरा तेरे मिलनेकी आश लगारहा
तेरा कहा माना नही यह भूल मेरी है सही
अवतो दयाकर माफकर दिल है मेरा पछतारहा
जानकर दासी सदा अपनी मुझे मिलजाइये
ब्रह्मानंद शरण पडा करजोड अर्ज सुनारहा ४

(गजल ताल ३)

मानले कहना हमारा मनकी लालच छोडदे॥टे०
चारदिनकी जिंदगी आखिर यहांसे जायगा
सब तरफसे दिलहटा हरिके चरणमें जोडदे॥१
यह सबी स्वारथभरे जिनको पियारे जानता
भजनकर प्रभुका सदा सबसे परीती तोडदे॥२
बालकपणा जोबन गया बूढा हुया मरणे लगा
अवतोमूरखचेतकरविषयोंसे मनको मोडदे॥३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

यह तेरा मानुषजनम पलपलमें बीता जारहा
ब्रह्मानंद मिलेनही फिर जो तुं लाखकरोडदे॥४

(गजल ताल ३)

देखले नजरोंसे प्यारे ईशका दरबार है ॥ टेक॥
भूमी गलीचा है बिछा आकाश तंबु सुहावना
रवि चंद दीपक रोशनी सब वृक्ष बाग बहारहै१
नदियां फूवारे चल रहे पंखा पवन झूले सदा
सागर सरोवर शोभते सब पर्वतोंकी दिवारहै २
न्यायकारी आप ईश्वर जीवलोक सभाभरी
राजा वा रंक समानसे सुनतासवीकी पुकारहै३
स्वर्ग भूमि इनाम सुंदर नरक जेल जगा बनी
ब्रह्मानंद मिले सबी फल कर्मके अनुसारहै ॥४॥

(गजल ताल ३)

ज्ञान दे गुरु देवने मेरे दिलका
भरम मिटादिया ॥ टेक ॥
जाताथा देखनको जिसे मथुरा बनारस द्वारका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सोई चेतनदेवको घटमें मेरे दिखलादिया ॥१॥
इस नजरसें जगतको मैं देखताथा जुदा जुदा
जीवजून अनेकमें मुझे एकरूप बतादिया ॥२॥
जगत साचा मानके फिरताथा मैं भटका हुआ
स्वपनेसमानविचारके सब नाशरूपजतादिया ३
सुखदुःख भूख पियास जीवनमरणधर्म शरीरके
ब्रह्मानंदस्वरूपको करके जुदा दरसादिया ॥४॥

(भजन राग–मारवाडी)

राजा दशरथके महलोंमें
जन्म लिया श्रीरामजी ॥ टेक ॥
माता कौशल्याके जाये सुंदर बालकरूप सुहाये
भूमीभारहरणको आये मिलकर सखियां गावें
गीत घरघर आठों यामजी ॥ १ ॥ राजा० ॥
विश्वामित्र संगले आया उसकापूरणयज्ञकराया
शंकरधनुष मरोडगिराया मारासबराजोकामान

१ माता सीताकी गोदीमें हनुमत डारी मूदडी ५ तक.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

जनकसुता सुखधामजी ॥ २ ॥ राजा० ॥
दशरथवचन मान रघुराई वनकोगये संगलेभाई
रावण सीता गई चुराई हनुमत जाय जलाई
लंक कीनो पूरणकामजी ॥ ३ ॥ राजा० ॥
बीच समुंदर पुल बनवाई लंकाजाकरकरीलडाई
राक्षससेनां मार गिराई देकर राज्य बिभीषण
आये अवधपुरी विश्रामजी ॥ ४ ॥ राजा० ॥

(भजन राग–मारवाडी)

देखोनंदमहरकेघरमें प्रगटेकृष्णमुरारजी॥टेक॥
मथुरामातदेवकीजायेगोकुलयशुमतिपुत्रकहाये
धर्महेत अवतार धराये गोपी गोपबाल सब
मिलकर गावें मंगलचारजी ॥ १ ॥ देखो० ॥
दैत्यबकासुरकोधरमाराकालीनागनाथकरडारा
अपने करपर गिरवरधारा खेंचे कंसराजके केश
डारा धरणी मारजी ॥ २ ॥ देखो नंद० ॥
जमुनातटपर धेनु चराई वृन्दावनमें रास रचाई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्वारानगरी जाय बसाई मित्रसुदामामहलरचाये
भक्तनके हितकारजी ॥ ३ ॥ देखो नंद० ॥
वनके अर्जुनके रथवाही कौरवसेना नाश कराई
यादवकुल परभास खपाई प्रभुजी आप पधारे
धाम भूमीभार उतारजी ॥ ४ ॥ देखो नंद० ॥

(भजन राग–मारवाडी)

प्रभुजीराखोमेरीलाज शरणपडीहुं तेरियां ॥ टेक
दुष्ट दुशासन भुजा पसारे मेरे तनसे चीरउतारे
पांडवबैठे सन्मुखसारे चारों तरफ खडे सबलोक
वीच सभाके घेरियां ॥ १ ॥ प्रभुजी० ॥
तुम हो दीनबंधु अविनाशी सब जगपूरणघटघट
वासी तुमरोनामपरमसुखराशी निशदिनभक्त-
नके हितकार सुनियेबिनतिमेरियां ॥२॥ प्रभु०
अबतो सकलजगतकेमांही मेरातुमही एकसहाई
दूजा कोई सहायक नाहीं मेरी बेग खबरलो नाथ
कहां लगाई देरियां ॥ ३ ॥ प्रभुजी०
भीषम द्रोण कर्ण बलधारी सबकी लोभहेतमति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

मारी धर्म अधर्म न करें बिचारी ब्रह्मानंद सदा
मैं तेरे चरणकमलकी चेरियां ॥ ४ ॥ प्रभु०

(भजन राग–मारवाडी)

जागो जागोरे मुसाफिर उठकर
करो तियारियां ॥ टेक ॥
सोते सकली रैनबिहाई वेला दिनचढनेकी आई
तेरे नैनन नींद समाई अब तो चेत पडा क्या
गाफिल टांग पसारिया ॥ १ ॥ जागो जागो०
यहतो है परदेशबिगाना इसमें तेरा नहीठिकाना
तूं क्यो भूला फिरे दिवाना तैने किसविध अपने
घरकी याद बिसारिया ॥ २ ॥ जागो० ॥
तुझको जानादूरनगरमें तुंक्योंअटकाबीचसफरमें
तेरे साथी पहुंचे घरमें तैने आलसके बशहोकर
बिरथा रात गुजारिया ॥ ३ ॥ जागो जागो०
तेरा मारग बहुतकठिनहै तेरेपासनहीकुछधनहै
करले शोच बिचार जतनहै ब्रह्मानंद सुमर जग-
दीश्वर बिपता मेटे सारियां ॥ ४ ॥ जागो०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(भजन राग–मारवाडी)

अब तो सुनिये मेरी नाथ
बिनती दीनदयालजी ॥ टेक ॥

तुमनेसकल जगत उपजाया नानाविध सबजीव बनाया अचरज प्रबल तुमारी माया तेरो अंत न आवे पार पूरणरूप बिशालजी ॥१॥ अब तो०
जगमें मानुष देही पाई आकर करीन कछुकमाई बिरथाविषयोंबीचगमाईकीनोनहीतुमारोध्यान फसिया मायाजालजी ॥ २ ॥ अब तो० ॥
भवसागरमें नीर अपारा मैंतो डूबरहा मझधारा मेरा कोइ न और सहाराकरके करुणा अपनीबेग लीजे मुझे निकालजी ॥ ३ ॥ अब तो० ॥
जोजनशरणतुमारीआवेनिश्चयमोक्षधामकोजावे फिरकर गर्भवासनहि पावे ब्रह्मानंद तुमारो दास जान करो प्रतिपालजी ॥ ४ ॥ अब तो० ॥

(गजल ताल ३)

दयाकी नजरोंसें देख मुझको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

मैं नाथ तेरी शरणमैं आयो ॥ टेक ॥
समस्त दुनियांका एक मालिक तुं ही है पालक चराचरोंका । बना है तेरा जगत तमाशा मैं देख करके तुझे भुलायो ॥ १ ॥ दया०
संसारसागर गंभीर पानी नजर न आवे मुझे किनारा । न संग साथी सहायकारी मैं बीच लहरोंके हुं डुबायो ॥ २ ॥ दया०
बिछा है मायाका जाल भारी न कोई निकलनकी है दुवारी । छुडा दे मुझको पसार भुजको मैं जन्मजन्मोंसे हुं फसायो ॥ ३ ॥
नही है तेरे समान दूजा जगतमें सारेमें है दयालु । ब्रह्मानंदा बचाले मुझको मैं काल चक्करसें हुं डरायो ॥ ४ ॥ दया०

(गजल ताल ३)

जिधरको देखुं जहांको देखुं
तुं एक मुझको दिखा रहा है ॥ टेक ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जिमींपे तुं है गगनमें तुं है पवनमें पानी
अगनमें पूरण । वो चांद सूरज सितार
विजलीमें तेज तेरा समा रहा है ॥ १ ॥
नदी समुंदर पहाड जंगल न खाली तुझसें
जगा है कोई । चरा अचरमें वो नार नरमें
स्वरूप तेरा सुहा रहा है ॥ २ ॥
मिले न आदि न अंत मुझको न मध्य तेरा
दिशामें चारों । समस्त दुनियाको तुं निरंतर
कलासें तेरी चला रहा है ॥ ३ ॥
न बेद ग्रंथा न सर्व पंथा ऋषी मुनीश्वर
न पार पावें । ब्रह्मानंदा परम आनंदा जगतमें
सारेमें छा रहा है ॥ ४ ॥

(गजल ताल ३)

जो[1] गर्भका इकरार था
तुमे याद होके न याद हो ॥ टेक ॥

---

१ जो हमसे तुमसे करार था तुमे याद हो की न याद हो ४ भजनतक,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

उलटे बदनसें लटकना फिर लख चौरासी भटकना । तब सोच कर सिर पटकना तुमे याद होके न याद हो ॥ १ ॥ जो०
पिछले जनमका संभारना सब कर्मका वो विचारणा । फिर ईश ईश पुकारना तुमे याद होके न याद हो ॥ २ ॥ जो०
विषयोंसे दिलको हटावना हरिके चरणमें लगावना । किसी जीवको न सतावना तुमे याद होके न याद हो ॥ ३ ॥ जो०
उस बातका बिसरावना दुनियांकी मौज उडावना । ब्रह्मानंद फिर दुख पावना तुमे याद होके न याद हो ॥ ४ ॥ जो०

(गजल ताल ३)

जो ईशका उपकार था
तुमे याद होके न याद हो ॥ टेक ॥
करी गर्भमें तेरी पालना फिर दुखसें बाहिर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निकालना। कुचियोंमें दूधका डालना तुमे याद होके न याद हो ॥ १ ॥ जो०

सूरज वा चांद सितार है जल पवन भोग अपार हैं। तेरे वासते यह बहार है तुमे याद होके न याद हो ॥ २ ॥ जो०

नरजन्म यह बहु कामका तुझको दिया बे दामका। अब भजन उसके नामका तुमे याद होके न याद हो ॥ ३ ॥ जो०

हरिके भजन बिन बेवफा तुझको मिले न कबी नफा। ब्रह्मानंदका कहना सफा तुमे याद होके न याद हो ॥ ४ ॥ जो०

(गजल ताल ३)

जो नामका परताप है
तुमे याद होके न याद हो ॥ टेक ॥

जब दैत्य चाबुक मारिया प्रहलाद नाम उचारिया। नखसे असुरको विदारिया तुमे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

याद होके न याद हो ॥ १ ॥ जो०

ध्रुवको पिता निकला दिया हरिनाममें मन लादिया । उसे अचल धाम दिलादिया तुमे याद होके न याद हो ॥ २ ॥ जो०

गजराजपे बिपता पडी मनमें जपा जो हरी हरी । ग्रह मारके मुकती करी तुमे याद होके न याद हो ॥ ३ ॥ जो०

द्रुपदीकी लाज उतारिया जब कृष्ण कृष्ण पुकारिया । ब्रह्मानंद चीर वधारिया तुमे याद होके न याद हो ॥ ४ ॥ जो०

(गजल ताल ३)

जो मौतका दिन आयगा
तुमे याद होके न याद हो ॥ टेक ॥

दुनियामें दिलको मिलादिया हरिके भजनको भुलादिया । मानुष जनमको रुला दिया तुमे याद होके न याद हो ॥ १ ॥ जो०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जब रोग आया सतायगा खटियामें तुझको लिटायगा। कोई कार काम न आयगा तुमे याद होके न याद हो ॥ २ ॥ जो०

सुत मीत बांधव नारियां धन माल महल अटारियां। तेरी छूट जायगी सारियां तुमे याद होके न याद हो ॥ ३ ॥ जो०

यमदूत लेकर जायगा तुझे नरक बीच गिरायगा। ब्रह्मानंद फिर पछतायगा तुमे याद होके न याद हो ॥ ४ ॥

(गजल राग पहाडी)

कैसी मधुर शाम आज बंसी बजाई तैने ब्रज ग्वालनकी सबी होश भुलाई तैने ॥ टेक

जमुनाके तीर बिमल नीर बडी टेर सुनाके तजके घर बार गोप नार बुलाई तैने ॥ १ ॥

सखियनके संग रंग नाच करे कुंजनमें

१ मेरी सुध लीजिये ओ वंसीके बजानेवाले ४.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

बृंदाबन पास सरस रास रचाई तैने ॥ २ ॥
सुनके मधुर गान सुर बिमान चडे आयरहे
मुनियोंका छुटा ध्यान अजब तान सुनाई तैने ३
बनके मृग पक्षी सबी मौन हुये धुन सुनके
ब्रह्मानंद चंद किरण रात सुहाई तैने ॥ ४ ॥

(गजल राग पहाडी)

राम तेरा नाम सदा याद दिलाना मुझको
दुनियाके कारबारमें निशिदिननभुलानामुझको
जान दयासिंधु तुझे दीनन हितकार सदा
शरण तेरी आयपडा दास बनाना मुझको ॥१॥
नाम पतितपावन जग बीचमें है तेरा
जन्म जन्म पापके बंधनसे छुडाना मुझको॥२॥
मोहनदीनीर भरा तीर नजर ना आवे
डूब रहा धार प्रभु पार लगाना मुझको ॥ ३ ॥
तेरे बिना कोई नही विश्वमें पालक मेरा
ब्रह्मानंद चरणकमल बीच लगाना मुझको ॥४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(गजल राग पहाडी)

कैसे करूं मैं तो प्रभु आज बडाई तेरी
ऋषिमुनियोंने गति जान न पाई तेरी ॥ टेक
भूमि रवि चंद गगन सागर गिरिवर तारे
अचरज सब देख पडे विश्व बनाई तेरी ॥१॥
जलके कतरेसे बदन खूब बनाया तैंने
वर्णन कर कौन सके नाथ सफाई तेरी ॥२॥
सुर नर पशु पक्षी सबी जीव हैं बालक तेरे
चौदें भुवन बीच सबी वस्तु जमाई तेरी ॥३॥
सकल जगत बीच तेरा रूप प्रभु है पूरण
ब्रह्मानंद मनमें सदा आश लगाई तेरी ॥४॥

(गजल राग पहाडी)

मैं तो तेरा दास प्रभु मुझको भुलाया कैसे
दीनबंधु दीनानाथ नाम धराया कैसे ॥ टेक ॥
गजको जल बीच जबी ग्राहने आकर पकडा
जाय पलक बीच कठिन बंध छुडाया कैसे ॥१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

बांधके प्रल्हादको जब थंभसे चाबुक मारा
बनके नरसिंह दैत्य फाड गिराया कैसे ॥ २ ॥
द्रुपदीकी लाज सभा बीच लगे लेन जबी
खेंच खेंच हार गये चीर बढाया कैसे ॥ ३ ॥
ध्रुवनें बन जाय जपा नाम तुमारा दिलसे
ब्रह्मानंद करके दया राज्य दिलाया कैसे ॥४॥

(गजल राग पहाडी)

ईश तेरा रूप मुझे अब तो दिखा दे प्यारे
दिलमें लगी आश मेरी प्यास मिटा दे प्यारे
ढूंडता फिरता हुं तुझे मैं तो सदा बनबनमें
कौन जगा खास तेरा वास बता दे प्यारे ॥१॥
कहते हैं मुनिराज सबी विश्वमें तुं है पूरण
घटघटमें तेरी जोतका दर्शन तो दिलादे प्यारे २
सुर नर पशु जीव तेरे अंश सबी हैं जगमें
भेदके पडदेको मेरे दिलसे हटा दे प्यारे ॥३॥
तेरी महिमाका सबी वेदवचन गान करें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्रह्मानंद नाम तेरा दिलमें बसा दे प्यारे ॥४॥

(जिला रेखता ताल दादरा)

अये राम तेरे नामका मुझको अधार है
अंधेको जैसे लाकडी तनका सहार है ॥ टेक
तप योग यज्ञ और कर्म बनपडे नही
कलियुगमें तेरे नामकी महिमा अपार है ॥१॥
लिखनेसे रामनामके जलमें शिला तरी
कैसे मनुज न जा सके भवसिंधु पार है ॥२॥
शबरीके पादनीरसे सरवर विमल हुया
छूनेसे चरणके तरी गौतमकी नार है ॥ ३ ॥
करके भरोसा मनमें राम नाम सुमर ले
ब्रह्मानंद मिटे जन्म मरण बार बार है ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

शरण पडेकी लाज प्रभु राख लीजिये

---

१ ब्रजराज आज सांवरो बंसी बजा गया २१ भजनतक.

२ भीलनी.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

करके दया दयाल गुना माफ कीजिये ॥ टेक
गरचे कपूतहुंपिता न दूर कर मुझे
चरणकमलमें आसरा मुझको भी दीजिये ॥१॥
तेरी खुशीका काम कोई बन पडा नही
अपने बिरदको देख जरा दिलमें रीझिये ॥ २ ॥
तेरे बिना पालक मेरा नही है दूसरा
स्वारथके सबी लोक हैं किसपे पतीजिये ॥३॥
दिलबीच लगरही सदा दर्शनकी लालसा
ब्रह्मानंद मेरी बेनती अब तो सुनीजिये ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

ईश्वर तेरे दरबारकी महिमा अपार है
धंदा न सके जान तेरा क्या विचार है ॥ टेक
पृथिवी जलोंके बीचमें किस आसरे खडी
सूरज वा चांद घूमते किसके अधार हैं ॥ १ ॥
सागर न तीर लांघते सूरज दहे नही
चलती हवा मर्यादसे किसके करार हैं ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भूमी बिछा है बिस्तरा नदियोंमें जल भरा
चलती हवा दिन रातमें जीवन अधार है ॥३॥
फल फूल अन्न शाक कंद मूल रस भरे
घृत दूध दहीं खान पानकी बहार है ॥ ४ ॥
पिता है तुं दयालु तेरे बाल हम सबी
ब्रह्मानंद तुझे धन्यवाद बार बार है ॥ ५ ॥

(रेखता ताल दादरा)

ईश्वर दयानिधान दया दासपे करो
दीननका नाथ जान तेरी शरणमें पडो ॥ टेक
दुनियाकी सैरमें प्रभु तुझको भुलादिया
करके कसूर माफ मेरे हाथ सिर धरो ॥ १ ॥
किये अनेक पाप पेटभरण काजमें
सब दोषको बिसार प्रेमकी नजर भरो ॥ २ ॥
विषयोंके लोभसे फसा मायाके जालमें
बंधनको मेरे काट सबी पाप परिहरो ॥ ३ ॥
भवसिंधुमें पडाहुं मुझे पार कीजिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

ब्रह्मानंद करे अर्ज तेरे द्वारपे खडो ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

ईश्वर तेरा स्वरूप विश्वका अधार है
तेरे हुकमसे होरहा सब कारबार है ॥ टेक ॥
सूरज वा चन्द्रमा सदा उगते हैं नेमसे
दिनरात घडी पलक कालका शुमार है ॥ १ ॥
पडती है धूप शीत वृष्टि वकतपे सदा
फलते हैं वृक्ष लता अपनी अपनीवार है ॥२॥
बालक जुवान वृद्धपणा होत कालसे
मरणा न देहका कोई सके निवार है ॥ ३ ॥
तप योग यज्ञ जतन सबी कठिन हैं बडे
ब्रह्मानंद जगत बीच तेरा भजन सार है ॥४॥

(रेखता ताल दादरा)

अये ईश दासपे दया करोगे या नही
सब पाप तापको मेरे हरोगे या नही ॥ टेक ॥
शरणमें तेरी आनपडा जान आसरा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सिरपे मेरे अब हाथको धरोगे या नही ॥१॥
भवसिंधु है अपार पार तीर दूर है
पकडके बांहको मेरी तरोगे या नही ॥ २ ॥
व्यापक है तेरा रूप सबी विश्वमें भरा
हिरदेमें मेरे आयके विचरोगे या नही ॥ ३ ॥
जावुं कहां मैं छोड तुझे दूसरी जगा
ब्रह्मानंद प्रेमकी नजर भरोगे या नही ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

अये ईश मेरी बेनती अब तो सुनो सही
दिन बीत गया बातमें अब रात आगई ॥टेक॥
मिली मनुजकी देह तेरे भजनके लिये
घर काम काज बीच तेरी याद ना रही ॥१॥
बालक था फिर जुवान हूया बिरध होगया
मनकी मिटी न आश होत है नईनई ॥ २ ॥
आयाथा लाभके लिये दुनियाकी सफरमें
चोरोंने लिया लूट पास खरचभी नही ॥ ३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

जनममरणके फेरमें पडाहुं मैं सदा
ब्रह्मानंद काटो फंद नाथ देरियां भई ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

अये विश्वपति नाथ पकड हाथ हमारा
शरणमें पडा आन तेरो जान सहारा ॥ टेक ॥
कालकी नदिया जो मोहनीरसे भरी
मद काम क्रोध लोभ वसें ग्राह अपारा ॥१॥
सब देव दनुज मनुज जीव जात हैं बहे
तेरी दयाविना न मिले पार किनारा ॥ २ ॥
क्षणभंग है शरीर मर्त्यलोकमें सही
मायाके जालमें फसाहै जीव विचारा ॥ ३ ॥
तुमने रचा है विश्व तुंही पालना करे
ब्रह्मानंद तेरे नाम बिना झूठ पसारा ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

अये ईश तेरा नाम सर्व पापहरण है
भवसिंधुमें पडे हुयेको पार तरण है ॥ टेक ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कारण समस्त बिश्वका धारण करे सदा
सब जीव जातका प्रभु तुं एक शरण है ॥ १ ॥
तेरे बिना खाली नही जगा है जगतमें
घट घटमें तेरी जोतका परकाश करण है ॥२॥
तेरे संकल्प से बनी रचना नई नई
सबका तुंही पिता दयाल विश्वभरण है ॥ ३ ॥
तेरे कृपाकटाक्षसे दुख दूर हों सबी
ब्रह्मानंद मोक्ष धाम तेरा विमल चरण है ॥४॥

(रेखता ताल दादरा)

अये ईश मेरी बेनतिको मान मान मान
तेरे चरणका दास मुझे जान जान जान ॥ टेक
महिमा तेरी अपार नही पार वार है
सब वेद ग्रंथ पंथ करें गान गान गान ॥ १ ॥
व्यापक है तेरा रूप सबी विश्वमें सदा
जाने न कोई जीव बिना ज्ञान ज्ञान ज्ञान ॥२॥
मालिक सबी जहानका पालक भी है तुंही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

मुनिराज तेरा धरें सदा ध्यान ध्यान ध्यान ॥३॥
दाता तेरे समान जगतमें न दूसरा
ब्रह्मानंद तेरी भक्ति करो दान दान दान ॥४॥

(रेखता ताल दादरा)

अये ईश तुझे नमसकार बार बार है
सब जगत बीच एक तेरा रूप सार है ॥ टेक ॥
कैसे रची है विश्व कौनसे सामानसे
कोई न सके जान तेरा कारबार है ॥ १ ॥
भूमी समुद्र चांद सूर्य गगन गिरि नदी
सब अचर चर जहानका तुंही अधार है ॥ २ ॥
सकल जगतके बीचमें बाहिरभी है भरा
मिले न तेरा ऊंच नीच अंतपार है ॥ ३ ॥
तेरी सहायतासे सबी जीव जी रहे
ब्रह्मानंद तेरा नाम मोक्ष धाम द्वार है ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

अये ईश तुझे नित्य धन्यवाद हमारा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सब विश्वका तुंही है प्रभु एक अधारा ॥ टेक
तुझने दिया दयाल हमें देह मनुजका
सब जीव जूनसें बडा है प्राण पियारा ॥ १ ॥
सब इंद्रियां हमारी बडी कुशल काममें
हमरे लिये रचा है विषयभोग नियारा ॥ २ ॥
भूमी अगन समीर नीर गगन तारका
रविचंद्र सबसें दे रहे हो हमको सहारा ॥ ३ ॥
पापी हैं हम बडे जो तेरा नाम ना जपें
ब्रह्मानंद करो माफ बाल जान तुमारा ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

शंकर तेरी जटामें चले धार गंग है
उठते हैं बारबार वारिके तरंग है ॥ टेक ॥
गलेमें मुंडमाल है कानोंमें हैं कुंडल
खानेको कंद मूल फल पीनेको भंग है ॥ १ ॥
मृगछाल कमरमें कसी वृषराजपे चडे
मस्तकमें चंद्रकी कला बिभूति अंग है ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

डमरु त्रिशूल हाथमें गिरिजा है संगमें
त्रिनेत्र भुजा चार कंठ नील रंग है ॥ ३ ॥
कैलासमें निवास है गण साथमें रहें
ब्रह्मानंद अपने दासके सदाही संग है ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

अये कृष्ण तेरे नामपे क़ुर्बान हो रही
सूरतको तेरी देख परेशान होरही ॥ टेक ॥
सिरपर वो मोरकी मुकुट कानोंमें हैं कुंडल
वो अधर बंसरीकी मधुर तान हो रही ॥ १ ॥
फूलोंकी माल है गलेमें तिलक भाल है
मुखचंद मंदहाससें बेजान हो रही ॥ २ ॥
नही खानपानकी सुधी न लोकलाज है
तेरे दीदारके लिये हैरान हो रही ॥ ३ ॥
न भूलिये मुझे दिननके नाथ तुम सुने
ब्रह्मानंद तेरे दरकीमें दरबान हो रही ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(रेखता ताल दादरा)

ब्रजराज तेरे काज गई लाज हमारी
वंसीकी सुनी आज जो अवाज पियारी ॥ टेक
संगमें हैं ग्वालबाल नंदलाल सांवरो
जमुनाके आस पास रची रास बिहारी ॥ १ ॥
सिर मोरमुकुटधार गले हार पहनके
करते हैं नाच रंग सखासंग मुरारी ॥ २ ॥
दे देके मधुर तान करे गान मनोहर
सुनके चली ब्रजनार सदन कार बिसारी ॥३॥
हरिका मुखारविंद देख चंदकी छबी
ब्रह्मानंद मन आनंद भई गोपकुमारी ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

अये राम तेरा नाम परमधाम दुवारा
लेता हूं आठ याम और काम बिसारा ॥ टेक
दुनियांके झूठ कारबार सार है नही
सुत भाई बंधु नार न हितकार हमारा ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

शरणमें पडा आन धरूं ध्यान चरणका
प्रभु दीजे भक्तिदान दास जान तुमारा ॥ २ ॥
दया करो दयाल विश्वपाल अब सही
हरो मायाका जाल मिटे काल पसारा ॥ ३ ॥
तेरे दरसकी प्यास मेरी आश पूरिये
ब्रह्मानंद करो नाश मोहपाश अपारा ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

अये राम तेरी शाम छबी दिलमें बस रही
मुखचंदसे सदा मधुर सुधा बरस रही ॥ टेक
सिरपे सुवर्णका मुकुट रतन जडा हुया
कानोंमें मकर कुंडल मंद मंद हंस रही ॥ १ ॥
गल मोतियोंकी माल तिलक भालमें लगा
मणियोंकी मेखला सुंदर कटीमें कस रही ॥२॥
हाथोंमें धनुष बाण है तन पीत पट धरे
शुभ वाम अंगमें जनकसुता विलस रही ॥ ३ ॥
भरतके हाथ छत्र है लछमन चमर करे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्रह्मानंद मेरी जान दरसको तरस रही ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

नरसिंघ तेरा रूप मेरे दिल समा रहा
व्यापकपणा जगमें तेरा सबको बता रहा ॥ टेक
नरका आकार संगमें मृगराजकी छबी
निकलके थंभ बीचसें गर्जन सुना रहा ॥ १ ॥
बिजलीसी जीभकी छटा आंखें अगन भरी
धरणीपे दैत्यराजको नखसें गिरा रहा ॥ २ ॥
भगतकी करी पालना देवनका दुख हरा
शरणागतोंकी बेनतीका फल दिखा रहा ॥३॥
सुमरण करे जहां कोई तुं है उसी जगा
ब्रह्मानंद तेरे चरणमें मनको लगा रहा ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

तेरे दिदारके लिये बंदा हैरान है
सुनते नही हो अरज क्यों दयानिधान है ॥ टेक
काशी गया दुवारका मथुरामें फिर लिया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

मिला नही मुझको तेरा असली मकान है ॥१
फिरा तेरी तलाशमें जंगल पहाडमें
देखा नही तेरा किसी जगा निशान है ॥ २ ॥
पूछा जो आलिमोंसे तेरा खास कर पता
रहता है तेरेपास यह उनका बियान है ॥ ३ ॥
कर मिहरकी नजर मुझे अब दरस दीजिये
ब्रह्मानंद तेरे चरणपे कुर्बान जान है ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

आशक हूया जो मन तो क्या माशूक दूर है
दिलमें बसा दिलदारकी चशमोंका नूर है ॥ टेक
सिरको चडा दिया जबी कदमों पे यारके
घरबारजानमालकी फिर क्या जरूर है ॥ १ ॥
गरचे सरे दरबारमें मुशकिल है पहुंचना
घायल हुया हटता नही रणबीच शूर है ॥ २ ॥
बाना फकीरी पहनके फिरना जंगल पहाड
गुरुके चरणको चूमना फिर क्या गरूर है ॥३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दुनियांकी हवश छोडदे कर कैद नफसको
ब्रह्मानंद घटमें देखले हाजर हजूर है ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

आशकहूया जो दिलतो क्या दुनियांकी शरम है
करनाइशककाजगतमें नहि सहजकरम है॥ टेक
दीपकको देखके पतंग प्रेमवश भया
पडके अगनमें जलगया क्या शीत गरम है १
भ्रमर सुगंधके लिये फूलनमें जा बसा
फसके कमलमें रह गया गरचे वो नरम है २
जाकरके रणमें शूरमा आगे चरण धरे
घायल हूया बदन नहिं मरणेका भरम है ॥३॥
ईशु तथा मनसूरको शूली चडा दिया
ब्रह्मानंद गई जान तो छोडा न धरम है ॥४॥

(रेखता ताल दादरा)

आशक हूया जों दिल तो क्या कायरपणा करे
ऊखलमें दिया शीश तो चोटनसे क्या डरे॥टेक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

माशूकका मिलना बडा है कठिन समझले
पावेगा सो दिदार जो जीता हूया मरे ॥ १ ॥
अगर मुकाम यारके जाना जरूर है
जाता है वकत बीतता फिर धीर क्या धरे ॥२॥
चाहता है देखना जबी दिलदारको अपने
दुनियांकी तरफमें सदा फिर क्यों नजर भरे ३
तृष्णानदीकी धारमें जो डूबता फिरे
ब्रह्मानंद वो भवसिंधुनीर पार क्या तरे ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

किस देवताने आज मेरा दिल चुरालिया
दुनियांकी खबर नारही तनको भुलादिया ॥टेक
रहताथा पासमें सदा लेकिन छिपाहुया
करके दया दयालने पडदा उठालिया ॥ १ ॥
सूरज वो था न चांद था बिजली न थी वहां
यकदम वो अजब शानका जलवा दिखादिया २
फिरके जो आंख खोलकर ढूंडन लगा उसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गायब था नजरसे सोंई फिर पास पालिया ॥३॥
करके कसूर माफ मेरे जन्मजन्मके
ब्रह्मानंद अपने चरणमें मुझको लगालिया ॥४॥

(रेखता ताल दादरा)

जिसको नही है बोध तो गुरुज्ञान क्या करे
निजरूपको जाना नही पुराण क्या करे ॥ टेक
घटघटमें ब्रह्मजोतका परकाश हो रहा
मिटा न द्वैतभाव तो फिर ध्यान क्या करे ॥१॥
रचना प्रभुकी देखके ज्ञानी बडे बडे
पावे न कोई पार तो नादान क्या करे ॥ २ ॥
करके दया दयालने मानुष जनम दिया
बंदा न करे भजन तो भगवान क्या करे ॥३॥
सब जीवजंतुवोंमें जिसे है नही दया
ब्रह्मानंद वरत नेम पुण्य दान क्या करे ॥४॥

(रेखता ताल दादरा)

श्रीरामचंद्र नंदनंदन अब दया करो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

शरणमें पडो आन तेरो जान आसरो ॥ टेक ॥
सिरपे सुवर्णका मुकुट मोरोंकी पांखका
गल मोतियोंकी माल है बनमाल गल धरो १
हाथोंमें धनुष बाण है बंसी अधर धरे
जनकसुता है संग रंग राधिका भरो ॥ २ ॥
लंकापुरीमें जायके मथुरा गमन किया
रावणका किया नाश प्राण कंसको हरो ॥ ३ ॥
सरजूके नीरमें खडा जमुनाके तीर पे
ब्रह्मानंद छबी युगल मेरे नैनमें फिरो ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

जगतमें एक सार है धरम धरम धरम
करो परोपकारके करम करम करम ॥ टेक ॥
मानुषकी देह पायके हरिनाम ना लिया
बिरथा जनम गमा दिया शरम शरम शरम १
तेरे शरीरमें है दिव्य जोत ईशकी
गुरुके बचनसे समझले मरम मरम मरम ॥२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दुनियांकी सबी वस्तु नाशवान थिर नही
स्वपने समान देखले भरम भरम भरम ॥ ३ ॥
व्यापक है सबी विश्वमें परब्रह्म जानले
ब्रह्मानंद मिले मोक्षपद परम परम परम ॥४॥

(रेखता ताल दादरा)

कैसे करूं गुरुदेवकी महिमा खरी खरी
सब वेद ग्रंथ पंथमें गायन करी करी ॥ टेक ॥
जन्मजन्मकी वडी विषयोंकी वासना
परब्रह्मज्ञान बोधसें मनसें हरी हरी ॥ १ ॥
देव दैत्य मनुज जीव भेद भर्मना
सब दूर करके एकता दिलमें धरी धरी ॥२॥
भवसिंधु नीर बीच मेरी नाव फस रही
चरणकमल सहारसें पलमें तरी तरी ॥ ३ ॥
घटघटमें पूर्ण रूपको दिखला दिया मुझे
ब्रह्मानंद द्वैतभावना मनसें टरी टरी ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

(भजन राग पहाडी)

निरंजन पदको साधु कोई पाता है ॥ टेक ॥
मूल द्वारसे खेंच पवनको उलटा पंथ चलाताहै
नाभी पंकज दलमें सूती नागनजायउठाताहै १
मेरुदंडकी सिडी बनाकर सुंनशिखरचडजाताहै
अमरगुफामेंजायविराजे जगमगजोतजगाताहै२
शशिमंडलसें अमृत टपके पीकर प्यास मिटाताहै
गगनमहलमें जाकरसोवे सुरतासेज बिछाताहै ३
सब कर्मनकी धूनी जलाकर तनमें भस्म रमाताहै
ब्रह्मानंदस्वरूपमगनहो आपहीआप समाताहै ४

(भजन राग पहाडी)

निरंजन धुनको सुनता है संत सुजान ॥ टेक
बैठ इकंत जमाकर आसन मुंदलीये दोऊ कान
झीनी धुनमें सुरत लगावे करता नाद पिछान १
घंटा शंख बंसरी वीणा बाजे मधुरी तान

१ निरंजन वनमें योगी एक रमताहै ७ भजन.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ताल मृदंग नगारा पीछे गर्जन मेघ समान २
दिनदिन सुनसुन नाद ध्वनीकोहोवेमनगलतान
ब्रह्मजोत घटमें दरसावे बिसरे काया भान ३
तनमनकी दुविधा सब मेटे करे निरंतर ध्यान
ब्रह्मानंद मिटे भवबंधन पावे पद निर्वाण ४

(भजन राग पहाडी)

निरंजन घरका भेद सुनो सब संत ॥ टेक
नहि काशी नहि पुरीद्वारका नहिगिरिशिखरहंत
नहिपतालनहिस्वर्गलोकमें क्योंफिरताभरमंत १
काया नगरी बीच मनोहर त्रिकुटी महल सुहंत
तिसके ऊपर बसे निरंजन जगमगजोतजगंत २
नेत्र बंदकर दृष्टि जमावे निशदिन ध्यानधरंत
आसन थिरकर साधन कीजे बैठे भवनइकंत ३
पहले पहले रविशशि तारे बिजलीकी चमकंत
ब्रह्मानंद स्वयंभू जोती फिर पीछे दरसंत ॥४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

(भजन राग पहाडी)

निरंजन माला घटमें फिरे दिनरात ॥ टेक
ऊपर आवे नीचे जावे श्वास श्वास चल जात
संसारी नर समझे नाही विरथा उमरविहात १
सोहं मंत्र जपे नित प्राणी विनजिव्हा विनदांत
अष्टपहरमें सोवतजागत कबहुं न पलक रुकात२
हंसा सोहं सोहं हंसा बार बार उलटात
सतगुरु पूरा भेद बतावे निश्चल मन ठहरात ३
जो योगी जन ध्यान लगावे बैठ सदा परभात
ब्रह्मानंद मोक्षपद पावे फेर जन्म नहि आत ४

(भजन राग पहाडी)

निरंजन गुरुका ज्ञान सुनो नर नार ॥ टेक
क्या खोजे बन पर्वत कंदर क्या खोजे जलधार
तेरे तनमें देव बिराजे उलट सुरत संभार ॥१॥
पांच तत्त्वकी है जड काया चेतन जीव अधार
ईश्वरअंशजीवअविनाशी सतचितरूपविचार २

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुर नर दानव पशु पक्षी सब बिश्व समाननिहार
अंदर बाहिर घटघट पूरण एक ब्रह्म निर्धार ३
ऊंच नीच सब भेद मिटावो द्वैतभाव सब टार
ब्रह्मानंद संत संगतसे दृढ निश्चय मनधार ॥४॥

(भजन राग पहाडी)

निरंजन पुरका पंथ कठिन है दूर ॥ टेक
लाखों योजन पर्वत ऊंचा घाटी विकट करूर
करकर जतन फिरें बहुतेरे पहुंचे बिरला शूर १
तेजपुंजमय शिखर बना है चमके अद्भुत नूर
चहुंदिश घोरघटा घन गाजे बाजे अनहदतूर २
सूरज चांद जले जहां दीपक नाचें परियां हूर
गंगा जमुना निर्मल धारा बेग चले भरपूर ३
गगन महलमें तखत बिछा है बैठे आप हजूर
ब्रह्मानंद जो चलकर जावे पावे मोक्ष जरूर ४

(भजन राग पहाडी)

लगाले प्यारे राम भजनसे प्रीत ॥ टेक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

मात पिता सुत बांधव नारी सबदोदिनके मीत
परमेश्वर निज बंधु तुमारो सदा रहे संगीत १
अपने अपने स्वारथ लागे यह सब जगकी रीत
परमारथके साधन कारण सब होवें विपरीत २
सकल जन्मके पाप निवारा हरिका नाम पुनीत
भवसागरके तारण कारण सुमरो मनको जीत ३
तन धन जोबनका मद त्यागो सबसे रहो विनीत
ब्रह्मानंद शरण पड प्रभुकी सब दुखजावे बीत ४

(राग मांड ताल दादरा)

मेरी विनंती सुनो नाथ तेरी शरणमें पडो ।।टेक
मात तात भाई बंधु स्वारथके सब मीत
कोई सहायक है नहीरे झूठी जगकी प्रीत ।।तेरी०
भवसागरमें भटकिया रे पाया दुःख अपार
अबतो दयाकरके प्रभुलीजिये मुझे उबार ।।तेरी०
तीरथ बरत पुण्य दान किया नही शुभ काज

१ मेरो जोबन बीयो जाय बाद्वीला वेगो अजोरे ५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दासतुमारोजानकेजी राखिये मेरी लाज ॥तेरी०
अवगुण मेरे ना गिणोजी पतित पावनहार
ब्रह्मानंद तेरे बिना मेरा कौनकरे निस्तार ॥तेरी०

(राग मांड ताल दादरा)

तेरी उमर बीती जाय रे प्राणी राम सुमरले ॥ टेक
बूंद बूंद टपकता रे ज्यों अंजलिका नीर
पल पल छिन छिनमें तेरा रे छीजत जाय शरीर १
प्राणी राम सुमरले०
हाथी घोडे पालकी रे दासी दास अनेक
महल खजाना नारियां तेरे संग न जावे एक २
प्राणी राम सुमरले०
चार दिनकी जिंदगी रे जासी हंस बिलाय
करले जो कुछ हो सके रे फिर पीछे पछताय ३
प्राणी राम सुमरले०
खाली आया जगतमें रे खाली जावन हार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

ब्रह्मानंद भजनविना तेरा झूटा सबी विचार ४
प्राणी राम सुमरले०

(राग मांड ताल दादरा)

जगदीश्वर जगत बीच तेरा नाम सार है ॥ टेक
बडे बडे भूपति रे सेनाके सरदार
काल सबीको खा गया रे रह्या न एक अधार॥
तेरा नाम सार है०
रूपवंती रानियां रे करती नित्य सिंगार
सो तन जर्जरहोगये रे दिये चितामें डार॥ तेरा०
रावण जैसा शूर मारे जिनके मन हंकार
भूमीमें सब मिल गया रे पलक न लागीवार॥
तेरा नाम सार है०
सूरज तारे चंद्रमाजी नश्वर सब संसार
ब्रह्मानंद सदा रहे प्रभु तूं साचा करतार॥ तेरा०

(राग मांड ताल दादरा)

नर करलेरे सतसंग तेरा जन्म सफल होय ॥टेक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

काशी गया दुवारका रे कोटिन तीरथ नाय
बिन गुरुके उपदेशसे रे मनकी मैल न जाय १
तेरा जन्म सफल होय०
सिरपर जटा रखायके रे अंग विभूति रमाय
छाप तिलक तनमें किये रे मोक्ष कभी नहि पाय
॥ २ ॥ तेरा जन्म सफल होय०
सदा रहे बनवासमें रे कीनो तप अपार
मनकी तृष्णा ना मिटी रे मिले न सर्जनहार ३
तेरा जन्म सफल होय०
तजके मनकी भटकना रे संतनकी कर सेव
ब्रह्मानंद मिटायगातेरा भवबंधन गुरुदेव॥तेरा०

(राग मांड ताल दादरा)

मनमोहन सुंदर शाम प्यारे दरस दीजिये ॥ टेक
हमको हरि छोडके जी जाय बसे परदेश
बन बन ढूंडन जांयगी रे कर जोगनका वेश १
प्यारे दरस दीजिये०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

प्रेमरस पिलायके जी भूल गये ब्रजराज
तेरे कारण सांवरा जी गई हमारी लाज ॥२॥
प्यारे दरस दीजिये॰
जैसे मछली जलबिना रे तडपत है दिन रैन
तेरे दर्शनके बिना जी नही हमे अब चैन ॥३॥
प्यारे दरस दीजिये॰
सुनो हमारी बेनती रे आय मिलो इक बार
ब्रह्मानंद प्रभु तुमारे चरणनकी बलिहार ॥४॥
प्यारे दरस दीजिये॰

(राग मांड ताल दादरा)

प्रभु हमारा सुनो पियारा अर्ज हमारी आज ॥टे.
तुं पिता सब जगतका जी सबका पालनहार
गति तुमारी मति हमारी लखे नही महाराज १
भूमी पवन अगन गगन सूरज चांद सितार
तेरे बनाये लोक बसाये धन्य तुमारा साज ॥२॥

१ यो छबी कब मिलेगी ऊधो नंदलालकी ६ भजनतक.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देवदनुजमनुज जीव सबी तुमारे दास
सबसे न्यारा रूप तुमारा तूं सबका सिरताज ३
ब्रह्मानंद शरणमें तेरी आय पडा दयाल
काटो हमारे बंधन सारे राखो हमारी लाज ॥४॥

(राग मांड ताल दादरा)

हरि तुमारी छबी पियारी कब दिखावोगे ॥टेक
सिरपे मुकुट धारके जी रतनसे जडा
गलेमें माल तिलक भालमें लगावोगे ॥ १ ॥
मकर कुंडल पीत बसन कमर मेखला
कमलनैन मधुरबैन कब सुनावोगे ॥ २ ॥
शंख चक्र गदा पद्म हाथमें धरे
लक्ष्मीसंग श्यामरंग कब सुहावोगे ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद करके प्रभु दासपे दया
पगमें कडे गरुडचडे वेग आवोगे ॥ ४ ॥

(राग मांड ताल दादरा)

सुनभाईहमारा लछमन प्यारा बातकरमकी ॥टे.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

मान वचन केकई रे दिया पिता बनवास
प्राण गमाया सत्य निभाया नीति धरमकी ॥१॥
राज्य तिलक त्यारियां रे कछु न आई काम
विधि विचारी गति नियारी कठिन मरमकी २
कर्म लिखा सोई होत है रे कोई न मेटनहार
निष्फल सारी शोच तुमारी मनके भरमकी ३
अपना किया भोगना रे नही किसीका दोष
ब्रह्मानंद शरण पडो प्रभुनाथ परमकी ॥ ४ ॥

(राग मांड ताल दादरा)

तुम पढोरेतोता क्यासुखसोता रामरामराम ॥ टे.
पिंजरेमें बैठके रे भूल गया निज धाम
लालचके वशमें पडा रे परवश आठो याम १
साथी तेरे चल गये रे कोई न आया काम
जीव अकेला फस गया रे छूट गया घर गाम २
मौत बिल्ली ताकमें रे बैठी बीच मुकाम
अवसर तेरा देखके रे करसी काम तमाम ॥३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वोली तेरी रसभरी रे रटो निरंजन नाम
ब्रह्मानंद मिटें सब बंधन पावें पद विश्राम ४

(राग मांड ताल दादरा)

तुमपढोरी मैना मधुर बैना हरिकानामसार ।।टेक
तजके तेरा मालिया री जंगल करें विहार
एक जगां थिर ना रहें री फिरती डारनडार १
मीठे मीठे फल पके री खावें चूंच पसार
बाज झपेटा मारसी तेरी छूटे बाग बहार ।। २ ।।
कठिन लोह पिंजरारी बंद किये सब द्वार
मुशकिल तेरा छूटनारी मनमें शोच बिचार ३
कोटि जतन करभलेरी होय नही निस्तार
ब्रह्मानंद भजो जगदीश्वर बंध छुडावनहार ४

(राग मांड ताल दादरा)

राम सुमर राम तेरे काम आयगा ।। टेक ।।
भाई बंधु राज पाट महल मालियां
अंतकालमें न कोई संग जायगा ।। १ ।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

दुनियांके कारबारमें तुं भूलया फिरे
चिडियाको जैसे वाज तुझे काल खायगा ॥२॥
मनुजका शरीर वडे भाग्यसे मिला
जब वीत गया काल तो फिर क्या बनायगा ३
कर ले जतन हजार हरी नामके बिना
कहता है ब्रह्मानंद नही मोक्ष पायगा ॥ ४ ॥

(राग मांड ताल दादरा)

राम सुमर राम उमर वीत जायगी ॥ टेक ॥
एक एक श्वास वडे मोलका मिला
भजन बिना व्यर्थ देह नाश पायगी ॥ १ ॥
बारवार जीया जून भटकता फिरा
मोक्षकी खिडकी न फेर हाथ आयगी ॥ २ ॥
करले प्रभुका भजन नही देर कर जरा
आवेगी जबी मौत पलक ना रुकायगी ॥ ३ ॥
सुमरण करे जो रामनाम प्रेमभावसें
ब्रह्मानंद मोहपाश सहजमें कटायगी ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(राग मांड ताल दादरा)

मोहनी मूरत शामकी कब नजर आयगी ॥ टेक
रास हास कर बिलास मनको हरलिया
सखी बंसरीकी मधुर धुनी कब सुनायगी ॥१॥
प्रेमपाश डार गले वो चले गये
फिर आवनेकी खबर मुझे कब बतायगी ॥ २ ॥
गोकुलमें फिर न आये नंदलाल जो कबी
बिन दरस तरस तरस मेरी जान जायगी ॥ ३ ॥
तज काम काज लाज धरो ध्यान चरणका
ब्रह्मानंद प्रेम भक्ति नाथको मिलायगी ॥ ४ ॥

(राग भैरवी ताल चलित)

हरिनाम सुमरले हरिनाम सुमरले
हरिनाम सुमरले पछतायगा रे ॥ टेक ॥
मानुष काया दुर्लभ पाया

---

१ तेरी चलवल है न्यारी तेरी कलबल है न्यारी तेरे नैनाने मारी कटारिया जान ५ भजनतक.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

पलक बीच चल जायगा रे ॥ १ ॥ हरिनाम०
माल खजाना संग न जाना
लोक लूट कर खायगा रे ॥ २ ॥ हरिनाम०
सुत परिवारा बांधव प्यारा
अंत काम नहि आयगा रे ॥ ३ ॥ हरिनाम०
ब्रह्मानंद शरण पड प्रभुकी
सब भवबंध मिटायगा रे ॥ ४ ॥ हरिनाम०

(भैरवी ताल चलित)

मेरी सुनले अरज मेरी सुनले अरज
मेरी सुनले अरजियां प्यारे राम ॥ टेक ॥
सब जग स्वामी अंतरयामी
विश्व चराचरके सुखधाम ॥ १ ॥ मेरी सुन०
नाम तुमारा भवभयहारा
सुमरणसे हो पूरण काम ॥ २ ॥ मेरी सुन०
दीनदयाला जनप्रतिपाला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ध्यावत मुनिगण आठों याम ॥ ३ ॥ मेरी सुन०
ब्रह्मानंद शरणमें आयो
चरणकमलमें दे विश्राम ॥ ४ ॥ मेरी सुन०

(भैरवी ताल चलित)

मुझे लागी लगन मुझे लागी लगन
मुझे लागी लगन तेरे दर्शनकी ॥ टेक ॥
जैसे वनमें पपिया मनमें
आश करे नित बरसनकी ॥ १ ॥
गल बनमाला मुकुट विशाला
पीतबसन सुंदर तनकी ॥ २ ॥
मणिकटिऊपर चरणननूपुर
करमें गदा सुदर्शनकी ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद प्यास मनमांही
चरणकमलयुग परसनकी ॥ ४ ॥

(भैरवी ताल चलित)

तेरी बीती उमर तेरी बीती उमर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

तेरी बीती उमरिया जायगी रे ॥ टेक ॥
दिन दिन जावे काल विहावे
फिरके गई नही आयगी रे ॥ १ ॥ तेरी०
लाड लडाई साज सजाई
देह पडी रह जायगी रे ॥ २ ॥ तेरी बीती०
महल अटारी सुंदर नारी
माया सकल बिलायगी रे ॥ ३ ॥ तेरी बीती०
ब्रह्मानंद भजन कर हरिका
यमकी पाश कटायगी रे ॥ ४ ॥ तेरी बीती०

(भैरवी ताल चलित)

मेरो सुन ले बचन मेरो सुन ले बचन
मेरो सुन ले बचन नर हितकारी ॥ टेक ॥
जगमें आया नरतन पाया
वृथा उमर मत खो सारी ॥ १ ॥ मेरो सुन०
झूठी काया झूठी माया
झूठी जगतकी है यारी ॥ २ ॥ मेरो सुन०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यह संसारा नश्वर सारा
क्या ममता मनमें धारी ॥ ३ ॥ मेरो सुन०
ब्रह्मानंद भजन कर हरिका
सब सुखदायक दुखहारी ॥ ४ ॥ मेरो सुन०

(भैरवी ताल चलित)

प्रभु तेरी शरण प्रभु तेरी शरण
प्रभु तेरी शरणमें आया हुं ॥ टेक ॥
भवजललहरी नदिया गहरी
कर्मन बेग बहाया हुं ॥ १ ॥ प्रभु तेरी०
परबल माया जाल बिछाया
चारों तरफ फसाया हुं ॥ २ ॥ प्रभु तेरी०
क्षण भंगारा विषय विकारा
जन्म जन्म भरमाया हुं ॥ ३ ॥ प्रभु तेरी०
ब्रह्मानंद दास दासनका
चरणकमल लिपटाया हुं ॥ ४ ॥ प्रभु तेरी०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

(राग मारवाडी)

राम रटलेरे प्राणी पलपल उमरा जाय बिहानी
बूंदबूंद टपके जैसे अंजलिका पानी रे ॥ टेक
गर्भवाससेंबाहिरआयावडेभाग्यमानुषतनपाया
मायामोहभुलायगयो प्रभुसुधविसरानी रे ॥१॥
हाथीघोडे महलअटारी मालखजाना संपतभारी
श्वासनिकलजबगया पलकमें होयबिगानीरे ॥ २
क्या सुख सोवे सेज बिछाई
काल खडा सिर ताक लगाई
जैसे बाज झपट चिडिया लेजाय उडानीरे ३
रामनामजोजननितगावे ब्रह्मानंद परमपदपावे
जन्ममरण दुखजाय सकलभवपाशमिटानीरे ४

(राग मारवाडी)

झूठसबजगतपसारा सोच समझनरदेखविचारा
मूरख गर्व करे मनमें हरिनाम बिसारारे ॥टेक

१ जगत स्वपनेकी माया रे ७ भजनतक ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वडेबडे राजाअरुरानी देसखजानेहुकमदिवानी
भूमीमें मिल गया रह्या नहि एक इशारा रे १
अर्जुन भीम कर्णसे भारे शूरबीर रणगर्जनहारे
काल बलीसें हार सबी परलोकसिधारा रे ॥२॥
पंडितयोगीराजघनेरे रूपवंत गुणिगण बहुतेरे
अपनी गाय बजाय गये जगमें दिन चारारे ३
धन जोबन गुण थिर नहि कोई ब्रह्मानंद नाश
सब होई । परमेश्वरका नाम सुमर सबसे हो
न्यारारे ॥ ४ ॥ झूठ०

(राग मारवाडी)

देख नजरोंसे भाई परमेश्वर तेरे तनमांही
अंग अंग जैसे फूलनमें गंध समाई रे ॥ टेक
क्या मथुरा क्या काशी जावे जाय हिमालय
क्यों दुख पावे । कर सतसंग विचार भेद
सतगुरुसें पाई रे ॥ १ ॥ देख०
हाडमांसकापिंजरकायाचेतनकेवलफिरे फिराया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

वाजीगर जैसे पुतलीको नाच नचाई रे ॥२॥
कस्तूरी मृगनाभ विराजे घाससूंघतावनवनभाजे
विन जाने मूरख विरथा वाहिर भटकाई रे ३
विषयोमें तुं सुखको माने ब्रह्मानंदस्वरूप न जाने
उलट सुरत संभाल भरम मनका मिट जाई रे ४

(राग मारवाडी)

नाथ मैं शरण तुमारी आज सुनोप्रभुअरजहमारी
दीनदयालदयानिधि भक्तनकेहितकारीरे ॥ टेक
गजको पकड ग्राह वश कीना मनमें तुमारा
सुमरण कीना । पहुंचे गरुड सवार पलकमें
पाश निवारी रे ॥ १ ॥ नाथ०
राजाने ध्रुवको निकलाया वनमें जाकर ध्यान
लगाया । दे दर्शनकर दिया अचल पदमें
अधिकारी रे ॥ २ ॥ नाथ०
प्रल्हाद भक्तने नाम उचारा पिता बांध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चाबुकसे मारा । नरसिंघ रूप बनाय दैत्यकी
देह विदारी रे ॥ ३ ॥ नाथ०
भवसागरमें नीर अपारा ब्रह्मानंद करो प्रभु
पारा । तुम विन कौन सहाय करे जगदीश
मुरारी रे ॥ ४ ॥ नाथ०

(राग मारवाडी)

सुनो जगदीशपियारा विनतीहमरीपिताहमारा
हम बालक तुझ शरण पडे दे चरण सहारारे ॥टेक
तुमरी महिमा हम क्या जानें नेति नेति कर
वेद बखाने । ऋषि मुनिगण सब ध्यान धरे
नहि पावत पारा रे ॥ १ ॥ सुनो०
सकल जगत तुमने उपजाया नानाविध सब
जीव बनाया । खेल रचा कर देख रहा सबसे
हो न्यारा रे ॥ २ ॥ सुनो०
अचरज प्रबल तुमारी माया जिसमें सब जग
फिरे भुलाया । दया नजर तुमरी बिन कबहुं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

न होय उधारा रे ॥ ३ ॥ सुनो०
रूप तुमारा है अविनाशी ब्रह्मानंद सकल घटवासी । निर्मल निर्गुण निर्विकार सब विश्व अधारा रे ॥ ४ ॥ सुनो०

(राग मारवाडी)

करोसतसंगपियारा जन्म सफल होजाय तुमारा संशयसकलमिटायज्ञानका होय उजारारे ॥ टेक
मूरतपूजनमें मन लावे कोटिन तीरथमें फिर आवे । मनका भरम न जाय बिना सतसंग बिचारा रे ॥ १ ॥ करो०
यज्ञ दान जप तप बहु भारी छाप तिलक माला गलधारी । ज्ञानविना नहि मोक्ष होय कर जतन हजारा रे ॥ २ ॥ करो०
करे अनेक कर्म शुभ कोई सतसंगतसम फल नहि होई घडी पलक छिनमांहि होय भवसागरपारा रे ॥ ३ ॥ करो०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निशि दिन हरिचर्चा जहां होई ब्रह्मानंद संग शुभ सोई । परमेश्वरके ध्यान भजनसें हो निस्तारारे ॥ ४ ॥

(राग मारवाडी)

सखी सुन हाल हमारा शामसुंदरमोहेलगेपियारा खानपानसुधभूलगई घरकाजबिसारारे ॥ टेक

मैं जमुनाजल भरके आई मगमें देखे आज कन्हाई । पीतांबर तन मोर मुकुट सिर ऊपर धारारे ॥ १ ॥ सखी०

वनमाला गल बीच सुहावे वंसी अधर लगाय बजावे । सुन मीठी धुन प्रेम मगन होगई अपारा रे ॥ २ ॥ सखी०

देख रूप मैं भई दिवानी मंद हसन मेरे मन भानी । नैनन बीच समाय गया वो नंद-दुलारा रे ॥ ३ ॥ सखी०

किसविध मनमोहन घर लावुं ब्रह्मानंद दरस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

मैं पावुं । जन्म सफल होजाय मिटे भवबंधन सारा रे ॥ ४ ॥ सखी०

(राग मारवाडी)

सदाशिव शंकर दाता पूरणब्रह्म जगतपितुमाता भक्तनके हितकार सदा कैलास बसातारे ॥टेक

अंग विभूत जटा सिर राजे मुंडमाल गलबीच विराजे । चंद्रकला मस्तकमें लोचन भाल सुहाता रे ॥ १ ॥ सदा०

गौरवर्ण शुभभुजा विशाला कर त्रिशूल कटिमें मृगछाला । नीलकंठनागोंकेभूषणतनपहरातारे

गणपति कार्तिक चमर ढुलावे वाम अंग गिरि-सुता सुहावे । नंदी गण द्वारेपे सुरमुनिगण यश गाता रे ॥ ३ ॥ सदा०

सकल मनोरथ पूरणकारी गंगाधर भयहर त्रिपुरारी । ब्रह्मानंद सदा चरणनमें शीश नमाता रे ॥ ४ ॥ सदा०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(ठुमरी ताल चलित)

मुझे दे दर्शन गिरिधारी रे
तेरी सांवरी सूरत पर वारी रे ॥ टेक ॥
जमुनातट हरि धेनु चरावे मधुर मधुर स्वर
बैन बजावे । कांधे कमरिया कारी रे ॥ १ ॥
मोरमुकुट पीतांबर सोहे देख रूप मुनिगण
मन मोहे । कुंडलकी छबि न्यारी रे ॥ २ ॥
वृन्दावनमें रास रचावे गोप गोपिका संग
मिल गावे । नूपुरकी धुन प्यारी रे ॥ ३ ॥
भक्तहेत हरि रूप बनाया ब्रह्मानंद मेरे
मन भाया । चरणकमल बलिहारी रे ॥ ४ ॥

(ठुमरी ताल चलित)

हरि रसभरी बैन बजाई रे
मेरे तनकी सुध बिसराई रे ॥ टेक ॥
सुन कर बंसीकी धुन प्यारी चकित भई सब

१ चरणन रज महिमा अब जानी ७ भजनतक,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

ब्रजकी नारी । उठ बृन्दावन धाई रे ॥ १ ॥
पक्षी मौन हुये बिरछनमें घास तजा गौवन-
ने बनमें । जमुनानीर रुकाई रे ॥ २ ॥
सुर विमान चड नभमें आये बंसीधुन सुन
मन हरपाये । पुष्पबृष्टि बरसाई रे ॥ ३ ॥
नारायण बैकुंठबिलासी ब्रह्मानंद बने
ब्रजवासी । संतनके सुखदाई रे ॥ ४ ॥

(ठुमरी ताल चलित)

गुरुचरणकमल बलिहारी रे
मेरे मनकी दुविधा टारी रे ॥ टेक ॥
भवसागरमें नीर अपारा डूब रहा नहि
मिले किनारा । पलमें लिया उबारी रे ॥ १ ॥
काम क्रोध मद लोभ लुटे रे जनमजनमके
वैरी मेरे । सबको दीना मारी रे ॥ २ ॥
द्वैतभाव सब दूर कराया पूरण ब्रह्म एक
दरसाया । घट घट जोत निहारी रे ॥ ३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जोग जुगत गुरुदेव बताई ब्रह्मानंद शांति
मन आई । मानुष देह सुधारी रे ॥ ४ ॥

(ठुमरी ताल चलित)

हरिभजन विना सुख नाही रे
नर क्यों विरथा भटकाई रे ॥ टेक ॥
काशी गया द्वारका जावे चार धाम तीरथ
फिर आवे । मनकी मैल न जाई रे ॥ १ ॥
छाप तिलक बहु भांत लगाये सिरपर जटा
विभूति रमाये । हिर्दे शांति न आई रे ॥ २ ॥
वेद पुराण पढे बहु भारी खंडन मंडन
उमर गुजारी । विरथा लोक बडाई रे ॥ ३ ॥
चार दिवस जग बीच निवासा ब्रह्मानंद छोड
सब आशा । प्रभुचरणन चित लाई रे ॥ ४ ॥

(ठुमरी ताल चलित)

हरिदर्शनकी मैं प्यासी रे
मेरी सुनिये अरज अविनाशी रे ॥ टेक ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

निर्गुणसे मोहे सगुण सुहावे सुर नर मुनि गण
ध्यान लगावे । भक्तनके सुखराशी रे ॥ १ ॥
नहि गोकुल नहि मथुरा जावुं अडसठ तीरथ
मैं नहि नावुं । चरणकमलकी दासी रे ॥ २ ॥
जप तप योग नही बन आवे कैसे प्रभुके
मनमें भावे । करो न मुझे निराशी रे ॥ ३ ॥
करुणाकर मोहे दर्शन दीजे ब्रह्मानंद
शरणमें लीजे । काटो यमकी फांसी रे ॥ ४ ॥

(ठुमरी ताल चलित)

दर्शनबिन जियरा तरसे रे
मेरे नैन धार जल बरसे रे ॥ टेक ॥
मैं पापन अवगुणकी राशी कैसे करे प्रभु
निजकी दासी । काया कंपत डरसे रे ॥ १ ॥
पतितउधारण नाम तुमारा दीजे मुझको
चरणसहारा । देखो दया नजरसे रे ॥ २ ॥
शरण पडी मैं आय तुमारी माफ करो अब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भूल हमारी । भुजा गहो निज करसे रे ॥ ३ ॥
तुमबिन और न पालक मेरा ब्रह्मानंद
भरोसा तेरा । बिनति करूं जिगरसे रे ॥ ४ ॥

(ठुमरी ताल चलित)

मेरा पिया मुझे दिखलादो रे
कोई आनके आज मिलादो रे ॥ टेक ॥
मैं विरहण नित रहुं उदासी पिया मिलनकी
जान पियासी । प्रेमका नीर पिलादो रे ॥ १ ॥
वर्षाबिन चातक दुख पावे नीरबिना मछली
तरसावे । हाल मेरा बतलादो रे ॥ २ ॥
मैं गुणहीन कपट छल भरियां कैसे मुझपर
होय नजरियां । दिलपर दया दिलादो रे ॥३॥
चरणकमलकी दासी तेरी ब्रह्मानंद अरज
सुन मेरी । सुखकी सेज सुलादो रे ॥ ४ ॥

(झंजोटी ठुमरी ताल ३)

मिला दो सखी शामसुंदर मोहे आज ॥ टेक

१ बतायो सखी कौन गली गये शाम ७ तक ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

रातदिवस मोहे चैन न आवे भूलगये सब काज १
खान पान पहरन न सुहावे विनदेखे व्रजराज २
जोगन बनकर बनबन ढूंढूं छोड जगतकी लाज ३
ब्रह्मानंद विना हरिदर्शन विरथा साज समाज ४

(झंजोटी ठुमरी ताल ३)

सुहावे सखी मोहनकी मोहे बेन ॥ टेक ॥
जमुनाततटपर बनकुंजनमें शाम चरावे धेन १
जबकिवंसियाश्रवणसुनीमैंकलनपडतादिनरैन २
किसविधहरिकेदर्शनपाउं सफलकरूं निजनैन ३
ब्रह्मानंद चरणकी चेरी संतनके सुख देन ४

(झंजोटी ठुमरी ताल ३)

तुमे है हरि शरण पडेकी लाज ॥ टेक ॥
मैं गुणहीन मलिन सदामति कैसेबने अबकाज ॥
जपतपतीरथव्रतनकीने नहिकियोसंतसमाज ॥
तुमसमाननहिपतितउधारन मैंपापिनसिरताज ॥
ब्रह्मानंद करे नित बेनति सुनियेगरीबनिवाज॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(झंजोटी ठुमरी ताल ३)

भजनविन विरथा जनम गयो ॥ टेक ॥
वालपणो सवखेल गमायो जोवन काम वह्यो १
बूढे रोग ग्रसी सब काया परवश आप भयो २
जपतप तीरथ दान न कीनो ना हरिनाम लयो ३
ब्रह्मानंद विनाप्रभु सुमरण जाकर नरक पयो ४

(झंजोटी ठुमरी ताल ३)

भजनविन भवजल कौन तरे ॥ टेक ॥
काम क्रोध मद ग्राह बसत हैं मारगमें पकडे १
कुच कंचन दोऊ घेरपडत हैं सवजग डूवमरे २
यज्ञ दान तप निर्बल नौका अधविच टूटपडे ३
ब्रह्मानंद करो हरिसुमरण सब दुख दूरटरे ४

(झंजोटी ठुमरी ताल ३)

मुसाफिर क्या सोवे अव जाग ॥ टेक ॥
इनविरछनकीथिरनहिछाया देखभुलायाबाग १
इस सरायमें रहना नाही काहे करतहै राग २

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

यह सब चोर लगे संगतेरे इनसे बचकर भाग ३
ब्रह्मानंद देर मत कीजे अपने मारग लाग ४

(झंजोटी ठुमरी ताल ३)

मेरेमना अब तो समझकर चाल ॥ टेक ॥
बाल्य गयो जोबनपुनि बीतो श्वेतभये सबबाल १
जो न तजे तुं इनविषनको आनछुडासीकाल २
जाना दूर मुसाफिरतुझको पासनही कछुमाल ३
ब्रह्मानंद मिलनके कारण छोड जगत जंजाल ४

(झंजोटी ठुमरी ताल ३)

मेरे मना अब तो सुमर हरिनाम ॥ टेक ॥
चौरासी लख जीव जूनमें नहि पायो विश्राम १
कर्मनकेबशस्वर्गनरकमें भटकत फिरा निकाम २
मानुष देहमिली यहदुर्लभ मोक्षद्वार सुखधाम ३
ब्रह्मानंद चली सबजावे बिरथा उमर तमाम ४

(झंजोटी ठुमरी ताल ३)

मैं तो प्रभु तुझ चरणनको दास ॥ टेक ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दीनदयालदयाकेसागर सकल भुवनपरकाश १
सबजगकारणभवभयहारणघटघटबीचनिवास २
करुणाकरमोहे दर्शनदीजे पूर्ण कीजिये आश ३
ब्रह्मानंद शरणमें तुमरी मेटो यमकी त्रास ४

(झंजोटी ठुमरी ताल ३)

प्रभु तेरे चरणकमल बलिहार ॥ टेक ॥
तुमपितुमाताविश्वबिधाता सबजीवनहितकार १
अचरजभारी रचना सारी सबजग पालनहार २
घटघटगामी अंतरयामी सकलभुवनआधार ३
ब्रह्मानंदा सब सुखकंदा मेरी सुनो पुकार ४

(राग पहाडी ताल केरवा)

प्रभु सुन ले बिनतिया हमारी रे ॥ टेक ॥
भवसागरमें डूब रहा हुं लीजिये बेग उबारी रे
कामक्रोधमददुश्मनभारेनिशदिनकरतखुवारीरे

१ शाम झूले हिंडोरा कुंजनवनमें ५ भजन.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

स्वारथके सबबंधुजगतमें केवल तुमहितकारी रे
ब्रह्मानंद आशतजसबकी आयो शरण तुमारीरे

(राग पहाडी ताल केरवा)

मुझे लीजे रे ईश्वर तेरी शरणा ॥ टेक ॥
जन्मजन्मकोदासतुमारोदीनजानकरकरकरुणा
नाम तुमारो सबसुखकारीजन्ममरणसंकटहरणा
विश्वचराचर रचनातेरीतुमपालकसबजगभरणा
ब्रह्मानंद करे नित विनति मोक्षधाम निर्मलचरणा

(राग पहाडी ताल केरवा)

मुझे दीजे दरस गिरधारी रे ॥ टेक ॥
शीशकिरीटगलेबनमाला कुंडलकीछबिन्यारीरे
चतुरभुजा पीतांबर सोहे नूपुरधुन सुखकारीरे ॥
शंखचक्रकरपद्म बिराजे मंदहसन अतिप्यारीरे ॥
ब्रह्मानंद दयाकर कीजे पूरण आश हमारी रे ॥

(राग पहाडी ताल केरवा)

मत सोना मुसाफिर नींद भरी ॥ टेक ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तुमपरदेसीभूलपडेहो यहसब चोरनकी नगरी॥
पल पल छिन छिन ताक लगावें
चंपतमाल चुका नजरी ॥ २ ॥ मत०
लोकलुटायगयेबहुतेरे बिरलाजायबचागठरी ॥
ब्रह्मानंद करो अबत्यारी रैन बितायगई सगरी ॥

(राग पहाडी ताल केरवा)

पिया चालो नगरियां हमारी रे ॥ टेक ॥
तुमबिन हारसिंगारनभावें सूनेमहलअटारी रे ॥
सुंदरतनजोबनपट भूषणबिनप्रीतमसबखारी रे ॥
मेरे अवगुणयाद न कीजे दासीजानतुमारी रे ॥
ब्रह्मानंददरसमोहेदीजे चरणकमलबलिहारी रे ॥

(राग पहाडी ताल केरवा)

आना आना रे मोहन मेरी गलियां ॥ टेक
घिस घिस चंदन लेप लगावुं
धोवुं चरणनकी तलियां ॥ १ ॥ आना०
तेरे कारण हार बनावुं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

चुन चुन फूलनकी कलियां ॥ २ ॥ आना०
प्रेमसहित मैं भोग लगावुं
माखन मिशरीकी डलियां ॥ ३ ॥ आना०
ब्रह्मानंद दरसकी प्यासी
मोर मुकुटपर जावुं बलियां ॥ ४ ॥ आना०

(राग पहाडी ताल धमाल)

संजन तेरी उमराबीतरहीकैसेधरेमनधीर ॥ टेक
दिन दिन घडि घडि पल पल जावे
जिम अंजलिका नीर ॥ १ ॥
गया वकत फिर हाथन आवे लाखकरोतदबीर २
मोक्ष दुबार मिलीयहकाया करलेजतननरवीर ३
ब्रह्मानंद सुमर जगदीश्वर मिटे सकल भवपीर ४

(राग पहाडी ताल धमाल)

समझमनझूठाहैसंसार सुमरसदाहरिनाम ॥ टेक
क्षणभंगुरस्वपनेकीमाया होवतनाशतमाम ॥१॥

---

१ चंहापलपलवहीजानावहीजानावे ५ तक.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लाखकरोडीमायाजोडी संगचलेनछदाम ॥२॥
सुतदाराघरमीतपियारे कोइनआवतकाम ॥३॥
ब्रह्मानंदशरणपडप्रभुकी मिलेमोक्षसुखधाम ॥४

(राग पहाडी)

प्रभुमेरीअरजीआजसुनोसबजगसर्जनहार ॥ टे.
तुमबिनऔरनपालकमेरो स्वारथकासंसार ॥१॥
भवसागरमें डूब रहा हुं लीजे मोहेउबार ॥२॥
दुस्तर मायाजाल फसाया बेगकरो निस्तार ॥३॥
ब्रह्मानंद दयालदयाकर जन्ममरणदुखटार ॥४॥

(राग पहाडी)

सखीरीसुनबंसीबाजरही जलजमुनाकेतीर ॥ टेक
चांदचांदनीरातमनोहर शीतलचलतसमीर ॥१॥
वृन्दावनहरिरासरचावे बालकसंगअहीर ॥ २ ॥
मोरमुकुटपीतांबरसोहे सुंदरश्यामशरीर ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंदबिनाहरिदर्शन धरतनहीमनधीर ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

(राग पहाडी)

मुसाफिर चलजाना चलजाना रे
यह संसार सराय ॥ टेक ॥
इससरायकीचालपुराणी इकआवतइकजाय ॥१
राजारानी पंडितज्ञानी कोई रहन नहि पाय २
घडीपलकके रहने कारण मत सामान जमाय ३
ब्रह्मानंद छोडसबचिंता हरिचरणनचितलाय ४

(राग टोडी ताल ३)

हरि तुम भक्तनके प्रतिपाल ।
शरणपडाहुं आय तुमारी कीजे दयादयाल ॥टेक
यह संसार स्वपनकी माया झूठा सब जंजाल
चरणकमलकीभक्तितुमारी दीजेनजरनिहाल १
धन दारा सुत मीत पियारे कोई न जावे नाल
नाम तुमारा है अविनाशी संग रहे सब काल २
मानुष तन यह है क्षणभंगुर शिरपर कालकराल

१ बचाले मुझको मेरे करतार ९ भजनतक.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कामक्रोधमदलोभजालसे लीजे मुझे निकाल ३
जिनपर किरपाहोयतुमारी तिनकेभाग्यबिशाल
ब्रह्मानंद दास चरणनका जन्ममरणदुख टाल ४

(राग टोडी ताल ३)

हरि तुम भक्तनके हितकार । भवसागर
जल दुस्तर भारी लीजे मुझे उबार ॥ टेक ॥
गज अरु ग्राह लडे जब जलमें गजने पाई हार
मनमें सुमरण किया तुमारा पहुंचे गरुडसवार १
तुमरे दर्शन कारण ध्रुवने तप कीनो मनधार
अचल राज्य तिसको प्रभुदीना देअपनादीदार २
प्रीत देख प्रहलाद भक्तकी निकले थंभ विदार
हिरणकशपको पकड केशसे पलमें दीना मार ३
द्रुपदसुताकी लाज सभामें राखी चीर वधार
ब्रह्मानंद शरणमें तेरी मेरी सुनो पुकार ॥ ४ ॥

(राग टोडी ताल ३)

प्रभु सुन अरज हमारी आज ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

सकलजगतकेहोतुमस्वामी दीनबंधुमहाराज ॥ टे.
हम बालक तुझ शरण पडे हैं रखिये हमरी लाज
दयादृष्टिप्रभु हमपरकीजे पूरणहों सबकाज ॥ १ ॥
तुमरी महिमा बेद बखाने ध्यान धरें मुनिराज
सकलव्यापक अंतर्यामी घटघटरहे बिराज ॥२॥
भूमी जल थल पर्वत सागर तुमारा है सब साज
देवदनुज नरसबजीवनके तुमपालक सिरताज ३
तुमरेभजनबिनासुखनाही कोटिन किये इलाज
ब्रह्मानंद करोकरुणाप्रभु सदागरीबनिवाज ॥४॥

(राग टोडी ताल ३)

जगतपति ईश्वर करो सहाय दीनदयाल
दयानिधि स्वामी अर्ज करूं सिरनाय ॥ टेक ॥
दुस्तर मायाजाल बिछाया सब जग रह्या फसाय
मैंशरणागत नाथतुमारी लीजेमुझेछुडाय ॥ १ ॥
पांच विषयकी नदिया भारी जीवबह्यासबजाय
करकिरपा प्रभुपकडभुजासें मुझकोतीरलगाय २

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

काम क्रोध मद लोभ लुटेरे खोसखोस करखाय
तुमबिनऔरनपालकमेरो लीजेबेगबचाय ॥३॥
मेरे अवगुण नाथ न हेरो अपनी दया दिखाय
ब्रह्मानंद शरणमें आयो लीजे दासबनाय ॥४॥

(राग टोडी ताल ३)

जगतपति ईश्वर तुं करतार । सकल जगतमें
जीव चराचर सब तुमरा परिवार ॥ टेक ॥
एक रूपसे बहुत बनावुं जब तुम किया विचार
भुवन चतुर्दश परगट होकर फैलगया संसार १
चौरासी लख जीव जूनमें जोडा है नर नार
सब वस्तुनके बीज बनाये पूर रहे भंडार ॥२॥
सागर नदियां पर्वत भारे सूरज चांद सितार
वृक्ष लता बन सरवर सुंदर रचना बडी अपार ३
अज अविनाशी जगतनियंता सबजीवनहितकार
ब्रह्मानंद दयाल दयाकर भवभय सकलनिवार ४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

(राग टोडी ताल ३)

जगतपति ईश्वर तुं सुखकंद । सत चित
आनंद रूप तुमारो ध्यावत सुरमुनिवृन्द ॥ टेक
मायाजाल बिछा है भारी जीव किये सब बंद
जो जन सुमरे नाम तुमारो टूटें सबही फंद ॥१॥
सकलजगतहै रचना तेरी गगन भूमि रवि चंद
तुमरी महिमा जान न पावें तर्क करें मतिमंद २
तुमरे भजनबिना जगमांही पंथ सबी हैं गंद
जिस मारगमें नाम तुमारो सो सुरभी मकरंद ३
तुमरा निर्णय कर कर हारे बेद ग्रंथ सब छंद
भक्ति दान दीजे प्रभु मुझको याचत ब्रह्मानंद ४

(राग टोडी ताल ३)

जगतपति ईश्वर दयानिधान सकल जगतका
कर्ता हर्ता व्यापक तुं भगवान ॥ टेक ॥
जलकी बूंदसे देह बनाई तिसमें डारे प्राण
माताकुचमें दूध बनाकर पाला जीव अजान १

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अन्न शाक फल फूल सबनके बीज रचे परधान
तिनके वर्धन भोगनके हित हमको दीना ज्ञान
भूमी पवन अगन जल अंबर सब तुमरा सामान
हमरे कर्म किये क्या होवे बिरथा सब अभिमान
नाम तुमारा भवभयभंजन दीजे हमको दान
ब्रह्मानंद दया कर प्रभुजी अरज हमारी मान ४

(राग टोडी ताल ३)

सुमर नर रामनाम सुखधाम
जन्ममरणके बंधन छूटें पूरणहो सबकाम ।। टेक
लालच तज विषयोंका मनसे नहि इनमें आराम
हरिकेचरणकमलका चिंतन करले आठों याम १
दिनदिनपलपलछिनछिनउमराबीतीजायतमाम
नश्वरकायाथिरकरमाने भूलाफिरेनिकाम ।।२।।
बिन हरिभजन मुक्ति नहि होवे
फिरफिरजन्म गुलाम
चौरासी लख जीवजूनमें नहिपावेविश्राम ।।३।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रभुका नाम जपोनित मनमें लगे नहि कछुदाम
ब्रह्मानंद मोक्षपद पावे जो होवे निष्काम ॥४॥

(राग टोडी ताल ३)

जगतमें स्वारथका व्यवहार विनस्वारथ कोई
बात न पूछे देखा खूब विचार ॥ टेक ॥
पूत कमाई कर धन लावे माता करे पियार
पिताकहेयह पूतसपूता अकलमंद हुशियार ॥१॥
नारी सुंदर वस्तर भूषण मांगत वारंवार
जो लाकर घरमेंनहिदेवे मुखडा लेतविगार ॥२॥
पुत्र भये नारिनके वशमें नित्य करें तकरार
आपो अपना भागबटाकर होवें न्यारोन्यार ॥३॥
जिनको जानत मीत पियारे सबमतलबके यार
ब्रह्मानंद छोडकर ममता सुमरो सर्जनहार ॥४॥

(राग टोडी ताल ३)

जगतमें रामनाम है सार ! सोच समज नर
देख पियारे नश्वर सब संसार ॥ टेक ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राजा रानी पंडित ज्ञानी शूरवीर नर नार
सबहिकालबलीकेमुखमें जायबने आहार ॥१॥
सूरज तारे पर्वत भारे सागर नीर अपार
अंतकालमेंथिरनहिकोई यहनिश्चयमनधार ॥२॥
महल बगीचे हाथी घोडे दासी दास हजार
मालखजानासंगनजाना बिरथासबहंकार ॥३॥
हरिकानाम सुमरनरनिशदिन दिलसेनहीबिसार
ब्रह्मानंद कटे भवबंधन छूटें सकलविकार ॥४॥

(राग टोडी ताल ३)

जगतमें जीवन है दिन चार सुकृत कर हरि
नाम सुमरले मानुष जन्म सुधार ॥ टेक ॥
सत्य धर्मसे करो कमाई भोगो सुख संसार
मातपितागुरुजनकीसेवा कीजे परउपकार ॥१॥
पशु पक्षी नर सब जीवनमें ईश्वर अंश निहार
द्वैतभाव मनसे बिसरावो सबसे प्रेमबिहार २
सकल जगतके अंदर बाहिर पूरणब्रह्म अपार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सतचितआनंदरूपपिछानो कर सतसंगविचार ३
यह संसार स्वप्नकी माया ममता मोह निवार
ब्रह्मानंद तोड भवबंधन पावो मोक्ष दुवार ४

(भजन ताल ३)

जपो हरिनाम बंदे उमर बिहानीरे ॥ टेक ॥
बालपणो सब खेल गमायो तिरियामोह जुवानीरे । बूढापणमें रोग सतावे सुंदर काया तेरी होत है पुरानी रे ॥ १ ॥
दिन दिन पल पल छिन छिन जावे जिम अंजलिका पानी रे । गया वकत फिर के नहि आवे छुट गया तीर जैसे चढे न कमानी रे २
हाथी घोडे माल खजाना राज पाट पटरानी रे । श्वास निकल जब जाय बदनसे सबही संपत तेरी होयगी बिगानी रे ॥ ३ ॥

---

१ हरिने कुटिया बनाई काय बनमें २ भजनतक.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वपनसमान जगतकी रचना क्या भूला अभिमानी रे । ब्रह्मानंद भजन बिन प्रभुके व्यर्थ तेरी है नर सारी जिंदगानी रे ॥ ४ ॥

(भजन ताल ३)

सुनो जगदीश प्रभु अरज हमारी रे ॥ टेक ॥

मानुष जन्म मिला जगमाही किरपा भई तुमारी रे । गर्भवासमें किया करारा बाहिर आया तेरी याद बिसारी रे ॥ १ ॥

माया मोह जालमें फसियो निकलनकी नहि बारी रे । जन्म मरण भवचक्करमांही फिरत फिरत भयो दीन दुखारी रे ॥ २ ॥

जप तप योग यज्ञ नहि कीनो नहि सतसंगत प्यारी रे । केवल शरण पडो में तुमरी अब तो दयाल मुझे लीजिये उबारी रे ॥ ३ ॥

तुमरे भजनबिना सुख नाही कीने जतन हजारी रे । ब्रह्मानंद दयाकर दीजे भक्ति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तुमारी प्रभु परम सुखारी रे ॥ ४ ॥

(भजन ताल ३)

तजो अब नींद रे मुसाफिर करो त्यारी रे ॥ टेक
इस नगरीके नौ दरवाजे खुली पडी सब
वारी रे । दिन दिन लोक सभी चल जावें
काहेको तैने घरकी याद बिसारी रे ॥ १ ॥
राजा रानी पंडित ज्ञानी शूर वीर नर नारी
रे । अपने अपने मारग जावें रहन न पावें
करें जतन हजारी रे ॥ २ ॥
जाना दूर रात अंधियारी सिरपर गठरी भारी
रे । चोर खडे मारगमें लूटें करले जतन पीछे
होयगी खरावी रे ॥ ३ ॥
प्रभुका नाम सुमरले प्यारे वो तेरा हितकारी
रे । ब्रह्मानंद विलंब न कीजे सिरपे खडी
है तेरे कालकी सवारी रे ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(राग जिला टोडी ताल ३)

प्रभुजी तेरी किसबिध करुं मैं बडाई ॥ टेक ॥
ब्रह्मा निशदिन बेद उचारे शंभु ध्यान समाधी
धारे । सनकादिक नारद मुनि भारे अज हुं
पार नही पाई ॥ १ ॥
भूमी अगन पवन जल अंबर सरवर सागर
पर्वत कंदर । सूरज चांद सितारे सुंदर तुम
सब सृष्टि बनाई ॥ २ ॥
देव दनुज मानव नर नारी पशु पक्षी जल
थल नभ चारी । सकल जीव संतान तुमारी
तुम पालक सुखदाई ॥ ३ ॥
विश्व बनाकर नाश करावे नाश कराकर फिर
उपजावे । ब्रह्मानंद पार नहि पावे अचरज
खेल रचाई ॥ ४ ॥

---

१ सभामें मेरा तुमहि करोगे निस्तारा ३ भजनतक.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(जिला टोडी ताल ३)

प्रभुजी मेरा तुमबिन कौन सहाई ॥ टेक ॥
मातपिता बांधव सुत नारी जगमें सब
स्वारथकी यारी । नहि परलोक होय हित-
कारी सबसे होय जुदाई ॥ १ ॥
माल खजाना महल चुबारे कोई न जावे संग
हमारे । चल चल जावें भोगन हारे जगमें
थिर न रहाई ॥ २ ॥
लाड लडाकर पालन कीना अतर फुलेल
सदा मलदीना । वसतर भूषण नित्य नवीना
देह पडी रह जाई ॥ ३ ॥
तुम सबका है पालनहारा तेरी महिमा बडी
अपारा । ब्रह्मानंद दान दे प्यारा नाम तेरा
सुखदाई ॥ ४ ॥

(जिला टोडी ताल ३)

हरिजी तुम भक्तनके रखवारे ॥ टेक ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिरणकशपने चाबुक मारा प्रहलाद भक्तने
नाम उचारा । नरसिंह होकर दैत्य पछाडा
देवनके दुख टारे ॥ १ ॥
मातबचन हिरदे धरलीना ध्रुवने बनमें जा
तप कीना । गरुड चडे प्रभु दर्शन दीना
अंत बैकुंठ सिधारे ॥ २ ॥
द्रुपदसुताकी लाज बचाई गौतमनारी बिपत
मिटाई । शबरीकी महिमा अधिकाई गजके
बंद निवारे ॥ ३ ॥
जो जन नाम तुमारा गावे सो निश्चय निर्भय
पद पावे । ब्रह्मानंद नित अर्ज सुनावे
कीजिये भवजल पारे ॥ ४ ॥

(राग सोरठ)

मैं [1]तो तेरा दास प्रभुजी मुझे न विसारणा ॥टेक
जप तप दान नाही तीरथ सनान नाही

---

१ भजन वनत नाहीं मनुवा सैलानी ४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वेद ग्रंथ ज्ञान नाही नही योग धारणा ॥ १ ॥
दीननके नाथ स्वामी परम प्रकाश धामी
चराचर विश्व गामी सब सुखकारणा ॥ २ ॥
शरण पडा हुं तेरी पूरो अब आश मेरी
कीजिये न नाथ देरी सुनिये पुकारणा ॥ ३ ॥
तेरे गुण नित्य गावुं चरणन शीश नावुं
ब्रह्मानंद रूप ध्यावुं भवदुःखहारणा ॥ ४ ॥

(राग सोरठ)

जिंदगी सुधार बंदे येही तेरो काम है ॥ टेक ॥
मानुषकी देह पाई हरिसे न प्रीत लाई
विषयोके जालमांही फसिया निकाम है ॥ १ ॥
अंजलिको नीर जैसे जावत शरीर तैसे
धरे अब धीर कैसे बीतत तमाम है ॥ २ ॥
भाई बंधु मीत नारी कोई न सहायकारी
काल यम पाश धारी सिरपे मुकाम है ॥ ३ ॥
गुरुकी शरण जावो प्रभुका स्वरूप ध्यावो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्रह्मानंद मोक्ष पावो सब सुखधाम है ॥ ४ ॥

(राग सोरठ)

काहे दूर जावे बंदे सांई तेरे पासमें ॥ टेक ॥
जिमी असमान माही उसका मुकाम नाही
प्रगट निशान नाही जल थल वासमें ॥ १ ॥
जंगल पहाड भारे नदियां समुंदर सारे
देखले निहार प्यारे मिले न तलाशमें ॥ २ ॥
नाभीमें सुगंधधारी फिरे मृग दूर चारी
जाने बिना भेद भारी सूंघत है घासमें ॥ ३ ॥
फूलनमें वास जैसे घट घटवास वैसे
ब्रह्मानंद खास तैसे तन परकाशमें ॥ ४ ॥

(राग सोरठ)

जागरे मुसाफिर प्यारे रैन गई सारियां ॥ टेक
संगके सहाई तेरे कर गये कूच डेरे
उठके सवेरे चालो नगरी तुमरियां ॥ १ ॥
आलसको दूर छोडो रथमें समान जोडो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDR

घोडनकी वाग मोडो बेग करो त्यारिया ॥२॥
आयके विदेशमांही करी कछु ना कमाई
पीछे पछताई तेरी होयगी खुवारियां ॥ ३ ॥
परम सहायकारी सबी भयदोषहारी
ब्रह्मानंद रूपधारी काहेको विसारियां ॥ ४ ॥

(राग पहाडी)

प्रेमनगर मत जाना मुसाफिर ॥ टेक ॥[1]
प्रेमनगरका पंथ कठिन है
ऊंचे शिखर ठिकाना मुसाफिर ॥ १ ॥ प्रेम०
प्रेमनगरकी नदिया गहरी
लाखों लोक डुबाना मुसाफिर ॥ २ ॥ प्रेम०
प्रेमनगरकी सुंदर परियां
सब जग देख लुभाना मुसाफिर ॥ ३ ॥ प्रेम०
ब्रह्मानंद कोई विरला पहुंचे
पावे पद निर्बाना मुसाफिर ॥ ४ ॥ प्रेम०

१ कितनीक दूर तेरी काशी रे पंडित ५ भजनतक.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(ठुमरी राग झंजोटी)

सांवरी सूरत तेरी मोहनी मूरत हरि
कमलनयन शशिवदन सुहावनी ॥ १ ॥
कनकमुकुट भाल सोहे बनमाल गल
सुंदर विशाल भुज कंकण धरावनी ॥ २ ॥
कानन कुंडल पडे कटि पट पीत धरे
चरण नूपुर धुनी मधुर बजावनी ॥ ३ ॥
श्यामल कोमल अंग रमा बसे सदा संग
ब्रह्मानंद मंद हास मेरे मन भावनी ॥ ४ ॥

(ठुमरी राग झंजोटी)

पनिया भरन कैसे जावुं सुन प्यारी आली
आज बनमाली मोरी रोकत डगरिया ॥ १ ॥
जमुनाके तट पनघट पर नटवर
ठाडो झटपट पट खेंचत चुनरिया ॥ २ ॥

---

१ माथेपे मुकुट श्रवण कुंडल विशाल लाल ५ भजन. १० ब्र. भ.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDR

संग लिये ग्वाल बाल रास करे नंदलाल
चलत कपट चाल फोडत गगरिया ॥ ३ ॥
परम आनंदकंद हास करे मंद मंद
ब्रह्मानंद मुखचंद देख मन हरिया ॥ ४ ॥

(ठुमरी राग झंजोटी)

दीनके दयाल प्रतिपाल सब जगतके
परम कृपालु हरि हरो भवबंधको ॥ १ ॥
शंख चक्र गदा कर शीश पे मुकुट धर
कानन कुंडल वर सोहे मुखचंदको ॥ २ ॥
चतुर्भुजा विशाल गल बीच बनमाल
अलक कुटिल भाल हास मंद मंदको ॥ ३ ॥
क्षीरसिंधुमें बिलास शेषनागपे निवास
दीजिये दरस दास जान ब्रह्मानंदको ॥ ४ ॥

(ठुमरी झंजोटी)

देखले चतुर नर अब तो नजरभर
घडी पल छिन तेरी बीतत उमरिया ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

दीपककी लोय जैसे अंजलीको तोय तैसे
कब हुं न होय थिर जाय रे गुजरिया ॥ २ ॥
पशु मृगराज धरे चिडियाको बाज हरे
तैसे यमराज करे पडे न खबरिया ॥ ३ ॥
पापनसे डर नर हरिका भजन कर
ब्रह्मानंद मन धर बात रे हमरिया ॥ ४ ॥

(ठुमरी झंजोटी)

मानले वचन मेरो जानले स्वरूप तेरो
जाने विना रूप भवसिंधुमें डुबावनो ॥ १ ॥
पायके मनुज तन करले जतन नर
दारा सुत धन तेरे संगमें न जावनो ॥ २ ॥
आवे जब काल तब रहे न संभाल कछु
कब्रत हवाल बुरो फिर पछतावनो ॥ ३ ॥
करले उपाय सारे जप तप दान भारे
ब्रह्मानंद ज्ञान विना मोक्ष नहि पावनो ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDR

(राग पहाडी ताल ३)

मेरी मतिया हरि हरि हरि गुण गा ॥ टेक ॥
नाम मुरारी भवभयहारी नहिनहिनहि विसरा १
दुर्लभकाया जगमें पाया दिनदिनदिन नगमा २
करतलपानी उमरविहानी पलपलपल चलजा ३
ब्रह्मानंदा सब सुखकंदा नितनितनित चितला ४

(राग पहाडी ताल ३)

मेरी मतिया कर कर हरिभजना ॥ टेक ॥
सिरपरकाला फिरत कराला डरडरडर मरणा १
लखचौरासी भवदुखराशी फिराफिराफिराफिरना २
दीनदयाला सब जगपाला पडपडपड शरणा ३
ब्रह्मानंदा कर नित वंदा प्रभु प्रभु प्रभु चरणा ४

(राग पहाडी ताल ३)

मेरी सजनी सुन सुन सुन सुन सुन ॥ टेक ॥
अनहदबाजे गगनविराजे मधुरीधुनधुनधुन १

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDS

अमृतधारा परम सुखारा टपकत पुनपुनपुन २
सुरत सुहाई सेज बिछाई फूलन चुनचुनचुन ३
ब्रह्मानंदा परमानंदा गुण गुण गुण निर्गुण ४

(राग पहाडी ताल ३)

री गुजरिया पानिया भरन मत जा ॥ टेक ॥
आनाजाना रोकत कान्हा पनघटनिकट खडा १
नटवरनागर पटकत गागर झटपटपटझटका २
बंसी बजावे सुध बिसरावे मीठीमीठीमीठीधुनगा
ब्रह्मानंदा चरणमुकुंदा नम नम नमन सदा ४

(राग पहाडी ताल ३)

तुं मेरी गली आना रे कान्हा ॥ टेक ॥
शीशमुकुटधर भालतिलककर कुंडललटकाना १
शामबदन घनपीतबसनतन नूपुर पहराना २
अधरलगाकर मुरलीबजाकर मधुरमधुरगाना ३
ब्रह्मानंदा रूपसुहंदा नैनन दिखलाना ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(राग पहाडी ताल ३)

सखीरी सुन बाजत बंसरिया ॥ टेक ॥
निर्मल नीरे जमुनातीरे गावत सांवरिया ॥१॥
मुकुटविशाला गलबनमाला चरणननूपरिया २
वृंदाबनमें घनकुंजनमें नाचत नटवरिया ॥३॥
ब्रह्मानंदा हरिमुखचंदा मुनिजनमनहरिया ॥४॥

(राग मंगल ताल ३)

घटहीमेंउजियारासाधोघटहीमेंउजियारारे ॥ टेक
पासबसे अरु नजरनआवे बाहिर फिरतगंवारारे
बिनसतगुरुकेभेदनजानेकोटिजतनकरहारारे १
आसन पद्म बांधकर बैठो उलट नैनका तारारे
त्रिकुटीमहलमेंध्यानलगावो देखोखेलअपारारे२
नहि सूरज नहि चांद चांदनी
नहि बिजली चमकारा रे

---

१ मानो वचन हमारा दुर्योधन मानो वचन हमारारे. १६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

जगमगजोतजगेनिसबासर पारब्रह्मबिस्तारारे ३
जो योगी जन दर्शन पावे उघडे मोक्ष दुवारारे
ब्रह्मानंद सुनोरे अवधु वो है देश हमारारे ४

(मंगल ताल ३)

घटहीमें अविनाशी साधो
घटहीमें अविनाशी रे ॥ टेक ॥
काहे रे नर मथुरा जावे काहे जावे काशी रे
तेरे तनमें बसे निरंजन जो बैकुंठबिलासी रे १
नहिपतालनहिस्वर्गलोकमेंनहिसागरजलराशी रे
जो जनसुमरण करतनिरंतर सदारहेतिनपासीरे २
जो तुं उसको देखा चाहे सबसे होय उदासीरे
बैठएकांतध्याननितकीजेहोयजोतपरकाशीरे ३
हिरदेमें जब दर्शनहोवे सकल मोह तम नाशी रे
ब्रह्मानंद मोक्षपद पावे कटे जन्मकी फांसीरे ४

(मंगल ताल ३)

जोग जुगत हम पाई साधो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जोग जुगत हम पाई रे ॥ टेक ॥
मूलद्वारमें बंध लगायो उलटी पवन चलाईरे
षटचक्करका मारग शोधा नागनजायउठाईरे १
नाभीसें पश्चिमके मारग मेरु दंड चडाई रे
ग्रंथीखोलगगनपरचाडिया दशमेंद्वार समाईरे २
भंवर गुफामें आसनमार्‍यो कायासुधबिसराईरे
बिनचंदाबिनसूरजनिशदिनजगमगजोतजगाईरे
शिवशक्तिका मेलभयोजब सुंनमे सेजबिछाई रे
ब्रह्मानंदसतगुरुकिरपासे आवागमनमिटाईरे ४

(मंगल ताल ३)

जोग जुगत हम जानी साधो
जोग जुगत हम जानी रे ॥ टेक ॥
खेंच अपानप्राणघर लाये नागन नींद जगानीरे
मेरु दंड खोल कर ऊपर भ्रमर गुफाठहरानीरे
जिन्हा उलट खेचरी मुद्रा तालु बीच लगानीरे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

त्रिकुटीमहलमें ध्यानजमायो ब्रह्मजोतदरसानीरे
अनहद नाद बजे घटभीतर गर्जन मेघ सुहानीरे
सुनसुनमस्तभयोमनमेरा कायासुध बिसरानी रे
सुंनशिखरसें अमृत टपके पीकर सुरत अघानी रे
ब्रह्मानंद स्वरूप समायो पायो पद निर्बानीरे ४

(मंगल ताल ३)

अनहद की धुन प्यारी साधो
अनहद की धुन प्यारीरे ॥ टेक ॥
आसनपद्मलगाकरकरसे मुंद कानकी बारीरे
झीनीधुनमें सुरत लगावो होतनादझनकारीरे १
पहलेपहले रलमिल बाजे पीछे न्यारीन्यारीरे
घंटाशंखबंसरीबीणा तालमृदंग नगारीरे ॥ २ ॥
दिनदिनसुनतनादजबविकसेकायाकंपतसारीरे
अमृतबूंदझरे मुखमांही योगीजनसुखकारीरे ३
तनकी सुधसब भूलजातहै घटमें होय उजारीरे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्रह्मानंदलीनमनहोवे देखीबातहमारीरे ॥ ४ ॥

(राग मंगल ताल ३)

सुनो खेचरीबात साधो सुनो खेचरीबातरे॥टेक॥
सबसे बडी खेचरी मुद्रा योगी जनकी मात रे
जो जनसाधनकरत निरंतर भवसागर तरजातरे१
जीभ तलेकी नाड कटे जब तब पीछे उलटातरे
धीरे धीरे गलके ऊपर छेदमांहि ठहरातरे २
पीछे ध्यान धरे भृकुटीमें कांपे सबही गातरे
ब्रह्मजोतिका दर्शन होवे झरे सुधा दिनरातरे ३
दिनदिनध्यानकरेजबयोगी कायासुधबिसरातरे
ब्रह्मानंद स्वरूपसमावे फेरजन्म नहिपातरे ॥४॥

(मंगल ताल ३)

सोहंशब्दविचारोसाधो सोहंशब्दविचारोरे॥टे०
माला करसे फिरतनहीहै जीभ न वर्ण उचारोरे
अजपाजापहोतघटमांही ताकी ओरनिहारोरे १

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

हं अक्षरसे स्वास उठावो सो से जाय बिठारोरे
हंसो उलट होत है सोहं योगीजन निरधारोरे २
सबइक्कीसहजारमिलाकर छेसो होत शुमारो रे
अष्टपहरमें जागतसोवत मनमें जपो सुखारोरे ३
जोजनचिंतनकरतनिरंतर छोडजगतव्यवहारोरे
ब्रह्मानंद परम पद पावे मिटे जनम संसारोरे ४

(मंगल ताल ३)

अचरज देखा भारी साधो
अचरज देखा भारीरे ॥ टेक ॥
गगन बीच अमृतका कूवा झरे सदासुखकारीरे
पंगु पुरुष चढे बिनसीढी पीवे भरभर झारीरे १
बिना बजाये निशदिन बाजें घंटा शंखनगारीरे
बहरासुनसुनमस्तहोतहै तनकीखबरबिसारीरे २
बिन भूमीके महलबना है तामें जोत उजारी रे
अंधा देखदेख सुख पावे बात बतावे सारीरे ३
जीता मरकरके फिर जीवे बिन भोजन बलधारीरे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्रह्मानंद संतजन विरला समझे बात हमारीरे ४

(राग मंगल ताल ३)

मैं हुं दासतुमाराप्रभुजी मैंहुंदासतुमाराजी ।।टेक
सुत पितुमाताजगकानाता स्वारथकासंसाराजी
सबजगस्वपनाकोईनअपना तूंमेरारखवाराजी १
जपतपदाना धर्मनजाना नहिसतसंगविचाराजी
सबगुणहीनाभजननकीना कैसेहोनिस्ताराजी २
परबलमायाजालबिछायाफसियाजीवबिचाराजी
बिन तुझ करुणा भवभयहरणा
नहि होवे छुटकाराजी ।। ३ ।।
अवगुण मेरे नाथ घनेरे नहि कुछ पारावाराजी
ब्रह्मानंद शरणमें आयो कीजे भवजलपाराजी ४

(मंगल ताल ३)

मैंहुंशरणतुमारीप्रभुजी मैं हुंशरणतुमारीजी ।।टे०
सूरज तारे पर्वत भारे देव दनुज नर नारीजी
सागरसरवर भूमि तरुवर तेरीरचना सारीजी १

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

जलथलगामी अंतरयामीभुवनचतुरदशधारीजी
सबगुणखाना दयानिधाना
सब जीवन हितकारी जी ॥ २ ॥
ऋषिमुनिध्यावें पारनपावें महिमातुमरीभारीजी
किसविधगावुंभेदनपावुंदुर्बलबुद्धिहमारीजी ३
नाम तुमारा सब सुखकारा देत पदार्थ चारीजी
ब्रह्मानंददानमोहेदीजे जन्ममरणभयहारीजी ४

(मंगल ताल ३)

सतसंगतजगसारसाधो सतसंगतजगसाररे ॥ टेक
काशी न्हाये मथुरा न्हाये न्हाये हरीदुवाररे
चारधामतीरथ फिरआये मनका नही सुधाररे १
बनमें जाय कियो तपभारी काया कष्ट अपार रे
इंद्रियजीतकरी वश अपने हिरदेनहीबिचाररे २
मंदिरजाय करे नित पूजा राखे बडो आचाररे
साधुजनकी कदर नजाने मिले न सर्जनहाररे ३
बिनसतसंग ज्ञाननहीं उपजे करलेजतनहजाररे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDR

ब्रह्मानंद खोजगुरु पूरा उतरो भवजल पाररे ४

(मंगल ताल ३)

गुरु बिन कौन मिटावे भवदुख
गुरु बिन कौन मिटावेरे ॥ टेक ॥
गहरी नदिया बेग बडोहै बहत जीव सब जावेरे
करकिरपागुरुपकडभुजासे खेंचतीरपरलावेरे १
कामक्रोधमद लोभ चोरमिल लूटलूटकरखावे रे
ज्ञानखड्ग देकर करमांही सबको मार भगावेरे२
जाना दूर रात अंधियारी गैला नजर न आवे रे
सीधे मारगपर पगधरकर सुखसेधामपुगावेरे ३
तनमन धन सबअर्पणकरके जोगुरुदेवरिझावेरे
ब्रह्मानंद भवसागर दुस्तर सो सहजे तरजावेरे ४

(मंगल ताल ३)

गुरु बिन कौन सहाई नरकमें
गुरु बिन कौन सहाई रे ॥ टेक ॥
मात पिता सुतबांधव नारी स्वारथके सबभाईरे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

परमार्थका बंधु जगतमें सतगुरु बंध छुडाईरे १
भवसागर जल दुस्तर भारी ग्राहबसें दुखदाई रे
गुरुखेवटिया पार लगावे ज्ञानजहाजबिठाईरे २
जन्मजन्मका मेट अंधेरा संशय सकल नसाईरे
पारब्रह्म परमेश्वर पूरण घटमें दे दरसाईरें ३
गुरुके बचनधार हिरदेमें भाव भक्ति मन लाईरे
ब्रह्मानंदकरोनितसेवा मोक्षपदारथ पाईरे ॥ ४ ॥

(मंगल ताल ३)

शिव भोला भंडारी साधो
शिव भोला भंडारी रे ॥ टेक ॥
भस्मासुरने करी तपस्या वर दीना त्रिपुरारीरे
जिसकेसिरपरहाथलगावे भस्महोयतनसारीरे १
शिवके सिरपरहाथधरनकी मनमें दुष्टबिचारी रे
भागेफिरतचहूंदिशशंकर लगा दैत्यडरभारीरे २
गिरजारूप धार हरि बोले बात असुरसे प्यारीरे
जोतूं मुझको नाचदिखावे होवुं नार तुमारीरे ३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नाचकरतअपनेसिरकरधर भस्मभयोमतिमारी रे
ब्रह्मानंददेतजोईमांगे शिवभक्तनहितकारीरे ४

(मंगल ताल ३)

निर्गुण पंथ निराला साधो
निर्गुण पंथ निराला रे ।। टेक ।।
नहीतिलकनहिछापधारणानहि कंठीनहिमालारे
निशदिनध्यानलगेहिरदेमें प्रगटेजोतउजाला रे
नहितीरथनहिवरतघनेरे नहितपकठिनकरालारे
सहजे सुमरणहोवतघटमें सोहं जापसुखालारे २
नहि मूरत नहिहै कछु सूरत रूप न रंगतवालारे
सबजगव्यापकघटघट पूरणचेतनपुरुषविशालारे
नहि उत्तम नहि नीच न मध्यम
सब समान जगपालारे
ब्रह्मानंदरूपपहचानो तजोसकलभ्रमजाला रे ४

(राग मंगल ताल ३)

घटकाकरोविचारसाधोघटकाकरोविचार रे।।टेक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

घटमें गंगा घटमें जमना तिरबेनीकी धाररे
घटमें नदियां पर्वत सागर घटमें बागबहाररे १
घटमें सूरज घटमें तारे घटमें चंद्र उजाररे
घटमें बिजली चमकसुहावे गर्जतमेघअपाररे २
घटमें तीनों देव बिराजे ब्रह्मा शंभुमुराररे
घटमें पूरण ब्रह्म निरंजन सब जगसर्जनहाररे ३
जो ब्रह्मांडे सोई पिंडे मनमें निश्चय धाररे
ब्रह्मानंद उलट सुरतीको देखो सकलनिहाररे ४

(राग मंगल ताल ३)

देखा अजब खिलारी साधो
देखा अजब खिलारी रे ॥ टेक ॥
मिट्टीके सब खेल बनाये तिनमें पवन पसारीरे
बोलतचालतफिरतनिरंतर कर्मकरेबलकारीरे १
एक खंडके दो टुककीने एक पुरुष इक नारीरे
देव दैत्य नर पशुपक्षीगण रूपअनेकविहारीरे २
आप बनावे आप सजावे आपहि करे तियारीरे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आपहिभोगे आपभुगावे भुवनचतुर्दशचारीरे ३
गुप्तरूपसे प्रगट होवे नटवर मूरत धारीरे
ब्रह्मानंद गुप्त फिरहोवे महिमा अचरजभारीरे ४

(मंगल ताल ३)

कालगती बलवान साधो
कालगती बलवान रे ॥ टेक ॥
बडेबडे पृथिवीके राजा प्रियव्रत सगर समानरे
सबहीमिलेधरणिकेमांही रह्यानएकनिशानरे १
अर्जुन भीमसेनसे योधा जिनके अंचरजबाणरे
सोभीकालकियेवशअपनेछूटा सबअभिमानरे २
योगी पीरपगंबर भारे साधक सिद्ध सुजानरे
जीतसकेनहिकालबलीको छोडगयेसबप्राणरे ३
इसदुनियांमें रहना नांही यह निश्चयकर जानरे
ब्रह्मानंद छोड सबचिंता सुमरोश्रीभगवानरे ४

(मंगल ताल ३)

नाम निरंजन गतवो साधो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

नाम निरंजन गावो रे ॥ टेक ॥
मानुषदेह मिली है दुर्लभ काहे वृथा गमावोरे
नाम जहाज बैठकरदुस्तर भवसागर तरजावोरे १
घरकी जीभनामविनदामा फिरक्योंदेरलगावोरे
ऊठतबैठतसोवतजागत मनसेंनहिबिसरावोरे २
ध्रुवप्रह्लादविभीषणनारद सनकादिकमनभावोरे
अजामेलगजगणिकातारे दृढनिश्चयमनलावोरे ३
कलि केवल इक नामअधारा दूजाभरमभुलावोरे
ब्रह्मानंदनामबिनहरिके कबहुंमोक्षनहिपावोरे ४

(मंगल ताल ३)

मनकी बात न मानो साधो
मनकी बात न मानो रे ॥ टेक ॥
मन चंचलमर्कटसमनिशदिन रहेनएकठिकानोरे
चिंतनकरतसदाविषयनकोमायाभरमभुलानोरे
तनधन सुतदाराके मांही रात दिवसलिपटानोरे
मोहमयीभक्तिरसकोपीकर फिरतसदामस्तानोरे २

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लाभहानि नहिंसमक्षेमूरख करेजोमनको मानोरे
सोजनकबहुंमोक्षनहिंपावेजन्ममरणभटकानोरे
रोक जतनसें मनविषयनसें हरिचरणनमेंआनोरे
ब्रह्मानंद कटैं भवबंधन यह निश्चयकर जानोरे४

(मंगल ताल ३)

चेतन चमक नियारी साधो
चेतन चमक नियारी रे ॥ टेक ॥
हाड मांसकी देह बनी है जामें लगी नवबारीरे
चेतनकेवलबोलतचालतसुखदुःखजाननहारीरे
प्राण संग जब चेतन निकले पडेजिमीपरभारीरे
बीचचिताके जायजलावें भूलजायसुधिसारीरे २
घटघटमें चेतनका वासा देव दनुज नर नारीरे
पशुपक्षीनिरछनकेमांही व्यापकहै सुखकारीरे ३
इस चेतनको ईश्वर जानो परब्रह्म अविनाशीरे
ब्रह्मानंद भेद सब छोडो एकरूप निरधारीरे ४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

(मंगल ताल ३)

ऐसा ज्ञान हमारा साधो
ऐसा ज्ञान हमारा रे ॥ टेक ॥
जड चेतन दो वस्तु जगतमें चेतनमूल अधारारे
चेतनसे सब जग उपजतहै नहि चेतनसे न्यारारे
ईश्वर अंशजीवअविनाशी नहि कछुभेदविकारारे
सिंधु बिंदु सूरज दीपकमें एकहि वस्तु निहारारे
पशु पक्षी नर सब जीवनमें पूर्ण ब्रह्म अपारारे
ऊंचनीच जग भेद मिटायो सब समान निर्धारारे
त्यागग्रहणकछु कर्तबनाहीं संशयसकलनिवारारे
ब्रह्मानंदरूप सब भासे यह संसार पसारारे ४

(राग मंगल पंजाबी काफी)

नहि आते हो नहि आते हो
क्यों अपना रूप छिपाते हो ॥ टेक ॥
कितवल ढूंडन जावांतैनुं मारग कौनबतावेमैनुं
दिलकाहालकहुंमैंकेनुं क्योंमुझकोभटकातेहो १

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लाभहानि नहिंसमझेमूरख करेजोमनको मानोरे
सोजनकवहुंमोक्षनहिपावेजन्ममरणभटकानोरे
रोक जतनसें मनविषयनसें हरिचरणनमेंआनोरे
ब्रह्मानंद कटें भवबंधन यह निश्चयकर जानोरे४

(मंगल ताल ३)

चेतन चमक नियारी साधो
चेतन चमक नियारी रे ॥ टेक ॥
हाड मांसकी देह बनी है जामें लगी नवबारीरे
चेतनकेवलबोलतचालतसुखदुःखजाननहारीरे
प्राण संग जब चेतन निकले पडेजिमीपरभारीरे
बीचचिताके जायजलावें भूलजायसुधिसारीरे २
घटघटमें चेतनका वासा देव दनुज नर नारीरे
पशुपक्षीविरछनकेमांही व्यापकहै सुखकारीरे ३
इस चेतनको ईश्वर जानो परब्रह्म अविनाशीरे
ब्रह्मानंद भेद सब छोडो एकरूप निरधारीरे ४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

(मंगल ताल ३)

ऐसा ज्ञान हमारा साधो
ऐसा ज्ञान हमारा रे ॥ टेक ॥
जड चेतन दो वस्तु जगतमें चेतनमूल अधारारे
चेतनसे सब जग उपजतहै नहि चेतनसे न्यारारे
ईश्वर अंशजीवअविनाशी नहि कछुभेदविकारारे
सिंधु बिंदु सूरज दीपकमें एकहि वस्तु निहारारे
पशु पक्षी नर सब जीवनमें पूर्ण ब्रह्म अपारारे
ऊंचनीच जग भेद मिटायो सब समान निर्धारारे
त्यागग्रहणकछु कर्तबनाहीं संशयसकलनिवारारे
ब्रह्मानंदरूप सब भासे यह संसार पसारारे ४

(राग मंगल पंजाबी काफी)

नहि आते हो नहि आते हो
क्यों अपना रूप छिपाते हो ॥ टेक ॥
कितवल ढूंडन जावांतैनुं मारग कौनबतावेमैनुं
दिलकाहालकहुंमैंकेनुं क्योंमुझकोभटकातेहो १

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बिरहो बाण लगाया दिलमें प्रेम फांस डारी
मुझ गलमें। बैठी याद करुं पलपलमें सूरत
नहीं दिखाते हो ॥ २ ॥
जिम जल बिन मछली हैरानी बिन दर्शन
में फिरूं दिवानी अब तो आकर मिलजा
जानी क्यों कर देर लगाते हो ॥ ३ ॥
कैसी मनमें धरी निठाई दिलसें मेरीयादभुलाई
ब्रह्मानंद सकलजगमांही दीनबंधु कहलातेहो ४

(पंजाबी काफी)

कित जावोगे कित जावोगे
कबतक निजरूप छिपावो गे ॥ टेक ॥
छोडूं मैं सबघरकेकाजा दूरधरूं सबजगकीलाजा
पकड रहूं तेरा दरवाजा कैसे मुझे हटावोगे १
जोगन बन कर ढूंढन जावुं घर घर तेरा खोज
लगावुं। पीछे फिरकर कबी न आवुं कौन
जगा अटकावोगे ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

तेरे कारण महल सजावुं चुन चुन कलियां
सेज बिछावुं । चरणकमलमें सिर लिपटावुं
क्यों नहीं अंग लगावोगे ॥ ३ ॥
गुरु मेरा जब भेद बतावे पकड हाथसें हाथ
मिलावे । ब्रह्मानंद रूप दरसावे फिर क्या
जतन करावोगे ॥ ४ ॥

(पंजाबी काफी)

कित जावुं मैं कित जावुं मैं
अब कैसे प्रेम निभावुं मैं ॥ टेक ॥
मैंजानाथाप्रेमपियारायहतोनिकलादुश्मनभारा
घायल करकेमुझकोडारा किसकोहालसुनावुंमैं १
जिसने प्रेम पियाला पीया सो मरमर करके
फिर जीया । निशदिन कांपे मेरा हीया कैसे
कर समझावुं मैं ॥ २ ॥
मजनुलेलांनेभटकाया रांझा हीरफकीरबनाया ।
सूलीपरमनसूरचढाया किसकिसकोबतलावुंमैं ३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDR

मारग कठिन प्रेमका भारी बिरला पहुंचे हिंमतधारी । ब्रह्मानंद परम सुखकारी कैसे दर्शन पावुंमैं ॥ ४ ॥

(पंजाबी काफी)

अब जाना है अब जाना है
प्रीतमका रूप पिछाना है ॥ टेक ॥
गलबिच हीरा हारअमोली मैंढूंढूंबाहिरमेंभोली
पडदादूरहुयाजबचोली दामनबीचछिपानाहै १
बालक झूलेबीचहिंडोरा देतीफिरुं नगर ढंडोरा
जबमननिश्चलहोया मोरा घरभीतर दरसानाहै २
मृगनाभीमें है कस्तूरी सूंघत घासफिरे बनदूरी
बिनजानेनिज भेदजरूरी बिरथाचिरभटकानाहै
सत गुरु पूरा भेद बताया मेरे मनका भरम मिटाया । ब्रह्मानंद पास दरसाया नैनसें नैन मिलाना है ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

(पंजाबी काफी)

अब पाया है अब पाया है
मुझे सतगुरु भेद बताया है ॥ टेक ॥
सोनाजेवर घडेसुनारा भांतभांतसबन्यारान्यारा
जब मैं बेचन गई बजारा भावबराबरआयाहै १
मिट्टीचाक कुलालफिरावे बर्तननानाभांतबनावे
किसमकिसमके रंगलगावे एकअनेकदिखायाहै
चतुर जुलाहे तनिया ताना बुनिया बस्तर
बहुत सुहाना । एकहि ताना एकहि बाना
सबमें सूत लगाया है ॥ ३ ॥
सुर नर पशु खग जीव जहाना ऊंच नीच
सब भेद मिटाना । ब्रह्मानंद स्वरूप पिछाना
सब घट एक समाया है ॥ ४ ॥

(पंजाबी काफी)

तब पावोगे तब पावोगे
जब गुरुकी शरण सिधावोगे ॥ टेक ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भरा समुंदर गहरा पानी
अध बिच नाव रही अटकानी । बिन मलाहके
चतुर सुजानी कैसे तरकरजावोगे ॥ १ ॥
परबत ऊपर शिखर मकाना प्रीतम पास खास
चलजाना । कौन बतावे राह ठिकाना जंगलमें
भटकावोगे ॥ २ ॥
नौलख तारा उगिया भारी सूरज चांद करें
उजियारी । ज्ञान बिना सब रैन अंधारी
किसबिध दर्शन पावोगे ॥ ३ ॥
गुरु भवसागर पार लगावे अगम अगोचर
अलख लखावे । मनके सारे भरम मिटावे
ब्रह्मानंद समावोगे ॥ ४ ॥

(पंजाबी काफी)

बलहारी मैं बलहारी मैं
गुरुचरणकमल परवारी मैं ॥ टेक ॥
तिमरभरे दोऊ नैनामेरे चहुं दिश छाये घोर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

अंधेरे । सत गुरु अंजन भरभर गेरे निर्मल
नजर उघारी मैं ॥ १ ॥
मैं परदेसन राह भुलानी बन जंगलमें फिरुं
हिरानी । सतगुरु मिलया रहबरजानी सीधे
मारग डारी मैं ॥ २ ॥
गहरी नदियां बेग अपारा डूबत जाय रही
मझ धारा । देकर अपना बांहसहारा पलमें
पार उतारी मैं ॥ ३ ॥
दुस्तर मायाजाल फसाई सतगुरु मेरी बंध
छुडाई । ब्रह्मानंद स्वरूप समाई घटघट जोत
निहारी मैं ॥ ४ ॥

(पंजाबी काफी)

घर जाना है घर जाना है
प्रीतमके देस सिधाना है ॥ टेक ॥
प्रीतमतैंनुंपासबुलावे तुं नित गलियोंमेंभटकावे
बिरथारैनचली सबजावे फिरपीछेपछताना है १

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करके आई कौल करारा अब क्यों दिलसें
ख्याल बिसारा। चलनेका नहि शोच विचारा
कबतक करें बहाना है ॥ २ ॥
सब गुणहीनी बदन मलीनी बीत गई सब
उमर नवीनी। हार सिंगार नही परवीनी
आखिरको शरमाना है ॥ ३ ॥
चलीगई सब संग सहेली तुंक्यों बैठीरहीअकेली
ब्रह्मानंद सुनो अलबेली औरनकहींठिकानाहै १

(पंजाबी काफी)

मन भाति है मन भाति है
अनहदकी टेर सुहाती है ॥ टेक ॥
गगनमहलमेंनौबतबाजेऊपरशिखरघटाघनगाजे
चंचलबिजलीचमकविराजे बूंदसुधाबरसातीहै १
बिन दीपक जहां जोत उजारा कोटि भानु
शशि चमके तारा। खेल करे नित प्रीतम
प्यारा सखियां मिलकर गाती हैं ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

उलटामारगकठिनदुहेलाकोइकपहुंचेगुरुकाचेला
सुरत शब्दका होवे मेला प्यालाप्रेमपिलातीहै ३
भ्रमरगुफामेंसेजबिछाई योगनींदतनसुधबिसराई
ब्रह्मानंद परम सुखदाई पूरण रूप समातीहै ४

(पंजाबी काफी)

उजियाला है उजियाला है
घटभीतर पंथ निरालाहै ॥ टेक ॥
त्रिकुटी महलमें ठाकुरद्वारा तिसके अंदर
चमके तारा । चहुं दिश परम तेज बिस्तारा
सुंदररूप बिशाला है ॥ १ ॥
सातखंडकाबनामकानासूक्ष्ममारगदुष्करजाना
गुरुकिरपासेंचढेसुजाना पीवेअमृतप्याला है २
सुरत हंसनी उडी अकाशा देखा अचरज
सकल तमाशा । तीनों भुवन हुया परकाशा
खुल गया निर्गुणताला है ॥ ३ ॥
कर्मनका बंधनसबटूटा माया मोहभराघटफूटा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्रह्मानंदसकलभयछूटा मिटगयासबभवजालाहै

(पंजाबी काफी)

पछतावेंगा पछतावेंगा
फिर वेला हाथ न आवेगा ॥ टेक ॥
रतन अमोलक मिलया भारी काच समझकर
दीना डारी पीछे खोजत फिरे अनारी फेर
कबी नहि पावेगा ॥ १ ॥
नदीकिनारेबागलगाया गाफिलसोवेठंडीछाया
चुनचुनचिडियांसबफलखायाखालीखेतरहावेगा
रेताकातुं महलबनावे करकरजतनसमानजमावे
पलमें बरखाआन गिरावे हाथमसलरहजावेगा ३
लगाबजारनगरकेमांहीं सबहीवस्तुमिलेसुखदाई
ब्रह्मानंद खरीदो भाई बेग दुकान उठावेगा ४

(पंजाबी काफी)

मन भाया है मन भाया है
श्रीकृष्ण मेरे घर आया है ॥ टेक ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

कोठि भानु शशि वदन उजारा तारागण
मणि मुकुट सितारा पीतांबर बिजली
चमकारा सुंदर रूप सुहाया है ॥ १ ॥
गगनमहलमेंमुरलीबजावेमधुरमधुरधुनरागसुनावे
तनमनकीसबसुधबिसरावे परमप्रेमरसछायाहै २
आप नचे सब लोक नचावे मिल सखियन
संग रास रचावे देख देख मेरो मन हरखावे
रूप अनेक बनाया है ॥ ३ ॥
घटघटखेलकरेगिरधारी अचरजसुंदर रचनाभारी
ब्रह्मानंद परमसुखकारी सतगुरु दरसदिखायाहै

(काफी पंजाबी)

वाहवा क्या खेल रचाया है
तेरा भेद किसी नहि पाया है ॥ टेक ॥
कहींराजाहैकहींरानी है कहींयोगीपंडितज्ञानीहै
कहींवैद्यज्योतिषीदानीहै कहींतापसवेषधरायाहै
कहींगुरुबनाकहींचेलाहै कहींनरनारीकामेला है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDR

कहींबैठा आप अकेलाहै कहींकायरशूरकहाया है
कहींपशुपक्षीजलचारीहै कहींदेवदैत्यतनधारी है
कहीं स्वर्ग पताल बिहारी है
कहीं भूतल बीच बसाया है ॥ ३ ॥
कहींभाईबंधुसुतनातीहैकहींनीचऊंचकुलजातीहै
ब्रह्मानंद कहींदिनरातीहै घटघटमेंआपसमायाहै

(राग भैरवी ताल ३)

मेरो प्रभुजी तुम बिन कौन सहाई ॥ टेक ॥
मातपितासुतबांधवनारीजी स्वारथहेतसगाई १
अंतसमेकोईसंगनजावेजी परबशजीवसिधाई २
धनजोबन दिनचारसहाराजीदेखतहीचलजाई ३
ब्रह्मानंद पडाभवसागरजी लीजियेमोहेबचाई ४

(भैरवी ताल ३)

मेरो मनरे भजले चरणमुरारी ॥ टेक ॥
दीनदयालजगतप्रतिपालकरेभक्तनकेहितकारी १
हरिकोनामजहाजजगतमेंरेभवसागरजलतारी २

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

क्यामायामेंफिरतभुलायोरेसिरपरकालसवारी३
ब्रह्मानंदभजनबिनहरिकेरेजन्ममरणभयभारी४

(भैरवी ताल ३)

तेरो प्रभुजी किस विध दर्शन पावुं ॥ टेक ॥
मैंमतिमंदसकलगुणहीनाजीसन्मुखहोतलजावुं १
जपतपयोगयज्ञ नहिकीनेजी कैसे पात्रकहावुं २
मैंअनाथतुमनाथजगतकेजी क्योंकरतोहेरिझावुं
ब्रह्मानंद दयालदयाकरजी भवसागर तरजावुं ४

(भैरवी ताल ३)

मेरी आली री शाम सुंदर दिखला दे ॥ टेक ॥
बिनदर्शन मोहे चैन न आवेरी चंद्रवदननिरखादे
सांवरीसूरतमोहनी मुरतरी मुझकोआजमिलादे
जमुनातटपर बंसी बजावेरी मधुरी टेर सुनादे
ब्रह्मानंदचरण बलिहारीरी नैनसफलकरवादे ४

(राग सोरठ)

मेरो मनरे भजले रामहरे ॥ टेक ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यहनरजन्म बहुर नहिआवे कोटिनयतनकरे १
सिरपर काल खडा निसबासर नेकन मूढडरे २
दीपक लेकर करके मांहि काहे कूप पडे ३
ब्रह्मानंदबिनाहरिसुमरण भवदुखकबीनटरे ४

(राग सोरठ)

मेरो मनरे क्यों न भजे हरिनाम ॥ टेक ॥
हरिकोनामसदासुखदायक सफलकरेसबकाम १
काया कष्टनहीहै तुझको लगत नही कछुदाम २
मानुष तन दुर्लभ जगमांही बीततजायतमास ३
ब्रह्मानंद सुमरनिसबासर मोक्षधाम निष्काम ४

(राग सोरठ)

हरिभजरे उमरा बीतचली ॥ टेक ॥
दिनदिनघडिघडिपलपलजावेजैसेजलअंजली १
जिम सूरजरथ धावत नभमें छाया जायढली २
यहमायाचंचल क्षणभंगुर जिमबादलबिजली ३
ब्रह्मानंद भजन बिनहरिके भटकतनरकगली ४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

(राग सोरठ)

कैसे सखीरी मनुवा धीर धरे ॥ टेक ॥
जिनके संग बिविधसुखलीने सो हमसेंबिछुडे १
हमसैं प्रीत लगाकर मोहन मथुरावासकरे ॥२॥
उनके रासबिलास सुमरकर नैनन नीरभरे ॥३॥
ब्रह्मानंद बहुरनहि आये हमरीसुधबिसरे ॥ ४ ॥

(राग सोरठ)

चालो सखीरी संतनसंगकरें ॥ टेक ॥
सतसंगत है सार जगतमें क्यों अवसर बिसरें ॥१
छोडकाजपुनलाजजगतकी हरिपदध्यानधरें २
संशय सकल दूरकर मनसैं ज्ञानप्रकाशकरें ॥ ३
ब्रह्मानंद स्वरूप जानकर भवजलसिंधुतरें ॥ ४ ॥

(राग बिहाग)

मनुवारे हरिगुणगानकरो ॥ टेक ॥
कलिकेवलहरिनामपरमपद मूरखक्योंबिसरो ॥
यहसंसार स्वप्नकी माया बिरथापचनमरो ॥२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कालघटासिरऊपरगर्जत फिरकिमधीरधरो ॥ ३
ब्रह्मानंद शरण पडप्रभुकी भवभय दूरहरो ॥४

(राग विहाग)

मनुवारे रामभजन जगसार ॥ टेक ॥
बडेबडे पृथिवीके राजा छोडगये दरबार ॥ १ ॥
चार दिवसजगबीचनिवासा बिरथासकलपसार ॥
कंचन जैसी सुंदरकाया पलमें होवतछार ॥३॥
ब्रह्मानंदकरोहरिसुमरण उतरोभवजलपार ॥४॥

(राग विहाग)

मनुवारे तज विषयनको संग ॥ टेक ॥
क्षणभंगुरसबवस्तुजगतमें जिमजलबीचतरंग १
मृगतृष्णाजलक्यों भटकावे जैसेमूढकुरंग ॥२॥
पापनमैल भरा तनमांही कैसे चढेहरिरंग ॥३॥
ब्रह्मानंदसुमरजगदीश्वर होयसकलभयभंग ॥४॥

(राग विहाग)

सुनो सखीरी आज स्वपनकी बात ॥ टेक ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

स्वपनेमें हरिदर्शन दीना तेजपुंजमयगात ॥१॥
शीशकिरीटश्रवणमणिकुंडल गलबनमालसुहात
शंखचक्रकरपद्मबिराजे चंद्रबदनमुसकात ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंदनिरखछबिसुंदर हर्षहियेनसमात ॥ ४ ॥

(राग विहाग)

सुनो सखीरी अनहदनाद बजे ॥ टेक ॥
गगनमहलमें नौबत बाजे साजअनेक सजे ॥१
घंटा शंख मृदंग बंसरी गर्जन मेघ गजे ॥२॥
झिलमिलझिलमिलजोतउजाला सूरजचांदलजे ३
ब्रह्मानंद मगन मन होवे भवभय दूरभजे ॥ ४ ॥

(राग मलार ताल ३)

सुनो सखी अब वर्षा ऋतु आई । सुंदर मेघ
गगनपर छाये शीतल पवन सुहाई ॥ टेक ॥
बिजली चमक डरावत मनको गर्जगर्ज बरसाई १
पर्वतसे जल झरत निरंतर नदियां बेगसवाई २
चहुंदिशि वृक्षलताबन फूले सकलभूमिहरषाई ३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDR

ब्रह्मानंदजगतहितकारण ईश्वरवृष्टिबनाई ॥ ४ ॥

(राग मलार ताल ३)

सुन सखी अब वर्षा दिन आये । पूरब पवन चले निस बासर घुमट घुमट घन छाये ॥ टेक
गर्जन सुनकर पपिया बोले मोरनशोर मचाये १
झिमझिम बूंदपडत आंगनमें ग्रीषमतापमिटाये २
सखियांमिलकर झूलतबनमें गावतगीतसुहाये ३
ब्रह्मानंद जगतपति ईश्वर जीवनसुखउपजाये ४

(राग मलार ताल ३)

सुन सखी वर्षा ऋतु मन भाई । कामकाज सब छोड जगतके निशदिन सुरत जमाई ॥ टेक ॥
त्रिकुटि महलमें चडकर देखा
बिजली चमक दरसाई ॥ १ ॥
अनहदगर्जनहोत गगनमें सुनसुन मन हरषाई २
अमृतबूंदपडतसुखदायक भवभयतपतमिटाई ३
ब्रह्मानंद स्वरूप समायो तन मन सुध बिसराई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

(राग भैरव प्रभाती)

नर क्या सुख सोवे संग लली
तेरे सिरपर ठाडो काल बली ॥ टेक ॥
पलपल छिनछिन रैन बितावे
जैसे टपकत जल अंजली ॥ १ ॥ नर०
साथी तेरे गये सवेरे
अब नहि गाफिल नींद भली ॥ २ ॥ नर०
मारग बिकट चोर भय भारी
लूट लेत संपत सकली ॥ ३ ॥ नर०
ब्रह्मानंद छोडकर आलस
संग सहायकले असली ॥ ४ ॥ नर०

(राग होरी ताल धमाल)

कृष्णने कैसी होरीमचाई अचरजलखियोनजाई
असत सतकर दिखलाई ॥ टेक ॥
एक समय श्रीकृष्ण देवके होरी खेलन मन
आई एकसे होरी मचे नहि कबहुं यातें करूं
बहुताई येही प्रभुने ठहराई ॥ १ ॥ कृष्ण०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पांच भूतकी धातु मिलाकर अंड[1] पिचकारी बनाई चौदह भुवन रंग भीतर भरकर नानारूप धराई प्रगट भये कृष्णकन्हाई ॥ २ ॥ कृष्ण०
पांचविषयकी गुलालबनाकर बीचब्रह्मांडछुडाई जिस जिस आंख गुलाल पडी सो सुधबुध सब विसराई नही सूजत अपनाई ॥ ३ ॥ कृष्ण०
ब्रह्मज्ञान अंजनकी सिलाका जिसने नैनमें पाई ब्रह्मानंद सबी तम नाश्यो सूझ पडी अपनाई भरमकी धूल उडाई ॥ ४ ॥ कृष्ण०

(होरी ताल धमाल)

सांवरो कैसी खेलत होरी अचरज खूब बनोरी कोई जन भेद लहोरी ॥ टेक ॥
तनरंग भूमिबनी अतिसुंदर बालन बागलगोरी नाडी अनेक गली जहां शोभत खेलेतहांकान[2] डोरी संग वृषभान किशोरी[3] ॥ १ ॥ सांवरो०

---

१ ब्रह्मांड. २ आत्मा. ३ बुद्धि.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

पांच सखी मिल पांच रंग भर देत बहोरी
बहोरी राधिका लेकरडारे शामपर सबतनदीन
भिगोरी कृष्ण मन मोद भयोरी ॥ २ ॥ सांवरो०
होरीमें मोद मानकर शामने राधिकावेष धरोरी
मिल सखियन संग फाग मचायो खेलतमगन
भयोरी आप सुधि भूलगयोरी ॥ ३ ॥ सांवरो०
खेलत खेलत जान न पायो दीर्घ काल गयोरी
बन बन फिरत रूप जब जानो सखियन संग
बिछोरी शाम ब्रह्मानंद मिलोरी ॥ ४ ॥ सांवरो०

(होरी ताल धमाल)

शामके संग खेलोरी होरी जन्म सफल कर
लोरी सखी मिल आज चलोरी ॥ टेक ॥
धर्म हेत हरि ब्रजमंडलमें आकर प्रगटभयोरी
धन्य भाग्य यशुमती रानीके जिन घर जन्म
लियोरी आप प्रभु दरस दियोरी ॥ १ ॥ शाम०

---

१ इंद्रिय. २ बुद्धि. ३ विषय.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDR

गल बनमाल बिराजत सुंदर शीश किरीट
धरोरी कानननमें मकराकृति कुंडल कमर मणी
लडडोरी चरण नूपुर झणकोरी ।। २ ।। शाम०
जमुनातटपर वंसी बनमें ग्वालन संग खडोरी
मुरली अधर मधुर धुन गावे नाचत मोद
भरोरी मनोहर रूप बनोरी ।। ३ ।। शाम०
सुरनर मुनिजन दर्शन करकर मनमें हर्षबडोरी
ब्रह्मानंद चरण बलिहारी भक्तिदान दीजोरी
सकल भवबंध हरोरी ।। ४ ।। शाम०

(होरी काफी ताल धमाल)

आयो बसंत सखीरी मिल खेलिये होरी ।।टेक।।
परके भूल गई गृहकाजन मनमें ताप रहोरी
जिन जिन खेली होरी शाम संग तिन बड
भाग्य भयोरी मिल खेलिये होरी ।। १ ।।
तज सब काज आज घरकेरे लाजको दूर धरोरी
फागनके दिन बीतजात फिर पीछे पछतोरी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

मिल खेलिये होरी ॥ ३ ॥
सतसंगति वृंदावन जाकर शामको खोजकरोरी
कर बिचार जुगतिसे घेरो जानन पावे बहोरी
मन पिचकारीपकडकर सुंदर ध्यानसे रंगभरोरी
प्रेम गुलाल मलो मुखऊपर ब्रह्मानंद रस लोरी
मिल खेलिये होरी ॥ ४ ॥

(होरी काफी ताल धमाल)

देख सखी जगदीशरी कैसी होरी रचाई ॥ टेक
पृथिवी रंगभूमि सुखदायक गगनकनातलगाई
वृक्षबगीचे पर्वत सागर नदियां नीर भराई
री कैसी होरी रचाई ॥ १ ॥
एकही रूप अनेक भांत कर सूरत युगल बनाई
पशुपक्षीनरदेव दनुज सब मिलकर फाग मचाई
री कैसी होरी रचाई ॥ २ ॥
वीजसे वीज बना कर नूतन रंगत खूब जमाई
एकसे एक मिलन नही पावे यह प्रभुकी चतुराई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

री कैसी होरी रचाई ॥ ३ ॥
पांच विषयके रंग मनोहर नाना किसम
सुहाई ब्रह्मानंद जीव सब भर भर खेल करत
सुखदाई री कैसी होरी रचाई ॥ ४ ॥

(होरी काफी ताल धमाल)

होरी कुंज गलिनमें खेलत नंद कुमाररी ॥ टेक
मोर मुकुट सिर ऊपर सोहे गल फूलनके
हाररी पीतांबर कटि बीच विराजे पग नूपुर
झणकाररी ॥ १ ॥ होरी०
ग्वालबाल सब मिलकरखेलें खेलें ब्रजकीनाररी
भरभररंगपरस्परछोडें पिचकारिनकी धाररी २
लाल गुलाल अबीर उडावें केसर छुटतफुवाररी
भूषण बसनबदनसबभीने चालचलतलचकाररी
हाथमिलाय मिलाकर नाचें राधाकृष्णमुराररी
ब्रह्मानंद जुगलछबिसुंदर चरणकमल बलिहाररी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

(होरी काफी ताल धमाल)

मैं तो गुरु अपनेसें होरी खेलुं मन धाररी ॥ टेक
प्रेमभावका रंग बनावुं भक्ति गुलाल सुधार री
ज्ञान विवेक भरुं पिचकारी छोडुं बारंबार री १
योग युक्तिका चंदन लेपुं ध्यान पुष्प गलहार री
अनहदनाद बजावुं सुंदर सुरत निरत सिंगार री
निगमागमके वाक्य मनोहरगायन करुंविचार री
मिलसत्संगत फागमचाउं संशयसकलनिवार री
एकरूप सब जगमें देखुं भेदभाव सब टार री
ब्रह्मानंदमगनमननिशदिन छुटेंसकलविकार री

(राग काफी ताल धमाल)

दीनानाथ रमापति भवदुख हमरा हरोरे ॥ टेक
करमेंचक्रसुदर्शनपकडो शीशकिरीटधरोरे ॥१॥
गल बेजंती मालडालकरपीतवसनपहरोरे ॥२॥
वाम अंकमेंलेकमलाकोगरुडसवारीकरोरे ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद विलंबनकीजे शरणतुमारीपडो रे ॥४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(काफी ताल धमाल)

दीनानाथ रमापति मैंहुंशरण तुमारी जी ॥ टेक
कामक्रोधमदलोभलुटेरे रखियेलाजहमारी जी
स्वारथकेसबमित्रजगतमें केवलतुमहितकारी जी
भवसागरमें डूब रहाहुं लीजिये बेग उबारीजी
ब्रह्मानंद दान मोहे दीजे नाम तेरासुखकारीजी

(काफी ताल धमाल)

नाम निरंजन गावोरे सब छोड भरमणा ॥ टेक
नाम निरंजन सबदुखभंजन
महीमनसेंबिसरावोरे ॥ १ ॥
विषयारस मृगतृष्णापानीक्योंविरथाभटकावोरे
क्यामथुराक्यापुरीद्वारका क्याकाशीपुरजावोरे
ब्रह्मानंदसकलजगपूरण घटमेंदर्शनपावोरे ॥४॥

(काफी ताल धमाल)

अब जाग मुसाफिर नींदनकरोपियारीरे ॥ टेक
घडिघडि पलपल छिनछिन करके रैन
गुजरिया सारीरे ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

जानाआजजरूरीतुझको उठकरकरोतियारीरे २
कोईनसंगसहायकतेरो पंथकठिन भयभारी रे ३
ब्रह्मानंद सुमर जगदीश्वर वो तेरा हितकारी रे ४

(काफी ताल धमाल)

जगदीश दयानिधिभवभय दूरनिवारोजी ॥ टेक
जन्ममरणभवचक्करमांही फिरतफिरतअबहारोजी
जपतपयोगनहीकछु मेरे केवलदासतुमारोजी २
मेरेअवगुणनाथनहेरो अपनोबिरदविचारोजी ३
ब्रह्मानंद शरणमें तेरी दीजियेचरणसहारोजी ४

(काफी ताल धमाल)

यह संसार असाररी काहे प्रीत लगावे ॥ टेक
जिससें प्रीत करे तुं प्यारी कोईनरहवनहाररी १
सुत धनधामसंगनहिजावे झूठासकलपसाररी २
मानुषजन्ममिलाजगमांही करहरिभजनसुधाररी
ब्रह्मानंद छोडकरममता करोजगतव्यवहाररी ४

(काफी ताल धमाल)

चरखा कात सुधार री सुन चतुरसियानी ॥टेक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यह चरखा लकडीका तेरा किसकेचलतसहाररी
इस चरखेमें जोड घनेरे कौन मिलावन हार री
इस चरखेकी माल पुराणी टूटे लगत न वार री
ब्रह्मानंद गूंज चरखेकी सुन ले मनको धार री

(रंभा–शुकसंवाद)

भजनमें क्यों चित धरियोरे
भजनमें क्यों चित धरियो
रंभा शुकसे कहे मानलो बचन हमारीरे ॥ टेक
परमेश्वर ने जगत बनाया
नर नारी का जोग मिलाया
भोगो सुख संसार तजो बन संकट भारी रे ॥
भजन में क्यों० ॥ १ ॥
यह संसार स्वपन की माया
क्षणभंगुर जोबन धन काया
परमेश्वर का नाम सुमर भव सागर तारीरे ॥
भजन में क्यों० ॥ २ ॥
नारीसुखसम सुख नहिं कोई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

सुर नर ऋषि मुनि भोगत सोई
विरथा सब जंजाल तिलक माला बांधरियोरे ॥
भजन में क्यों० ॥ ३ ॥
नारी सुख दुख रूप विकारी
जन्म मरण भवबंधनकारी
पामर लोक लुभाय रहा हरिनाम विसरियोरे ॥
भजन में क्यों० ॥ ४ ॥
चन्द्रकिरण मुखपंकज नैनी
कोमल गात मधुर पिक बैनी
नहीं भोगी जिन नार वृथा जगमें अवतरियोरे॥
भजन में क्यों० ॥ ५ ॥
शीश किरीट गले बनमाला
चतुरभुजा कर गदा विशाला
धरा नहीं जिन ध्यान वृथा जगमें पच मरियोरे॥
भजन में क्यों० ॥ ६ ॥
सुन्दर तन जोबन रस भीनी
हार सिंगार विहार प्रवीनी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDR

कंठ लगीनहीं नामकामनिष्फल सब करियोरे॥
भजन में क्यों० ॥ ७ ॥
कमलनयन पीतांबरधारी
कमर मेखला भवभयहारी
सुमरोनहीं जिन नामनरकमें जाकर गिरियोरे॥
भजन में क्यों० ॥ ८ ॥
अलक भाल गल मोतिन हारा
करिकर जंघ कठिन कुचभारा
नारी सुख की खानजानसब छोड झगरियोरे॥
भजन में क्यों० ॥ ९ ॥
तिलक भाल गल कौस्तुभ राजे
वाम अंग में लक्ष्मी विराजे
परमानंद निधान सकल भवबंधन हरियोरे ॥
भजन में क्यों० ॥ १० ॥
कंचन देह परम सुख देनी
अतर फुलेल सुगंधित बेनी
गल फूलन के हार रूप दीखे मन हरियोरे ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

भजन में क्यों० ॥ ११ ॥
हाड मांस का बना शरीरा
भीतर भरा रुधिररस नीरा
विन विचार बाहिरसे दीखत है सुंदरियोरे ॥
भजन में क्यों० ॥ १२ ॥
ऊंचे महल पवन सुखदाई
चुन चुन फूलन सेज बिछाई
करो कामनी भोग योगमें क्या सुख पडियोरे॥
भजन में क्यों० ॥ १३ ॥
गंगा तट गिरि गुफा सुहाई
मृगछाला तल कुशा बिछाई
करो समाधी योग भोग भवजालबिछडियोरे॥
भजन में क्यों० ॥ १४ ॥
नारीसे सब जग उपजाई
ब्रह्मा शिव हरि अंग लगाई
तुम बालक नहीं जानो विषयानंद लहरियोरे॥
भजन में क्यों० ॥ १५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तुम अपने घर जावो नारी
हमको वांछा नहीं तुम्हारी
ब्रह्मानंद स्वरूप मगन मन पलकन टरियोरे ॥
भजन में क्यों० ॥ १६ ॥

(लावणी सरल)

कहे भक्तप्रहलादपिताजी हरीभजनमुझेकरनेदे
मानुष देह मिली दृढनौका भवसागरजलतरनेदे
रामनामधनरतन अमोलक गुप्त खजानाभरनेदे
प्रभुके चरनकमलमेंमेरेनिश्चलमनको धरनेदे १
बात हमारी मानो बेटा रामनाम मत याद करो
हमरी आज्ञासिरपरधारोनहिंविरथा संवादकरो
मारुंखड्गउडाऊंसिरकोफिरकिससेफरियादकरो
राज्यपाटसुखभोगपिताजी क्षणभंगुरकहलातेहैं
जीव अकेला आवे जावे कोई संग नहीं जातेहैं
हरीका नामजपेजो निशदिनसोईमोक्षपदपातेहैं
मारणहाराकौन जगतमें जिनकोराम रखातेहैं ३
सबदेवनको जीत युद्धमें राज्यजगतका पायाहै

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

स्वर्गलोक पाताल जिमींपर मेराहुक्म चलायाहै
मेरी बात न माने मूरख काल तेरे सिरछायाहै
एकपलकमेंमारगिराऊं कोईनहोयसहायाहै ॥४॥
मतकर गर्वगुमान पिता जी नश्वरतनधनसारेहैं
वडे बडे पृथवीके राजा काल बली ने मारेहैं
मेरी मेरी करत गये सब खाली हाथ पसारेहैं
सोई अमर रहें जगमांहीं जोजन राम सहारेहैं५
कठिन तपस्या करके मैंने बर ब्रह्मासे धाराहै
अमरहोयकर राज्य करूं मैं जब लग सूरजताराहै
मेरा नाम सुनत सब कांपे देव दैत्य गण साराहै
कौन जगतके अंदर मुझ को दूजा मारणहाराहै
ब्रह्मा इन्द्र कोटि चल जावें कायम नहीं रहातेहैं
फिर कैसे जगमें थिर होवे जो उनसे वरपातेहैं
राज्य पाट धन माल खजाने सबीछोडकरजातेहैं
वर्ष अनेक रहें जगमाहीं अंतकाल बश आतेहैं
कहां तेरा वोहैं रखवारा जिसका तुझे सहाराहै

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बार बार समझावुं तुझको माने नहीं गवाराहै
एक खड्गसे करूं तुह्मारा धडसे शीश नियाराहै
अबमें देखूं कोन जगतमेंतुझे बचावनहाराहै ८
सकलजगतकावो है स्वामीजिसकामुझेसहाराहै
तोमें मोमें खड्गखंभमें व्यापकविश्वअधाराहै
खंभफोडकर प्रगटभये नरसिंहरूपहरिधाराहै
ब्रह्मानंदपकडपलमाही फाडदैत्यकोमाराहै ९

(लावणी सरल)

नारायणकानामसदानर दिलअंदरलाना चहिये
मानुषतन है दुर्लभजगमें इसकाफलपानाचहिये
दुर्जन संग नरकका मारग उससे दूरजाना चहिये
सतसंगतमेंबैठहमेशां हरिके गुणगानाचहिये १
धर्म कमाई करकेअपने हाथोंकी खाना चहिये
दुखीदीनजनदेखदयाकरके कुछदिलवानाच०
परनारीको अपनी माताके समान जाना चहिये
सब जीवनके सुखदुख अपने तन जैसे मानाच०
झूठकपटकी बात सदा कहनेमें शरमाना चहिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

सत्यबोलनेकी आदतको मनमें अटकानाचहिये
ताशगंजफाखेलतमाशा सबकोछिटकानाचहिये
कथापुराण संतसंगतमें दिलको बहलानाचहिये
मातपिता अरु गुरुकी आज्ञा सदाबजवानाच०
करेजोनर उपकारसदा उसकागुण सुमरानाच०
कामशुरु जो कियाहोयशुभजलदीनिपटानाच०
बुरेकामका होयविचारतो मनमेंलटकानाचहिये
पापकर्महोजाय सदाफिर दिलमेंपछतानाचहिये
करकेपुण्यकाकामनामउसका फिरबिसरानाच०
विद्या अरुशुभगुणकेकारण धनकोखरचानाच०
नाचरंगअरुपानभोगमें दिलकोसकुचानाचहिये
अन्नदानसमदान न दूजा उसकोवरतानाचहिये
सदा सुपातर अरु दुखियोंको भोजनकरवानाच०
पशुपक्षी सबजीवजंतुको सुखनित पहुंचानाच०
घटघटमें ईश्वर व्यापक है एकरूप मानाचहिये
अपनी जोनर करे बुराई उसको सहजानाचहिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कालखडा है सिरकेऊपर मनमें डर पानाचहिये
पर उपकार सदा करनेको मनमें हरषानाचहिये
सबसे मिल जुलके दुनियामें उमरागुजरानाच०
नितउठके परभातसमेमें ईश्वरको ध्यानाचहिये
भोगबिलासछोड दुनियांके मनको ठहरानाच०
ज्ञानसीखसतगुरुसे रूपअपनेको पहचानाचहिये
ब्रह्मानंदमें लीन होय भवसागर तरजानाचहिये

(लावणी सरल)

हरिकानामसुमरनरप्यारे कबी भुलानानाचहिये
पाकर मानुष तनदुनियांमें मुफत गमानानाच०
झूठकपटअरुपापकर्मसे धनकोकमाना नाचहिये
परनारीसे कबी भूलकर प्रीतलगाना नाचहिये
देकरकेबिश्वासकिसीको फिरहटजाना नाचहिये
दुर्जननरकोअपने पासमेंकबी बिठाना नाचहिये
साचेमित्रसे दिलकीकोई बातछिपाना नाचहिये
अपनेघरकाभेदकबी दुशमनकोबताना नाचहिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

आमदसे पैसेका ज्यादा खर्च बढाना नाचहिये
लोकबडाईमें करजाकर धनकोलुटाना नाचहिये
बेदशास्त्रके धर्म सनातनको बदलाना नाचहिये
नये नये पंथोंकी बातें सुनके फसाना नाचहिये
आश पराई बुरी हमेशां मनमें लगाना नाचहिये
अपना पुरुषारथ करनेमें दिलशरमाना नाचहिये
पुण्यकर्म करके पीछे मनमें पछताना नाचहिये
पापकर्मकीतरफकबीमनकोललचाना नाचहिये
जहांनआदर होयकबी उसघरमेंजाना नाचहि०
अपनेघरमेंआयेजनके दिलको दुखानानाचहिये
बिनामालिककेहुकुम किसीकीवस्तुउठाना ना०
घरके झगडे कारण राजसभामें जाना नाचहिये
बिनजानेपरिणाम किसीकारजको बनाना ना०
अपना करना भरनादोषदूजेकोलगानानाचहिये
रणभूमीमें जाकर मरनेसे डरपाना नाचहिये
बिपत पडेजोआयकबीमनमें घबराना नाचहिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDR

ईश्वरअंश जीवहै सारे दुख उपजाना नाचहिये
अपनेगुरु अरुमातपितासे कपटचलाना नाच०
परमेश्वर है तनमें बनमें खोजनजाना नाचहिये
कर सतसंगविचार सदादिलसे बिसराना नाच०
यह इन्द्रियदुशमनहैं तेरे बशमें आना नाचहिये
ज्ञानविवेकयोगमारगसे दिलको हटाना नाच०
सबजग मिथ्याजानधरो नितध्यानडुलाना ना०
ब्रह्मानंदको पाकरफिरभवमें भरमाना नाचहिये

(लावणी लंगडी)

पुरुषार्थको करो सदानर कर्मकर्म तुं क्या गावे
ऐसी बस्तु नही दुनियांमें पुरुषार्थसें नहि पावे
पुरुषार्थबिन होय दरिद्री दोष कर्मका बतलावे
सकल कामना सिद्ध होय जोपुरुषार्थमनमेंलावे
किरपाकरके जगदीश्वरने मानुष तनयहदीना है
हाथ पांव सब अंगमनोहर एकसें एक नवीना है
सबही जीव जूनके अंदर सुंदर एक नगीना है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

पुरुषार्थबिन व्यर्थ गमावे मूर्ख कदर नचीनाहै
परमेश्वरने जगत बगीचा तुमरे काज बनायाहै
किसमकिसमके फलफूलनसेसुंदरखूबसजाया है
पुरुषार्थवाले पुरुषोंने तोड तोड फल खाया है
मूंढ आलसी बैठे देखें बिरथा मन ललचायाहै
बालपणे नहिविद्यासीखे बिरथावखतगमाता है
जोबनमें पुरुषार्थ करके धनको नही कमाताहै
भावीबातकबी नहि सोचे बिरथा खरचकराताहै
बिनाद्रव्य कोई बातन पूछे बूढेपण पछताताहै
पुरुषार्थ करनेसें ध्रुवने राज्य पिताका पाया है
गंगानदी भगीरथ राजा पुरुषार्थसे लाया है
रामचंद्रने जाकर लंका रावण नाश कराया है
विश्वामित्रभी पुरुषार्थसे ब्रह्मऋषी कहलाया है
पुरुषार्थ करनेसेंभी जो काम नही बन आताहै
उसकोफिराफिरकरेशोचकरअंतवहीबनजाता है
बिन बिचारके जतन करेजो सोपीछेपछताता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDR

हिंमत हारहटे नहि पीछेसो निश्चयफलपाता है
कर्मगतीकी बातजो बेद पुराण ग्रंथमें गाई है
वोतो मनके शोचाफिकरके रोकनकोसमझाई है
सूते पडे सिंहके मुखमें नही शिकार समाई है
पूरे गुण अरु न्याय धर्मसे खूबकरो चतुराई है
बालपणेमें विद्या सीखो जोबन करो कमाई है
मातपिता नारीसुत बांधव सबके बनो सहाई है
वृद्धपणेमें परमेश्वरका भजन करो सुखदाई है
ब्रह्मानंद मोक्षपद पावो जन्मसफलहोजाई है ८

(लावणी सरल)

काहे गर्वकरे नर मूरख यह सबदुनियांफानी है
बिनशजायस्वपनेकीमायाजिमअंजलिकापानी है
ब्रह्मा रुद्र इन्द्र चलजावें क्या तेरी जिंदगानी है
पलमें नाशहोययहकाया व्यर्थबनाअभिमानी है
कहांगये वो हिरणकशपजो दैत्यवीरबलवानबडे
सकलजगतका राज्यजीतकरमनमेंगर्वगुमानभरे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

कष्टदियो प्रहलाद भक्तको तबरक्षाभगवानकरे
नरसिंघरूपधारकरहरिने एकपलकमें प्राणहरे २
कहांगये वो बलिराजा जिनरणमेंइन्द्रहरायाथा
स्वर्गलोकपातालजिमीपरअपनाराज्यचलायाथा
सकलजगतमें यश करनेको भारी यज्ञरचायाथा
तीनचरणपृथिवीकेकारण हरि पातालपठायाथा
कहां गये वो दशशिररावण तीनलोकबशकीनेथे
कठिन तपस्या करके जिसने शंकरसें वरलीनेथे
माल खजाने सेना भारी सुंदर महल नगीनेथे
इन्द्र कुबेर वरुण यमराजा जिनके सबीअधीनेथे
कहांगये वो रामचंद्र जिन लंका नाशकराईथी
वानरकुलसे करी मित्रता सागर पुल बनवाईथी
पार समुंदर जाकर सारी राक्षससेना गिराईथी
जनकसुताकीबंधछुडाकर मनकीशोचामिटाईथी
कहां गये वोहरिश्चंद्रजिन सबधनदानकरायाथा
सत्यधर्मके कारणअपना सकलकुटुंबबिकायाथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भारीविपत पडीसिरऊपर मनकोनहीडुलायाथा
धर्मपरीक्षा पूरणकीनी तीनलोकयशछायाथा ६
कहांगये दुर्योधन राजा जिनके मन हंकारभरे
डारकपटका पासा जिसने सब भूमीका राज्यहरे
द्रुपदसुताको पकडकेशसें बीच सभाके नगनकरे
भीष्मद्रोणकर्णदुःशासन जिसकीआज्ञाशीशधरे
कहां गये वो पांचों पांडव शूरबीर बलकारीथे
जिनके बाण अमोघ भुजाबल दुष्टनके संहारीथे
सत्यबचननितधर्मपरायण साधुजनहितकारीथे
सदासहायक आपजिनोंके कृष्णचंद्र गिरधारीथे
यहसंसार सरायचला चल इकआवतइक जाताहै
पंडितयोगी सिद्धसुरमा कोई रहननही पाताहै
भाईबंधु सुतमीत पियारे झूठ जगतका नाताहै
ब्रह्मानंद सुमरजगदीश्वर सबभवबंधमिटाताहै ९

(राग बिहार ताल ३)

श्रीकृष्णं कहे सुन अर्जुन बात हमारी

---

१ वन आये गोपीनाथ वैद्यवनवारी. २ भजन.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

तुझको समझावुं ब्रह्मज्ञान निर्धारी ॥ टेक ॥
यह चेतनजीव वसे नित तनके मांही
जिम राजा नगरी बीच निवास कराई
दश इन्द्रिय अरु मन सेवक हैं सुखदाई
सब प्राण खडे दरवान करें निगराई
अंदर बैठा नित देखे रचना सारी ॥ १ ॥
यह पांच भूतका बना शरीर तुमारा
क्षणभंगुर है जडरूप विनाशन हारा
बालापण जोबन जराशरीर विकारा
यामें साक्षी है जीव रहे नित न्यारा
कर जुदादेह अरुजीव तुं देख विचारी ॥ २ ॥
जिम पंछी लोभ कर पिंजर मांहि फसाया
तिम जीव कर्म वश धारण कीनी काया
विषयोंकी लालच देख फिरे भरमाया
अपनो सुखचेतन सत्यरूप विसराया
भवबंधन जीव पडा बिनज्ञान अनारी ॥ ३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDR

जिम वस्त्र पुराणे छोड नये नर धारे
तिम जीव एकसे दूजी देह सिधारे
मरणा जनना है देहधर्म सुन प्यारे
अजरामर चेतन जीव मरे नहि मारे
यह है अविनाशी अचलरूप अविकारी ॥ ४ ॥
सब जीव अंश मेरे निश्चय कर जानो
घटघटमें एक स्वरूप मुझे पहचानो
गौ कूकर ब्राह्मण श्वपच भेद नहि आनो
सबके सुखदुखको अपने समकर मानो
तज कामक्रोध अरु लोभमोह दुःखकारी ॥५॥
मुझको सब जीव बराबर हैं देखनमें
पर भजे जो मुझको भजुं तिनें मैं मनमें
यह बात सत्य है सुनो कहुं अर्जुन में
मुझ भक्त पडे नहि फेर जन्मबंधनमें
निशदिन मनमें मुझ परम भक्तिकरप्यारी ॥६॥
परमेश्वर पूर्णब्रह्म जगत उपजावे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

माया चक्रमें जीव चडाय फिरावे
युग बीत गये बेअंत अंत नहि आवे
जो उसकी जावे शरण मोक्षपद पावे
कर भजन ईशका मिटे सकल भयभारी ॥ ७॥
सब सार ज्ञानका सुन अर्जुन अब प्यारा
मम शरण पडो नित और धर्म तज सारा
मैं सब पापोंको मेट करूं भवपारा
मत करो जरा तुम मनमें शोचविचारा
तुं ब्रह्मानंद स्वरूप सदा मनधारी ॥ ८ ॥

(राग विहार)

श्रीराम कहे सुन लछमन वचन हमारा
मत सोच करो मनबीच किसी परकारा ॥ टेक
है कर्मगती बलवान जान दिल मांही
जो लिखे विधिके अंक मिटे वो नांही
कर देखो जतन हजार पार नहि पाई
जो भावी परबल होय वही हो जाई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मूरख जन मनमें बिरथा करे बिचारा ॥ १ ॥
जो मात केकईने अपना वर लीना
कर धर्म बिचार करार पिताने दीना
मुझको बनवास मिला यह कर्म अधीना
नहि है इसमें कछु दोष किसीका कीना
यह बात हमारी मान तजो हंकारा ॥ २ ॥
जब कर्म आपना फल देनेको आवे
अन जाने उसका हेतु खडा हो जावे
वो बडे अकलमंदोंकी बुद्धि फिरावे
परवश मायाके चक्करमें भरमावे
नहि समझ पडे कर्मनकी गती अपारा ॥ ३ ॥
राजा हो जावे रंक रंक नृप भारी
योगी भोगी हो जाय गृही बनचारी
ज्ञानी नर मूरख होय मूढ मतिधारी
कायर होवे बलवान बली रणहारी
सब रीत होय विपरीत कर्म आधारा ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

सब पांडव धर्मपरायण राज्य हराया
हरिचंद्र बनारस बीच कुटुंब बिकाया
नल राजाको बन जंगलमें भटकाया
मुझको भी कर्मनने यह समय दिखाया
तज राज्य तिलक बन कंद मूल आहारा ॥५॥
यह ऊंच नीच जग ईश्वरने उपजाया
निज कर्मनके अनुसार विचार बनाया
जैसा जिसका है कर्म वही फलपाया
है परमेश्वरका नियम न मिटे मिटाया
इस कर्म डोरसे बांधा सब संसारा ॥ ६ ॥
यह पांच तत्त्वकी देह बनी है भाई
सुख दुख फल भोगनके हित कर्म रचाई
जो चेतन जीव रहे हिरदेके मांही
वो परमेश्वरकी अंश वेद बतलाई
उससे चेतन हो रहा शरीर तुमारा ॥ ७ ॥
जब इस शरीरसे जीव जुदा कर माना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सब व्यापक पूर्ण ब्रह्म रूप पहिचाना
तब मिटे कर्मका बंधन आवन जाना
सब मिले तत्त्वमें तत्त्व मोक्षपद पाना
यह ब्रह्मानंद विचार सार निर्धारा ॥ ८ ॥

(गुरु आरति)

जय गुरु देव दयानिधि दीनन हितकारी
जय जय मोहविनाशक भवबंधनहारी ॥
जय देव गुरु देव ॥ १ ॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव गुरु मूरतिधारी
वेद पुराण बखानत गुरु महिमा भारी ॥
जय देव गुरु देव ॥ २ ॥

जप तप तीरथ संयम दान विविध दीने
गुरु बिन ज्ञान न होवे कोटि जतन कीने ॥
जय देव गुरु देव ॥ ३ ॥

माया मोह नदी चल जीव बहें सारे
नाम जहाज बिठा कर गुरु पलमें तारे ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

जय देव गुरु देव ॥ ४ ॥
काम क्रोध मद मत्सर चोर बडे भारे
ज्ञान खडग दे करमें गुरु सब संहारे
जय देव गुरु देव ॥ ५ ॥
नाना पंथ जगतमें निज निज गुण गावे
सबका सार बता कर गुरु मारग लावे
जय देव गुरु देव ॥ ६ ॥
गुरुचरणामृत निर्मल सब पातक हारी
बचन सुनत तम नाशे सब संशय टारी ॥
जय देव गुरु देव ॥ ७ ॥
तन मन धन सब अर्पण गुरुचरणन कीजे
ब्रह्मानंद परम पद मोक्ष गती लीजे ॥
जय देव गुरु देव ॥ ८ ॥

(शिव आरति)

जय शिव शिव शिवशंकर जय गिरिजाधीशा
जय जय करुणासागर पशुपति जगदीशा ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जय देव महादेव ॥ १ ॥
जूट जटा सिर ऊपर सुरसरि धार चले
चंद्रकला मस्तकमें मुंडन हार गले
जय देव महादेव ॥ २ ॥
भाल विलोचन सुंदर कुंडल काननमें
भूषण नाग विराजित बाघांबर तनमें ॥
जय देव महादेव ॥ ३ ॥
अंग विभूति मनोहर गौर शरीर लसे
कर त्रिशूल परशु वर गिरिजा संग बसे ॥
जय देव महादेव ॥ ४ ॥
गिरि कैलासशिखर शुभ सिंहासन राजे
नंदी गण गणनायक शोभित दरवाजे ॥
जय देव महादेव ॥ ५ ॥
ऋषि मुनि सुर गण मिल कर महिमा गानकरे
योगी जन हिरदेमें निश दिन ध्यान करे ॥
जय देव महादेव ॥ ६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

सकल मनोरथ दायक दीनन दुख हर्ता
जन्म मरण भव बंधन हारण सुख कर्ता ॥
जय देव महादेव ॥ ७ ॥
पूरण ब्रह्म निरंजन निर्गुण गुणराशी
सकल जगत प्रतिपालन कारण अविनाशी ॥
जय देव महादेव ॥ ८ ॥
जो जन शिवकी आरति गायन नित्य करे
ब्रह्मानंद सहजमें सो भवसिंधु तरे ॥
जय देव महादेव ॥ ९ ॥

(विष्णु आरति)

जय जगदीश्वर ईश्वर करुणानिधि स्वामी
जय जय सब जगपालक प्रभु अंतर्यामी ॥
जय देव हरिदेव ॥ १ ॥
शाम स्वरूप मनोहर पीत बसन धारी
शशिमंडल मुखशोभा मंद हसन प्यारी ॥
जय देव हरिदेव ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शीश मुकुट मकराकृति कुंडल काननमें
मस्तक तिलक बिराजे बनमाला तनमें ॥
जय देव हरिदेव ॥ ३ ॥
चतुर भुजा बाजुबंद कंकण सुखदाई
शंख चक्र गदा पद्म बिराजे करमांही ॥
जय देव हरिदेव ॥ ४ ॥
कटिमें मणिमय सुंदर मेखल राज रही
चरणनमें नूपुर धुनि छन छन बाज रही ॥
जय देव हरिदेव ॥ ५ ॥
वाम अंकमें कमला मुखपंकज सोहे
निरख युगल छवि सुंदर ऋषि मुनिमन मोहे ॥
जय देव हरिदेव ॥ ६ ॥
स्वर्ण सिंघासन बिस्तर कोमल सुखकारी
शेष नाग फण छत्र बिराजे सिर भारी ॥
जय देव हरिदेव ॥ ७ ॥
गरुड खडे करजोडे पार्षद चमर करें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

शिव सनकादिक नारद शारद ध्यान धरें ॥
जय देव हरिदेव ॥ ८ ॥
दीनदयाल दयानिध भक्तन हितकारी
शरणागत प्रतिपालक भवबंधन हारी ॥
जय देव हरिदेव ॥ ९ ॥
जो जन हरिकी आरति प्रेमसहित गावे
ब्रह्मानंद परम पद सो निश्चय पावे ॥
जय देव हरिदेव ॥ १० ॥

इति श्रीब्रह्मानंदस्वामिविरचिता भजनमाला समाप्ता.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीस्वामी ब्रह्मानंदजीके रचेहुये पुस्तकोंका सूचीपत्र.

श्रीब्रह्मानंद मोक्षगीता.

मूल संस्कृत श्लोक भाषाटीकासहित. इस ग्रंथमें १८ अध्याय हैं जिनमें धर्म, योग, सांख्य, वेदांत आदि सर्व शास्त्रोंका सार निरूपण किया है. और मोक्षपद मार्गके साधनभी भली प्रकारसे लिखे हैं. धर्मसंचयके अनुसार परलोक गतिका वर्णनभी लिखा है. विचारशील स्त्रीपुरुषोंके अवश्य पढने योग्य है. जिल्दबंद ग्लेज कीमत १॥) डेड़ रुपया.

आवश्यक निवेदन—लड़ाई के कारण कागज़ छपाई इत्यादि सभी वस्तुओंका मूल्य उत्तरोत्तर-बढ़ता जा रहा है. इसलिये श्रीब्रह्मानन्दभजनमालाका मूल्य १॥) डेढ़ रुपय्या रखा गया है. सो विदित रहें.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

ईश्वरदर्शनम् ।

यह ग्रंथ ईश्वरभक्ति उपासनाके विषयका है. जिज्ञासुजनोंके सरलमार्गसे तत्त्वज्ञानका पूर्णरीतिसे बोध होनेके लिये निर्माण किया है. तथा निर्गुण ईश्वरका स्वरूप लक्षण, आराधनकी विधिका विधान विस्तारसे किया हुवा है. और अध्यात्म-विद्याके जाननेके लिये ईश्वरदर्शन यह एकही पुस्तक है. सूत्र भाष्य भाषाटीकासहित. जिल्दबंद ग्लेज कीमत १॥) डेड़ रुपय्या.

श्रीनित्याचारदर्पणः ।

यह ग्रंथ नित्यनियमका है. शास्त्रोक्त रीतिसे सदाचारका नित्य पालन करना. इष्ट देवता तथा ईश्वरके साकार और निराकारकी आराधन करनेकी सारी विधि है. विष्णु, शिव, दुर्गा, आदि देवताओंके पूजन तथा ध्यान करनेकी विधि सरल रीतिसे विस्तारसे लिखी है. प्रातःकालसे लेकर रात्रीके सोने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समयतकका नित्याचार और स्त्रियोंका धर्म भली प्रकारसे निर्माण किया है. सो भक्त पुरुषों तथा स्त्रीयोंका ईश्वरका आराधन नित्यकर्म अवश्य करना चाहिये. मूल संस्कृत भाषाटीका जिल्दबंद ग्लेज कीमत ॥) आठ आना.

श्रीविचारदीपकः ।

मूल श्लोक संस्कृत भाषाटीकासहित. यह ग्रंथ वेदांत विषयका है. इसमें गुरुशिष्यके संवादद्वारा सब वेदांतशास्त्रोंका सार निरूपण किया है. जिल्दबंद ग्लेज कीमत १।) सवा रुपया.

श्रीयोगरसायनम् ।

मूल श्लोक संस्कृत भाषाटीका. इस ग्रंथमें योग शास्त्रोंका अपने अनुभवके अनुसार योगके आठ अंगोंका वर्णन किया है. योगविद्याके जाननेके लिये यह ग्रंथ निर्माण किया गया है. जिल्दबंद ग्लेज कीमत ॥।) बारा आना.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

श्रीब्रह्मानंदप्रश्नोत्तरी ।

यह ग्रंथ शुद्धहिन्दी भाषामें है. इसमें शिष्य और गुरुके प्रश्न उत्तरकी रीतिसे व्यवहार तथा धर्म विषयका भली प्रकारसे निरूपण किया गया है. तथा ईश्वरका अस्तित्व और सृष्टीका कर्तापणा आदिक शंकायोंका पूर्ण रीतिसे समाधान किया गया है. जिल्दबंद ग्लेज कीमत १।) सवा रुपया.

श्रीब्रह्मानंदपदमञ्जरी ।

इस ग्रंथमें ज्ञान, वैराग्य, उपदेश और भक्तिमार्गके सुन्दर २ भजन तथा लावणी राग बारामासी राग और मुदडी रागके नवीन २ पद छपे हुये हैं. सुन्दर जिल्दबंद ग्लेज कीमत ।=) छ आना.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीविष्णुमहिम्नस्तोत्र ।

इस स्तोत्रमें श्रीविष्णु भगवानकी स्तुति है. भक्तिपूर्वक इसका हमेशा पाठ करनेसे निश्चय करके सर्वपापोंसे छूट जाता है. की. ।) चार आना.

श्रीपरमेश्वरप्रार्थना ।

यह ग्रंथ केवल भाषामें है. पूर्णब्रह्म परमात्माको प्रेमपूर्वक प्रार्थना करनेके लिये यह परमेश्वर-प्रार्थना निर्माण किया है. कीमत ≡) तीन आना.

इन पुस्तकोंका मिलनेका पत्ताः—

श्रीब्रह्मानंद आश्रम,

मु० पुष्कर, जि० अजमेर.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

(नोटिस ।)

सर्व सज्जनों को विदित हो कि लाहौर के बुकसेलर संतसिंह वल्द जोत सिंह ने श्री ब्रह्मानन्द भजनमाला के कुछ भजन बिना इजाजत छपवा लिये थे उसका दावा अजमेर कोर्ट में आर्डर नं० ७ के मुताबिक किया गया था जिस का सुलहनामा अजमेर कोर्ट में होगया है मुद्दायले ने आइन्दा नहीं छापने का इकरार किया है अगर कोई शख्स आइन्दे इन भजनों को बिना इजाजत छापेगा हर्जे व खर्चे का जुम्मेवार होगा ।

डिगरी होगई

ठाकुरप्रसाद बुकसेलर बनारस वालेंने श्रीब्रह्मानंद भजनमाला के रजिस्टर्ड भजनोंसे कुछ भजन बिना इजाजत छापनेपर अजमेर कोर्टमें डिगरी होगई है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDR

(आवश्यक सूचना)

सर्व महाशय सज्जनों को विदित हो कि इस ब्रह्मानंद भजनमालाका विशेष प्रचार देख करके कुछ लालची लोकोंने नकली भजनमाला भी बेचना शुरू करदिया है. सो गणेश छापवाली पुस्तक असली समझना चाहिये. और श्री स्वामी ब्रह्मानंदजी का नाम हर एक भजनके अन्तमें छपा हुआ है. तथा पुष्करतीर्थनिवासी स्वामी ब्रह्मानंदजीका चित्र भी इस पुस्तक में है. सो इस सूचना के माफिक देखकर असली श्रीब्रह्मानंद भजनमाला गणेश छापवाली खरीदना हर एक मनुष्यका मुख्य कर्तव्य है. इति

यह भजनमाला गुरुमुखी सिन्धी और उर्दू-मेंभी छपी है। कीमत गुरुमुखी १।।)
सिन्धी १।।) उर्दू १।।)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu